ISSN2349-8927

Shodh Pratibha

(Biannual & Bi-Lingual)
Journal of Educational Research

Vol. 8 : No. 2
September 2019

INSTITUTE OF ADVANCED STUDY IN EDUCATION (IASE)
Tarbahar Naka, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001
Website : www.iasebsp.com E-mail :iasebilaspur@gmail.com
Ph. : 07752-404708, 653535

SHODH PRATIBHA

(Bi-Annual & Bi-Ligual)

Advisory Board :

1. Dr. R. S. Dubey (Rtd. Principal, Govt. College of Education, Bilaspur)
2. Smt. A. Kujur (Rtd. principal)
3. Dr. R. D. Singh (Rtd. Asst. Prof. SCERT Raipur)
4. Dr. R. S. Yadav (Rtd. Asst. Prof. govt. College of Education, Bilaspur)
5. Mrs. Ramakanti Sahu (Prof. IASE, Bilaspur)

Ediror in Chief:

1. Dr. Nishi Bhambri (Principal, IASE, Bilaspur)

Editorial Board (Faculty IASE, Bilaspur)

1. Dr. Kshama Tripathi - Asst. Prof. - Faculty, IASE, Bilaspur
2. Dr. B. V. Ramana Rao - Asst. Prof. - Faculty, IASE, Bilaspur
3. Smt. Reema Sharma - Asst. Prof. - Faculty, IASE, Bilaspur
4. Smt Preeti Tiwari - Asst. Prof. - Faculty, IASE, Bilaspur
5. Dr. Sanjay Ayde - Asst. Prof. - Faculty, IASE, Bilaspur
6. Dr. A. K. Poddar - Asst. Prof. - Faculty, IASE, Bilaspur
7. Smt. Neela Chaudhary - Lecture. - Faculty, IASE, Bilaspur

प्राचार्य की कलम से....

उन्नत अध्ययन शिक्षा संस्थान, बिलासपुर के लिए यह अत्यंत ही प्रतिष्ठा का विषय है, कि "शोध प्रतिभा" का प्रकाशन संस्था के आचार्यों के अथक प्रयास के द्वारा किया जा रहा है। शोध पत्रिका के प्रकाशन से शिक्षक, प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधार्थियों, शिक्षक प्रशिक्षार्थियों, शैक्षिक प्रशासकों एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेषज्ञों को उनके द्वारा किए गए शोध कार्यों को शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित करने हेतु एक अवसर प्राप्त हुआ है । उनके शोध करने के तरीकों, निष्कर्षों एवं सुझावों को प्रकाशित कर शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता लाई जा सके।

"शोध प्रतिभा" का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में मौलिक चिन्तन को प्रोत्साहित करना है और शिक्षा में गुणात्मक सुधार और उत्तरोत्तर विकास को बढ़ावा देना है। शिक्षा जगत में शैक्षणिक गतिविधियों पर किए जाने वाले शोध कार्यों के परिणामों से शिक्षकों अवगत कराने के लिए यह पत्रिका एक सर्वोत्तम माध्यम है।

"शोध प्रतिभा" पत्रिका सभी शोधकर्ता, शिक्षक एवं अन्य अकादमिक सदस्य, शैक्षिक समस्याओं के निराकरण करने हेतु प्रोत्साहित हों तथा शोध कार्यों के प्रति उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो, वे शैक्षिक क्षेत्र में नवाचार कर सके, सुधार ला सकें और बच्चों को उनकी रुचि के अनुरूप शिक्षित कर सकें। छात्र जीवन जीने, अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने एवं अपने अनुभव का लाभ उठाते हुए सीखने के लिये प्रेरित हो सकें।

महाविद्यालय की शोध पत्रिका "शोध प्रतिभा" का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत ही हर्ष का अनुभव हो रहा है। हमें आशा है कि यह अंक भी आप समस्त पाठकों को पसन्द आएगा एवं आपके सुझाव व विचारों की प्रतीक्षा रहेगी ।

डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी
प्राचार्य

संपादक की कलम से.....

"शोध प्रतिभा" के इस अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में संस्था के आचार्यों द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। प्रस्तुत अंक में शैक्षिक नवाचार से संबंधित शोध आलेख प्रस्तुत किए गए हैं। पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, हायर सेकेण्डरी स्तर, विज्ञान शिक्षण, शिक्षा का अधिकार, शिक्षण प्रशिक्षण पेडॉगोजी, शालेय स्वच्छता, निःशक्त बच्चों के लिये विभिन्न विकासोत्पादक विचारों को सम्मिलित करते हुए उनकी बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया गया है।

पाठ्य पुस्तकों में निहित मूल्यों के संदर्भ में सुझाव प्राप्त हुए कि कक्षा में अध्यापन को सामाजिक मूल्यों से जोड़ते हुए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी प्रशिक्षार्थियों में मूल्यों की समझ विकसित होना अनिवार्य है। शैक्षिक गुणवत्ता के स्तर में कमी होने के कारणों, को जानने तथा उनके निराकरणों पर समय पर बल दिया जाये तो निश्चय ही शैक्षिक स्तर की वृद्धि में आशातीत सफलता प्राप्त की जा सकती है। अतएव कर्त्तव्यों का भलीभांति निर्वहन इसकी प्रमुख कड़ी है। भौतिक एवं मानवीय संसाधन की कमियों को दूर करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु उनके समुचित उपयोग व प्रयोग हम जितना अधिक निष्ठा के साथ करेंगे। उतना ही शैक्षिक गुणवत्ता के स्तर में सुधार परिलक्षित होगा। सोशल मीडिया के आविष्कार ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला दी है। इसके विस्फोटक प्रभाव से समाज का किशोर वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। सोशल मीडिया का प्रयोग किशोरों के अध्ययन आदत को काफी प्रभावित किया है, सोशल मीडिया के प्रयोग ने किशोरों के सामाजिक व्यवहार, समायोजन व सामाजिकता के साथ ही किशोरों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को तथा उनकी जीवन शैली को भी काफी हद तक प्रभावित किया है। विभिन्न आयामों को दृष्टिगत रखते हुए शोधों की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति इस अंक विशेषता है । इस अंक में प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के कैरियर चयन पर साथी दबाव के प्रभाव को जानने प्रस्तुत शोध में किशोर बालिकाओं के पीयर प्रेशर के सकारात्मक व नकारात्मक स्वरूप को ज्ञात करने का प्रयास किया है ।

आलेखों के समीक्षात्मक सुझाव एवं विचारों की प्रस्तुति हेतु निवेदन करते हैं....

डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी
प्राचार्य

CONTENTS

S.No.	TITLE OF THE PAPER	AUTHOR	P. No.
1.	किशोरों के सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. सुदेषना वर्मा डॉ. अजीता मिश्रा	5-9
2.	उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के कैरियर चयन पर साथी दबाव के संदर्भ में अध्ययन	श्रीमती प्रीति तिवारी श्रीमती नीला चौधरी	10-16
3.	"माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं में गुणवत्ता उन्नयन कार्यक्रम के प्रभावशीलता का अध्ययन"	श्रीमती अंजना अग्रवाल	17-21
4.	विद्यालयीन शिक्षा के वृहद् पहलुओं के प्रति भावी शिक्षकों के अभिवृत्ति का अध्ययन	श्रीमती रमाकान्ति साहू	22-26
5.	बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्व-अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती महालक्ष्मी सिंह श्रीमती मनीषा वर्मा	27-35
6.	प्रबंधन भिन्नता वाली शालाओं में विद्यार्थियों के सुरक्षात्मक युक्तियों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन	श्रीमती रीमा शर्मा श्रीमती ज्योति दुबे	36-40
7.	A Study of Management of Science Exhibition and Attitude of Stakeholders Towards Science Exhibition	Nalini Pandey Dr. (Mrs.) Riteshwari Chaturvedi	40-45
8.	Enhancing Hindi Eassy Writing Skill Using Mapping concept among the students at high school level	Yogesh Kumar Pandey	46-50
9.	किशोरों के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी श्रीमती सुनीता जायसवाल	51-55
10.	उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के श्रवण कौशल पर शैक्षिक कार्टून के प्रयोग के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी विरेन्द्र कुमार राजपूत	56-61
11.	उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता पर सोशल मीडिया (मोबाइल) के प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती रीमा शर्मा चन्द्रप्रकाश साहू	62-67
12.	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन - अंग्रेजी ग्रामर के संदर्भ में	श्रीमती रमाकांति साहू विद्याभूषण शर्मा	68-76
13.	Paradigm shift from offline to online teaching	Dhirendra Kumar Jha	77-86

किशोरों के सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. सुदेषना वर्मा
सहा. प्राध्यापक
आई.ए.एस.ई.
बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. अजीता मिश्रा
सहा. प्राध्यापक
आई.ए.एस.ई.
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा न केवल हम अपनी बातों को दूसरे के सामने रखते हैं बल्कि विश्व की समग्र घटनाओं से अवगत भी होते हैं। सोशल मीडिया के आविष्कार ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला दी है। इसके विस्फोटक प्रभाव से समाज का किशोर वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में बिलासपुर जिले के चारों विकास खण्ड बिल्हा, कोटा, तखतपुर एवं मस्तुरी के अन्तर्गत आने वाले समस्त विद्यालय सम्मिलित हैं। चयनित विद्यालयों के कक्षा 11 वीं के उन छात्रों का जो सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं, का चयन रेण्डम सेम्पलिंग न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। समस्त अध्ययन से समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सोशल मीडिया का प्रयोग किशोरों के अध्ययन आदत को काफी प्रभावित किया है, सोशल मीडिया के प्रयोग ने किशोरों के सामाजिक व्यवहार, समायोजन व सामाजिकता के साथ ही किशोरों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को तथा उनकी जीवन शैली को भी काफी हद तक प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली के कथनों के प्रति अभिमतों एवं सुझावों का प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया है तथा तालिका एवं आरेखों के द्वारा भी अभिमतों का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

पहले के समय में किसी विशेष क्षेत्र या राष्ट्रीय स्तर पर सूचनाओं के आदान–प्रदान तथा अपने विचारों को व्यक्त करने में दूरियां बाधा बनती थीं किन्तु अब यह रुकावटें सूचना के प्रवाह को नहीं रोक सकती हैं। हर एक–दूसरे से इंटरनेट के विशाल नेटवर्किंग से जुड़ा है। इसके द्वारा उपयोगकर्ता विश्व के समस्त लोगों तक अपनी बात महज एक क्लिक की सहायता से सेकण्ड के अंदर पहुंचा देता है। सोशल नेटवर्किंग ने विचारों के आदान–प्रदान को आसान बना दिया है। ये केवल अपना चेहरा दिखाने का स्त्रोत मात्र ना होकर वर्तमान में सामाजिक सोच व शिक्षा में नवाचार और अभिव्यक्त का सशक्त माध्यम बन गया है।

इस प्रकार सोशल मीडिया के विभिन्न साइट्स जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर यूट्यूब, स्काइप, इंस्टाग्राम, स्नैपचेट, वीडियो कान्फ्रेंसिंग आदि ने आज हमारे जीवन शैली को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है। जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रहा है। वर्तमान में समाज और परिवार के सदस्यों से मिलने पर बातें नहीं होतीं बल्कि अब सभी आयु वर्ग के लोग पुतला बनकर अपने हेंडसेट के जरिये सोशल बनने के जद्दोजहद में लगे हुए हैं अर्थात् विडंबना यह है कि हम पारिवारिक तो नहीं बन पाते मगर सोशल बनने के होड़ में लगे हुए हैं।

सोशल मीडिया के ये साइट्स, मेल व चैटिंग ने तो मानो पारंपरिक डाक व्यवस्था और टेलीफोन को किनारे कर दिया है। सोशल मीडिया के उपयोग के कारण दिनचर्या में भी बहुत बदलाव आ गया है। सोशल मीडिया के उपयोग में युवा वर्ग के समय–प्रबंधन को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। अधिकांश युवा वर्ग इसके गिरफ्त में इस कदर हैं

कि अपनी वास्तविकता को भूलकर एक आभासी दुनिया में रहने लगते हैं। सोशल मीडिया के इस्तेमाल से कहीं न कहीं किशोरों की सामाजिकता, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य खेलों के तरीके, कार्य व्यवहार एवं व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को भी प्रभावित किया है। सोशल मीडिया के कई लाभकारी उपयोग भी हैं। सोशल मीडिया वेब पर आधारित संचार उपकरण है जो लोगों को आपस में जोड़े रखता है और किसी भी जानकारी को आपस में साझा करने की अनुमति देता है इसलिए अभिभावक एवं शिक्षक का यह नैतिक दायित्व भी है कि वे इसके उपयोग हेतु अपनी देखरेख में किशोरों को सही दिशा–निर्देश प्रदान करें ताकि वह एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकें व मानव प्रतिस्पर्धा में सफल हो सकें किन्तु किशोरवय के छात्रों द्वारा इसका उपयोग एक चिंतनीय विषय होता जा रहा है। सोशल मीडिया के कुछ ऐसे नकारात्मक पहलू भी हैं जैसे साइबर बुलिंग, सर्फिंग आदि जो उनके मानसिक स्तर के लिए प्रतिकूल है, जो उनमें निराशा, विकृतियाँ और कुंठाएं पैदा कर रहे हैं। अभी हाल में ही ब्लूव्हेल गेम के बारे में सुना गया कि किस तरह इस गेम के द्वारा बहुत से बच्चों ने आत्महत्या की या उन्हें ऐसा करने के लिए उकसाया गया।

वर्तमान भौतिकवादी युग में जीवन शैली में आभासी संसार, वास्तविक जीवन पर हावी हो रहा है, जबकि यह अत्यावश्यक है कि किशोरों के व्यक्तित्व का एक संतुलित व स्वस्थ रूप विकसित हो। अतः यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि किशोर छात्र सोशल मीडिया का प्रयोग किस प्रकार व कितना कर रहे हैं। ताकि अभिभावक व शिक्षक उन्हें सही दिशा–निर्देश दे सकें।

सोशल मीडिया ने किशोरों के उपयोग संबंधित पूर्व में शोध अध्ययन किए गए हैं। ऐसे विद्यार्थी जिसका 60–80% एकेडमिक परफारमेन्स होता है। वो सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट मनोरंजन के लिए करते हैं (सेल्वाराडो एस 2013), सप्ताह में 10 घण्टे या उससे अधिक सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले बच्चे, कम उपयोग करने वाले बच्चों से कम खुश रहते हैं। (Kol Plewicz, H 2017), किशोरों पर सोशल मीडिया के अधिक प्रयोग का प्रभाव उनके शाला के कार्यों पर पड़ता है। (कॉशी, C 2012) पूर्व अध्ययन के निष्कर्षों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि किशोरों के व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर अध्ययन कम हुए हैं। अतः प्रस्तुत शोध कार्य करना उपयोगी होगा।

अध्ययन के उद्देश्य– 1. सोशल मीडिया के प्रयोग का किशोरों के अध्ययन आदतों का पर प्रभाव का अध्ययन।

2. सोशल मीडिया के प्रयोग का किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन।

शोध प्रश्न– (1) सोशल मीडिया के प्रयोग का किशोरों की अध्ययन आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

2. सोशल मीडिया के प्रयोग का किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है।

शोध विधिः– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से अभिमतों एवं सुझावों का विश्लेषण तालिका व आरेखों के प्रदर्शन द्वारा किया गया है।

न्यादर्शः– प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के शा. उ. मा. विद्यालयों का चयन रेण्डम सेम्पलिंग द्वारा किया गया। चयनित विद्यालयों के कक्षा 11वीं के उन छात्रों का सोशल मीडिया का जो प्रयोग करते हैं, का चयन रेण्डम सेम्पलिंग न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरण–

1. किशोरों के सोशल मीडिया उपयोग का अध्ययन आदत पर प्रभाव संबंधी स्वनिर्मित प्रश्नावली।
2. किशोरों के सोशल मीडिया उपयोग का (सामाजिक व्यवहार) संबंधी स्वनिर्मित प्रश्नावली।
3. किशोरों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभाव को जानने हेतु अभिभावकों से साक्षात्कार हेतु–स्वनिर्मित खुले प्रश्नावली।

सम्मिलित आयामः– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सोशल मीडिया के उपयोग से किशोरों के अध्ययन आदतों व सामाजिक व्यवहार में होने वाले सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव मुख्य आयाम हैं साथ ही सोशल मीडिया के प्रकार, समयावधि, क्षेत्र, स्वास्थ्य, खेल, समस्याएं, उपयोगिता, दोस्तों का दबाव, व्यक्तित्व, नियमों की जानकारी व समायोजन अन्य आयाम हैं।

सांख्यिकीय प्रक्रियाः– प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली के कथनों के प्रति अभिमतों एवं सुझावों का प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया। आरेखों के प्रदर्शन के द्वारा भी अभिमतों का विश्लेषण किया गया।

शोध प्रश्न– सोशल मीडिया के प्रयोग का किशोरों की अध्ययन आदतों पर प्रभाव

तालिका क्रमांक– 1

सोशल मीडिया का अध्ययन आदत पर प्रभाव

क्र.	कथन	पद	सहमत				अनिश्चित				असहमत			
			नगरीय %		ग्रामीण %		नगरीय %		ग्रामीण %		नगरीय %		ग्रामीण %	
1.	पठन कौशल	4,5,6,8	573	57.3	470	47%	128	12.8	235	23.5%	299	29.9	295	29.5%
2.	लेखन कौशल	9	156	62.4	140	56%	42	16.8	40	16%	52	20.8	70	28%
3.	परीक्षा की तैयारी	42, 47	266	53.2	280	56%	130	26	40	8%	104	20.8	180	36%
4.	अभिव्यक्ति कौशल	11	138	55.2	130	52%	41	16.4	50	20%	71	28.4	70	28%
5.	समूह शिक्षा	5	163	65.2	130	52%	13	5.2	70	28%	74	29.6%	50	20%

स्त्रोतः प्राथमिक आंकड़ा संकलन (स्वनिर्मित प्रश्नावली)

तालिका द्वारा प्रदर्शन से यह पता चलता है कि विविध कौशलों के विकास में अर्थात् किशोर के अध्ययन आदतों पर प्रभाव निम्नानुसार है।

1. पठन कौशलः– सोशल मीडिया के प्रयोग से विद्यार्थियों के पठन कौशल का विकास होता है, संबंधी कथन में 57.3 प्रतिशत नगरीय व 47 प्रतिशत ग्रामीण किशोरों ने सहमति दर्ज कराई है जबकि 30 प्रतिशत किशोर इस बात से असहमत हैं।

2. लेखन कौशलः– 62.4 प्रतिशत नगरीय व 56 प्रतिशत ग्रामीण किशोरों ने स्वीकारा है कि सोशल मीडया के प्रयोग से लेखन कौशल का विकास होता है।

3. परीक्षा की तैयारीः– सोशल मीडिया का प्रयोग परीक्षा की तैयारी हेतु व परीक्षा परिणाम में सुधार के लिए उपयोगी है।

4. अभिव्यक्ति कौशलः– अध्ययन आदत के अन्तर्गत अभिव्यक्ति कौशल के विकास में सोशल मीडिया का प्रयोग उपयोगी सिद्ध हुआ है, क्योंकि 55.2 प्रतिशत नगरीय व 52 प्रतिशत ग्रामीण किशोरों ने सहमति जताई है।

5. समूह शिक्षाः– सोशल मीडिया के प्रयोग से समूह शिक्षा द्वारा विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं।

तालिका क्र. 2

सोशल मीडिया का समायोजन पर प्रभाव का विश्लेषण

शोध प्रश्न– सोशल मीडिया के प्रयोग का किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन

क्र.		नगरीय	ग्रामीण	कुल
		सहमत %	सहमत %	सहमत %
1.	सामाजिक आयोजनों में भागीदारी	106 21.2%	100 20%	206 41.2%
2.	व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव	113 22.6%	110 22%	223 44.6%
3.	सामाजीकरण	130 26%	130 26%	260 52%

निष्कर्ष– तालिका व आरेख से स्पष्ट है कि 41% किशोरों ने यह सहमति दी है कि वे सामाजिक आयोजनों में भाग लेते हैं 52% किशोरों ने सहमति दी है कि सोशल मीडिया का प्रभाव सामाजीकरण पर पड़ता है तथा 44.6% किशोरों ने यह माना है कि सोशल मीडिया का प्रयोग सामाजिकता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

सामाजिक व्यवहार संबंधी पूछे गये 28 पदों के विश्लेषण में सकारात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषण करने पर किशोरों का उच्च समायोजन स्तर एवं मध्यम समायोजन स्तर अधिक प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार सामाजिक व्यवहार के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषण करने पर मध्यम स्तर का मान अधिक तथा उच्च व निम्न स्तर का मान लगभग समान प्राप्त हुआ है।

विवेचना: उपरोक्त सारणियों के समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि किशोरों का समायोजन एवं उनके सामाजिकता पर सोशल मीडिया के उपयोग का अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है, परन्तु उनके पालकों द्वारा दिये गये साक्षात्कार के परिणाम यह दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया के प्रयोग के कारण ही किशोरों के सामाजिकता में कठिनाईयाँ उत्पन्न हो रही हैं तथा किशोर सही तरीके से समाज में समायोजन स्थापित करने में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं।

पुष्टि: (i) गोयल, विजय (ii) Croshy, c. (2012) (iii) Grove, C. (2017), (iv) Travelar, R. (2017) (v) Chakravarthy, c (2018) द्वारा प्राप्त शोध निष्कर्षों के परिणामों से समानता रखता है। सोशल मीडिया के उपयोग से किशोरों के परिवारजनों के साथ भावनात्मक संबंध कम हो रहे हैं।

सामाजिक सम्पर्कों में किशोर स्वयं को संतुलित महसूस करते हैं इस बात से अधिकांश किशोर सहमत हैं। उन्हें समूह के सामने बात करने में कठिनाई महसूस नहीं होती। लगभग 50 प्रतिशत किशोर इस बात से सहमत हैं। सोशल मीडिया के प्रयोग अध्ययन के लिये गये 500 किशोरों में से 51.6% ने सर में दर्द रहने की समस्या, 44.8% आंखों में जलन, 40.2% थकान एवं 43.4% किशोरों ने नींद न आने की स्वास्थ्यगत समस्या को सोशल मीडिया के प्रयोग के कारण स्वीकारा है।

निष्कर्षः– समस्त अध्ययन से समग्र रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सोशल मीडिया का प्रयोग किशोरों के अध्ययन आदत को काफी प्रभावित किया है, वर्तमान में किशोर पुस्तक वाचन, डिक्शनरी देखना, अन्य साहित्यिक पुस्तकों को पढ़ना तथा पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने में रुचि नहीं दिखाते हैं। इसका प्रयोग उनकी विचारशीलता, चिन्तन शक्ति, रचनात्मकता, अभिव्यक्ति जैसे मौलिक गुणों के विकास के भी बाधित करती है। साथ ही कलम की ताकत व लेखन क्षमता को भी क्षीण करती है। हालांकि

आंकड़े इस ओर भी इंगित करते हैं कि सोशल मीडिया नवाचार का सशक्त माध्यम है व इसका नवाचार का सशक्त माध्यम है व इसका सही उपयोग आज की आवश्यकता है। विषयगत समस्याओं एवं कठिनाइयों के समाधान हेतु भी सोशल मीडिया का प्रयोग करना चाहिए। समूह शिक्षण के लिएभी सोशल साइट का प्रयोग शिक्षक द्वारा किया जा सकता है। किशोर यह सुनिश्चित करें कि वे सोशल मीडिया का प्रयोग एक समय सीमा में करें ताकि इसके प्रयोग का प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर गलत न पड़े और न ही उनके शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक स्वास्थ्य पर इसका कुप्रभाव हो। विभिन्न प्रकार के खतरनाक आभासी मोबाइल में खेले जाने वाले खेलों के विषय में भी किशोरों को सावधान करना चाहिए। अर्थात् इस तरह से सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों से किशोरों को बचाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

* Anderson, M. and Jiang, J. (2018) Teens Social media and techonology.

Retrieved from www. perlinternet. Org, Chakravarty. C. (2018-"Positive and negative influence of media on teenagers.)" Retrieverd from hhps: www. momojunction.com.

* **गोयल विजय** (2017)– "सोशल मीडिया का प्रभाव" Retrived from https."www Jagran.comeditorial, I September.

* Grove, C. (2017)" - "How parents and teens can reduce the impact of socialmedia on youth well being". Retrived from www.google.com.

* **श्रीवास्तव आर** (2014)– नेट और सोशल मीडिया का बढ़ता साम्राज्य "Retrieved from https: readerblogs. navabhart times India times.com/ P = 35031, Noval18.

उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के कैरियर चयन पर साथी दबाव के संदर्भ में अध्ययन

श्रीमती प्रीति तिवारी
सहा. प्राध्यापक
आई.ए.एस.ई.
बिलासपुर (छ.ग.)

श्रीमती नीला चौधरी
व्याख्याता
आई.ए.एस.ई.
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के कैरियर चयन पर साथी दबाव के प्रभाव को जानने के लिए स्वनिर्मित साथी दबाव प्रश्नावली निम्न पांच आयामों– जोखिम लेना, कक्षा से सहभागिता, विपरीत लिंग का प्रभाव, सामाजिक कार्य, अभिभावक के प्रति व्यवहार पर आधारित का उपयोग किया गया एवं कैरियर वरियता मापनी– डॉ. विवेक मार्गव एवं राजश्री भार्गव द्वारा निर्मित कैरियर वरियता प्रमाणीकृत मापनी का प्रयोग किया। प्रस्तुत शोध में किशोर बालिकाओं के पीयर प्रेशर के सकारात्मक व नकारात्मक स्वरूप को ज्ञात करने का प्रयास किया है एवं किशोर बालिकाओं के कैरियर चयन में पीयर प्रेशर के प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। प्राप्त आंकड़ों से विदित होता है कि पीयर प्रेशर तथा कैरियर वरियता में आंशिक सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। बालिकाओं में सकारात्मक साथी समूह दबाव नकारात्मक साथी दबाव की अपेक्षा अधिक पाया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा सामाजिक विकास की एक प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थी अपने सामाजिक वातावरण से अनुकूलित होता है तथा समाज का सहयोगी समर्थ एवं प्रभावशाली सदस्य बनता है, अर्थात् समाज की उम्मीदों के अनुरूप अपने आप को स्थापित करना ही सामाजिक विकास है।

सामाजीकरण, सामाजिक विकास एक प्रक्रिया है, जिसमें बालक अपने सामाजिक वातावरण से अनुकूलित होता है तथा समाज का एक सहयोगी, समर्थ व प्रभावशाली सदस्य बनता है अर्थात् बालक समाज की उम्मीदों के अनुरूप अपने आप को स्थापित करता है। बालक के सामाजिक विकास को कई घटक प्रभावित करते हैं जैसे– संस्कृति, धर्म, परिवार एवं साथी समूह, साथी समूह बालक की बहुत सी आवश्यकताओं व कार्यों को सहमति प्रदान करते हैं जैसे– उपलब्धि, स्वीकृति, चाहत, संबंध, पहचान, विचारों की अभिव्यक्ति, सलाह मशविरा इत्यादि। साथी संबंध बालक के युवावस्था से युवावस्था में बदलाव संबंधी परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होता है।

हमारे व्यक्तित्व के निखार में केवल माता–पिता का ही योगदान नहीं रहता वरन् हम जिनके साथ उठते बैठते हैं, बातचीत करते हैं, घूमना पसंद करते हैं, सलाह लेते हैं, उनका भी योगदान रहता है। और वे हैं हमारे मित्र व साथी। कुछ कार्य, आदतें स्वेच्छा से आती हैं लेकिन कुछ व्यक्तित्व के पहलू में हमारे साथियों का भी प्रभाव रहता है। जिसे हम साथी दबाव भी कह सकते हैं। वह हमारी सोच, मूल्य, व्यक्तित्व, व्यवहार को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। यह प्रभाव किसी एक साथी का या अलग–अलग साथी समूह का भी हो सकता है। साथी या समूह दबाव के कई कारणों से कुछ पर ज्यादा होता है जैसे घर पर बच्चा अपनों से ही उपेक्षित हो रहा है। उसे घर पर वह स्थान नहीं मिल पा रहा है जो उसे मिलना चाहिए और उसे सहयोग अपने साथियों से मिल रहा है, इस स्थिति में समूह का दबाव अधिक हो जाता है।

जहाँ सकारात्मक साथी दबाव बच्चों को सफलता की ओर ले जाता है वहीं नकारात्मक साथी दबाव बच्चों में गंदी आदतों जैसे– सिगरेट पीना, शराब पीना, ड्रग लेना की आदतों को विकसित करता है।

किशोरावस्था में पीयर प्रेशर को हमेशा एक समस्या के रूप में देखा जाता है। किशोर साथियों के प्रभाव में विषय चयन एवं कैरियर का चुनाव करते देखे जाते हैं। साथी के प्रभाव में उचित व अनुचित कार्य करते पाए जाते हैं। साथी प्रभाव में अभिभावक एवं शिक्षकों की अवहेलना भी करते हैं। यह समस्या आज के सोशल मीडिया एवं तकनीकी के दौर में और भी बढ़ गई है। इस समस्या को कैसे रोकें, कैसे विद्यार्थियों को समझें व समझाएं। किस प्रकार किशोरों की सहायता करें उन्हें सक्षम बनाएं कि वे अपनी परिस्थितियों का उचित तरीके से सामना कर सके, वे स्वयं उचित–अनुचित का ज्ञान रखें तथा उसके अनुरूप सही स्वनिर्णय ले पाएं। ना कि दूसरों के प्रभाव में अंधानुकरण करें। वे स्वयं की रुचि एवं क्षमताओं को ध्यान में रखकर विषय चयन तथा कैरियर का चयन आत्मविश्वास के साथ कर सकें।

विद्यार्थियों में ज्ञान व सामाजिक कौशल का विकास कक्षा में व कक्षा के बाहर प्रजातांत्रिक वातावरण में होता है। सूचनाओं को व ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सीखने की प्रक्रिया सामूहिक व सक्रिय रूप में ही होती है। कर्ट लेविन 1935 के अनुसार समूह में लोगों के बीच अंर्तसंबंध ही उनके सीखने के लक्ष्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक होती है। ड्यूट्स 1949 ने सकारात्मक अन्तनिर्भरता के प्रकाशन में कहा कि विद्यार्थी ज्ञान सीखने के लिए समूह पर निर्भर रहते हैं। सीखना आपसी पसंद, अच्छा सम्प्रेषण, उच्च स्वीकृति, सहमति व सहयोग एवं साथी समूह में व्यक्तियों के बीच विभिन्न सोच का परिणाम है।

विद्यार्थियों में साथियों के अनुरूप विषय चयन व कैरियर चयन की प्रवृत्ति बहुतायत से पायी जाती है। किन्तु कुछ विद्यार्थियों पर साथी समूह की सोच, स्वीकृति एवं संबंधों का प्रभाव नहीं पड़ता है। वे अपनी स्वयं की रुचि एवं लक्ष्य के अनुरूप कार्य करते हैं। विषय एवं कैरियर का चयन करते हैं। किशोरावस्था मानसिक व संवेगात्मक रूप से भ्रम या द्वंद्व की अवस्था होती है जिसमें से वे अपने साथी समूह में सुरक्षा का अनुभव करते हैं। किशोर विद्यार्थी अपने साथी समूह से बहुत अधिक प्रभावित रहते हैं। वे उनकी शैक्षिक, शारीरिक, मानसिक, समस्याओं का समाधान अपने साथी समूह में पाते हैं एवं साथी समूह के अनुरूप स्वीकार्य कार्यों को करते हैं। इस अवस्था में वे अभिभावक के मत को द्वितीयक मानते हैं।

साथियों का प्रभाव हमारे जीवन शैली व निर्णयन प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण होता है। हम अपने आसपास के परिवेश में जो देखते हैं, सुनते हैं या अनुभव करते हैं वह हमारे निर्णयण को प्रभावित करती है। हमउम्र साथी का विज्ञान की ओर रुझान है या वाणिज्य क्षेत्र की चर्चा होती है तो विद्यार्थी का रुझान भी उसी क्षेत्र में बढ़ता है। यदि साथी गणित की कक्षा छोड़ देते हैं तो विद्यार्थी भी वैसा ही करने का प्रयास करता है तो यह नकारात्मक साथी प्रभाव को दर्शाता है जिसमें विद्यार्थी अपनी रुचियों, क्षमता को ध्यान में रखे बिना साथियों का अनुकरण करें, यह उसका कमजोर आत्मविश्वास एवं निर्णयण क्षमता को दर्शाता है।

संबंधित साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि साथी दबाव का इंटरनेट व व्यसनों के उपयोग पर प्रभाव का अध्ययन Agmad, Esen, Basu, Sukkung, & Jpshep द्वारा किया गया व पाया कि साथी दबाव में बच्चे व्यसनों के अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। 2017 में Joel & Peter द्वारा साथी दबाव का व्यवसायिक निर्णय को एक दिशा प्रदान करता है। पूर्व साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि कैरियर के चुनाव में पारिवारिक एवं शालेय वातावरण का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह जानने कि आवश्यकता महसूस हुई कि क्या शाला में विषय व कैरियर के चुनाव में मित्रों का प्रभाव पड़ता है। शाला का वातावरण में किस प्रकार

के बदलाव की आवश्यकता है।

शोध के उद्देश्यः–

1. हाईस्कूल स्तर पर बालिकाओं के कैरियर वरियता पर साथी के दबाव के प्रभाव का अध्ययन।
2. सकारात्मक एवं नकारात्मक साथी दबाव के संदर्भ में अध्ययन।
3. ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के बालिकाओं के कैरियर वरियता का अध्ययन।
4. ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के बालिकाओं के साथी दबाव का अध्ययन।
5. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर पर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की बालिकाओं के कैरियर वरियता का अध्ययन करना।
6. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की बालिकाओं के साथी दबाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनायेंः–

Ho_1 बालिकाओं के कैरियर वरीयता पर उनके पीयर प्रेशर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

Ho_2 शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं के कैरियर वरीयता में कोई सार्थक के साथी दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

Ho_3 उच्च एवं निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर के बालिकाओं के कैरियर वरीयता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

Ho_4 उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालिकाओं के साथी दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा

Ho_5 शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं के साथी दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा

Ho_6 बालिकाओं के धनात्मक व ऋणात्मक साथी दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोधविधिः– सर्वेक्षण विधि।

जनसंख्याः– छत्तीसगढ़ राज्य के कक्षा 11वीं में अध्ययनरत् बालिकायें।

न्यादर्शः– प्रस्तुत अध्ययन में छ.ग. राज्य के बिलासपुर, अम्बिकापुर, जशपुर, जांजगीर, कोरबा एवं मस्तूरी के कक्षा 11वीं में अध्ययनरत् 600 बालिकायें का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

चरांकः–

स्वतंत्र चर– साथियों का दबाव। परतंत्र चर– बालिकाओं की कैरियर वरियता।

साहचर्य चर– ग्रामीण एवं शहरी परिवेश, उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर।

शोध उपकरणः– 1 कैरियर वरियता मापनी– डॉ. विवेक भार्गव एवं राजश्री भार्गव द्वारा निर्मित कैरियर वरियता प्रमापीकृत मापनी का प्रयोग किया, जिसमें कैरियर क्षेत्र के 10 क्षेत्रों मैनेजमेन्ट, कला व डिजाइनिंग, विज्ञान व तकनीकी, कृषि, वाणिज्य, चिकित्सा, रक्षा, थिएटर, कानून एवं शिक्षा को चयनित किया। प्रत्येक क्षेत्रों में 10 प्रकार के व्यवसायों को रखा गया है, जिसमें विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप विभिन्न चयनित क्षेत्रों में 01 अंक प्रदान कर कैरियर वरीयता का आकलन किया गया। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम अंक 10 एवं न्यूनतम अंक 0 हुए।

2. साथी का दबाव मापनी– शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग इस हेतु किया गया, जिसमें साथी दबाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव क्षेत्र सम्मिलित हैं। इसमें 7 बिंदू पैमाना पर 36 कथनों के माध्यम से बालिकाओं के साथी दबाव का आकलन किया गया।

मापनी के आयाम– जोखिम लेना, कक्षा में सहभागिता, विपरीत लिंग का प्रभाव, सामाजिक कार्य, अभिभावक संलग्नता।

शोध परिकल्पनाओं का विश्लेषण व निष्कर्ष एवं विवेचना

परिकल्पना 01– बालिकाओं के कैरियर वरीयता पर उनके पीयर प्रेशर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

निष्कर्ष– उपरोक्त सारणी के अनुसार बालिकाओं के साथी समूह दबाव मापनी के प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान 20.7 प्राप्त हुआ तथा कैरियर वरीयता के **दस आयामों–** मैनेजमेन्ट, आर्ट व ड्रामा, विज्ञान व तकनीकी, कृषि, वाणिज्य, चिकित्सा, रक्षा, साहित्य,

कानून एवं शिक्षा का मापनी मूल्य से मध्यमान क्रमशः 7.5, 9.52, 7.47, 6.56, 6.35, 5.08, 5.6, 6.1, 8.8 एवं 9.6 प्राप्त हुआ। साथी समूह दबाव एवं करियर वरियता के विभिन्न आयामों का df पर सहसंबंध r मूल्य क्रमशः 0.37, 0.39, 0.297, 0.294, 0.37, 0.28, 0.32, 0.289, 0.33 एवं 0.368 प्राप्त हुआ। उपरोक्त आंकड़ों से विदित होता है कि पीयर प्रेशर तथा कैरियर वरियता में आंशिक सकारात्मक सहसंबंध दिखाई देता है। अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी– साथी दबाव का कैरियर वरीयता के साथ सहसंबंध।

Sample	no	mean	SD	df	r value
peer pre	600	20.7	5.29	1198	
car MM	600	7.5	3.32		0.37
peer pre	600	20.7	5.29		
car AD	600	9.52	4.27	1198	0.39
peer pre	600	20.7	5.29		
car ScT	600	7.47	4.62	1198	0.297
peer pre	600	20.7	5.29		
car AG	600	6.56	4.14	1198	0.294
peer pre	600	20.7	5.29		
car CM	600	6.35	3.9	1198	0.37
peer pre	600	20.7	5.29		
car Med	600	5.08	4.5	1198	0.28
peer pre	600	20.7	5.29		
car Def	600	5.6	3.9	1198	0.32
peer pre	600	20.7	5.29		
car Theo	600	6.1	3.48	1198	0.289
peer pre	600	20.7	5.29		
car Law	600	8.8	4.9	1198	0.33
peer pre	600	20.7	5.29		
car Edu	600	9.6	4.6	1198	0.368

उपरोक्त आंकड़ों से विदित होता है कि पीयर प्रेशर तथा कैरियर वरियता में आंशिक सकारात्मक सहसंबंध दिखाई देता है।

विवेचना– पीयर प्रेशर तथा कैरियर वरियता में मामूली सकारात्मक सहसंबंध दिखाई देता है। इसका तात्पर्य है कि बालिकाओं का अपना एक साथी समूह तो है, लेकिन इसका दबाव उनके व्यवसाय चयन में ज्यादा प्रभाव नहीं डालता है। एक समय था जब हमारे पास साझा करने के लिए केवल साथी, मित्र सहेलियाँ ही हुआ करती थी लेकिन आज का समय तकनीकी संचार का है। जहां हम अपनी व दुनिया की सभी बातों को साझा करने के लिए

इंटरनेट, सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं, इस परिस्थिति में प्रत्येक बालिका जो किशोरावस्था में है वह सबकी बात तो सुनती है उनके पास कई विकल्प हैं। इसमें शहर व ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में संचार क्रांति ने जगह बना ली है। इसलिए उक्त सहसंबंध प्रदर्शित होता है।

परिकल्पना 02– शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं के कैरियर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

निष्कर्ष– सारणीनुसार ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के कैरियर वरियता के आयामों के मध्यमान क्रमशः 7.934, 9.3, 7.14, 6.56, 6.59, 5.64, 6.86, 6.44, 9.34 एवं 9.05 प्राप्त हुए, शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के कैरियर वरियता के मध्यमान क्रमशः 7.21, 9.78, 8.09, 6.72, 6.28, 5.76, 5.46, 6.02, 8.58 एवं 9.38 प्राप्त हुए। इनका 598 df पर r मूल्य क्रमशः 7.024, 2.967, 8.28, 1.46, 2.69, 1.09, 9.993, 4.84, 5.09 एवं 1.819 प्राप्त हुआ। परिमामों से विदित होता है कि 0.0 स्तर पर प्रबंधन, विज्ञान व तकनीकी, रक्षा, साहित्य एवं कानून के क्षेत्र में बालिकाओं के कैरियर वरियता में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। अतः इन क्षेत्रों में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा 0.0 स्तर पर कला व नाटक, कृषि, वाणिज्य, चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में t मान सारणी मूल्य से कम परिकल्पना स्वीकृत होती है।

विवेचना– शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की कैरियर वरियता में अंतर नहीं होने का कारण यह हो सकता है कि जन संचार के माध्यमों में व्यापक प्रसार होने से सभी इलाकों में समाचार पत्रों एवं इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध हो गई है, तथा वर्तमान समय में लगभग सभी के पास स्मार्टफोन उपलब्ध होने से अपने पसंद के अनुरूप चुनने के लिए अधिक विकल्प मौजूद हैं। साथ ही बालिका शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण बालिकाएं जागरूक हुई हैं।

परिकल्पना 03– उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालिकाओं के कैरियर वरीयता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

निष्कर्ष– परिणामों से विदित होता है कि प्रबंधन, विज्ञान व तकनीकी, रक्षा साहित्य एवं कानून के क्षेत्र में बालिकाओं के कैरियर वरियता में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। जो उच्च सामाजिक स्तर की बालिकाओं में उच्च पाया गया। अतः इन क्षेत्रों में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है, तथ कला व नाटक, कृषि, वाणिज्य, चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर वरियता में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ, अतः इन क्षेत्रों में उक्त परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

विवेचना– उच्च सामाजिक स्तर की बालिकाओं, की कैरियर वरियता अलग–अलग क्षेत्रों में होने से यह पता चलता है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की बालिकाओं आर्थिक रूप से सक्षम होने के कारण नए व्यवसायिक क्षेत्रों में व संबंधित विषयों के पाठ्यक्रम का चयन कर सकती हैं। चाहे वह पाठ्यक्रम अवधि व शुल्क कितना भी हो। वे वर्तमान समय में विविध उपयोगी पाठ्यक्रम व कैरियर को महत्व देती है।

परिकल्पना 04– उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालिकाओं के साथी दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष– उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के साथी दबाव में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ एवं उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की बालिकाओं में साथी दबाव निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर की बालिकाओं से अधिक पाया गया।

विवेचना– उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की बालिकाओं में साथी दबाव निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की बालिकाओं से अधिक पाया गया। यह परिणाम दर्शाता है कि उच्च सामाजिक व आर्थिक स्तर की बालिकाओं को उनका जीवन कई आयामों से प्रभावित करता है, जैसे– वेशभूषा, रहन–सहन, पारिवारिक शिक्षा स्तर, आवास, सामाजिक दायरा तथा संस्कार इत्यादि।

परिकल्पना 05– शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं के साथी दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

निष्कर्ष– शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं के साथी दबाव

के t मूल्य सारणी मान से उच्च होने के कारण सार्थक अन्तर दर्शाती है। अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है। ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं मेंसे शहरी बालिकाओं में साथी समूह दबाव ज्यादा पाया गया। विवेचना– ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में से शहरी बालिकाओं में साथी समूह दबाव ज्यादापाया गया। शहर में बालिकाओं को आधुनिकता के साथ विचार विमर्श करने के लिए बहुत से लोगों का साथ मिलता है। जिससे नई घटनाएं, नए विचार से वह अछूते नहीं रहती हैं। नए विचारों को साझा वर अपने समूह साथियों के सात करती है। ग्रामीण इलाकों में जगह छोटी होने से समूह भी छोटा होता है। साझा की गई बातों का स्पष्टीकरण तुरंत हो जाता है, और दबाव भी नहीं बनता है।

परिकल्पना 06– बालिकाओं के धनात्मक व ऋणात्मक साथी दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

निष्कर्ष–

बालिकाओं के सकारात्मक एवं नकारात्मक समूह साथी दबाव का मध्यमान मूल्य क्रमशः 53, 64 एवं 32.94 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 5.9 व 8.5 प्राप्त हुआ। 598 पर मूल्य 34.65 प्राप्त हुआ जो 0.0 स्तर पर सारणी मान से उच्च प्राप्त हुआ। अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है। बालिकाओं में सकारात्मक साथी समूह दबाव नकारात्मक साथी दबाव की अपेक्षा अधिक है।

विवेचना– बालिकाओं में सकारात्मक साथी समूह दबाव नकारात्मक साथी दबाव की अपेक्षा अधिक है। घर पर भी बालिकाओं को यही संस्कार दिए जाते हैं कि जो कुछ भी हों, हमें अपने विचार सकारात्मक रखने चाहिए। हमारे भारतीय संस्कार बालिकाओं में सकारात्मक समूह दबाव को प्रदर्शित करते हैं। बहुत कम ही परिवार संस्कार बालिकाओं में सकारात्मक समूह दबाव को प्रदर्शित करते हैं। बहुत कम ही परिवार ऐसे होंगे जिसमें बालिकाओं को सामंजस्य व समन्वय बनाए रखने की शिक्षा नहीं दी जाती होगी, इसलिए नकारात्मक साथी दबाव कम ही बालिकाओं में पाया गया।

शैक्षिक महत्व– प्रस्तुत शोध अध्ययन शैक्षिक रूप से निम्नानुसार उपयोगी हो सकेगा–

1. बालिकाओं के सकारात्मक एवं नकारात्मक साथी समूह दबाव के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
2. शोध नकारात्मक दिशा में साथी दबाव की उपयुक्त काउंसलिंग करने में मदद करता है।
3. कैरियर वरियता के दृष्टिकोण के क्षेत्र विशेष के कैरियर रुचि व चयन के बारे में जानकारी मिलती है।
4. शोध बालिकाओं के साथी दबाव में नकारात्मक दिशा में जाकर कैरियर या विषय के चुनाव करने तथा उसे रोकने में कारगर हो सकता है।
5. शिक्षकों को कैरियर एवं विषय चयन में विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने में सहायक होगा।

सुझाव– शोध अध्ययन से निम्नांकित संबंधित सुझाव दिये जा सकते हैं–

* विभिन्न व्यवसायिक क्षेत्रों के व्यक्तियों को शाला में आमंत्रित कर उनके जीवन की सफलता को विद्यार्थियों के पीयर प्रेशर के प्रति उपयुक्त नजरिया विकसित किया जाना चाहिए।
* विद्यालय प्रबंधन विद्यार्थियों में निर्णयन क्षमता विकसित करने में सहायक होना चाहिए।
* शाला में विद्यार्थियों की समस्या को समझने व उचित समाधान एवं दिशानिर्देश प्रदान करने एक प्रकोष्ठ होना चाहिए।

प्रस्तावित शोध विषय–

* विभिन्न शाला प्रकार में विद्यार्थियों के साथी दबाव का अध्ययन करना।
* उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के आत्म सम्मान का साथी दबाव के साथ संबंध का अध्ययन करना।
* प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के साथी दबाव पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
* कैरियर निर्णयन क्षमता के विकास में शालेय गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन।
* व्यवसायिक परिपक्वता पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।

संदर्भ–

* **Afshan (1991)**, Gifted rural and urban girls their vocational interest and creativity. https:// shodhganga.inflibnet.ac.in

* **Ahmad (2009)** aimed at find out the prevalence, pattern and sociodemographic risk factors of substance abuse in male adolescents. https:// shodhganga.inflibnet.ac.in

* **Altman (1997)**, A link between the career development and socioeconomic status of cultural background. https://www.researchate.net

* **Ansari (2016)** explored the level of career maturity and level of occupational aspiration in students. https:// shodhganga.inflibnet.ac.in

* **Bandura (1997)** The importance of secondary school environment. https:/ /shodhganga.inflibnet.ac.in

* **Bandura et al. (2001)** a structural model of sociocognitive influences that influence parental aspirations related to careers. https://shodhganga. inflibnet.ac.in

* **Basu (2011)** Peer Pressure, Tobacco and Smoking Habits the prevalence and determinats of smoking practices among undergradute medical students. https:// shodhganga.inflibnet.ac.in

* **Bester (2004)** conducted a study of peers and parents on the personality development of the adolescent. https:// shodhganga.inflibnet.ac.in

* **Boehnke, (2008)** He examined the consequences of high peer presssure on academic performance in mathematics among middle-school students.

* **Brown and Voyel (1997)** Influence of orientation and development of physic-psychological needs. https:// shodhganga.inflibnet.ac.in

* **Charlotte and Geary (2005)** have proposed in their research that adolescents who are independent from their parents become dependent on their peers and susceptible to peer pressure. https://www.researchgate.net

* **Creed and Patton (2003)** A study about the carrer attiudes and awareness in different age groups. https:// www.researchgate.net

* **ध्रुव, जयमंगल सिंह,** (2009) विद्यार्थियों के वृत्तिक चयन की प्रकृति पर उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन। M Ed, GGU, C.G.

"माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं में गुणवत्ता उन्नयन कार्यक्रम के प्रभावशीलता का अध्ययन"

श्रीमती अंजना अग्रवाल

सारांश

शैक्षिक गुणवत्ता के विकास में शिक्षक, पालक एवं समुदाय का समन्वित प्रयास आवश्यक है। अवलोकन का दायित्व निर्वहन करने वाले संस्था एवं अधिकारी की भी महती भूमिका शैक्षिक स्तर के सुधार में होती है। इस प्रकार विद्यालय से लेकर शिक्षक अधिकारी की भी महती भूमिका शैक्षिक स्तर के सुधार में होती है। इस प्रकार विद्यालय से लेकर शिक्षक अधिकारी एवं समुदाय का सतत् सहयोग बच्चों के शैक्षिक स्तर की संवर्द्धन में अत्यंत लाभकारी तथा सार्थक परिणाम देने वाला सिद्ध होगा। शैक्षिक गुणवत्ता के स्तर में कमी होने के कारणों, को जानने तथा उनके निराकरणों पर समय पर बल दिया जाये तो निश्चय ही शैक्षिक स्तर की वृद्धि में आशातीत सफलता प्राप्त की जा सकती है। अतएव कर्त्तव्यों का भलीभांति निर्वहन इसकी प्रमुख कड़ी है। भौतिक एवं मानवीय संसाधन की कमियों को दूर करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु उनके समुचित उपयोग व प्रयोग हम जितना अधिक निष्ठा के साथ करेंगे। उतना ही शैक्षिक गुणवत्ता के स्तर में सुधार परिलक्षित होगा।

प्रस्तावना

वर्तमान परिदृश्य के मद्देनजर बच्चों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में अपेक्षित सुधार हेतु कई स्तरों पर योजना निर्माण कर उसके कार्यान्वयन हेतु प्रयास किया जा रहा है। इसी कड़ी में स्कूल के गुणवत्ता सुधार में प्राचार्य की अहम भूमिका है। स्कूल का बेहतर वातावरण, गुणवत्ता परक प्रशासन, कक्षाओं में शिक्षण की स्थिति, शिक्षकों के प्रेरणा का स्तर तथा विद्यार्थियों के सीखने व उनके समग्र विकास को प्रभावित करने संबंधी स्कूल के अंदर की सामाजिक–भावनात्मक संभावनाएं एवं प्रक्रियाओं के पीछे प्रभावी नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रधान पाठक की महती भूमिका रहती है। विद्यालयों में शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण द्वारा सतत् मानिटरिंग करते हुए विद्यालय गुणवत्ता सुधार करने का प्रयास किया जावेगा।

उद्देश्य– 1. माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं का गुणवत्ता सुधार करनाः–

1. शिक्षा गुणवत्ता कार्यक्रम का प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
2. विद्यालय की गुणवत्ता निर्धारित करने हेतु विभिन्न कारकों का अध्ययन करना।
3. शालाओं में सुधार हेतु किये जा रहे कार्यों का अध्ययन करना।
4. क्रियान्यवन की प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना।
5. उपरोक्त कठिनाई के आधार पर विद्यालय के सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

1. शिक्षा गुणवत्ता कार्यक्रम क्या है?
2. विद्यालय की गुणवत्ता निर्धारित करने हेतु कौन–कौन से कारक हैं?
3. शालाओं में सुधार हेतु कौन–कौन से कार्य किये जा रहे हैं?
4. क्रियान्वयन की प्रक्रिया में क्या कठिनाई आ रही है?

5. कठिनाई में सुधार हेतु किस प्रकार सुझाव दिए जा सकते हैं?

समयावधि– जुलाई 2017 से जनवरी 2018

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन अप्रायोगिक प्रकृति का है, सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

परिसीमन–

बिलासपुर जिले के बिल्हा विकास खंड के अंतर्गत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लिया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शालाओं के गुणवत्ता सुधार हेतु हमारे द्वारा दो शासकीय विद्यालयों का चयन रेण्डम सेम्पलिंग के द्वारा किया गया–

शोध उपकरण–

1. अवलोकन प्रपत्र–

5. प्रश्नावली–

स्वयं द्वारा प्रश्नावली निर्मित किया गया है।

साक्षात्कार– विद्यालय की गुणवत्ता जानने हेतु (1) बच्चों (2) शिक्षकों एवं (3) प्राचार्य से साक्षात्कार किया गया।

विद्यालय अवलोकन प्रपत्र– विद्यालय की समग्र जानकारी हेतु विद्यालय अवलोकन प्रपत्र भरा गया।

गुणवत्ता उन्नयन कार्य– 1. दसवीं विज्ञान विषय में– 1. प्रकाश 2. दैनिक जीवन में रसायन 3. उर्जा का अध्यापन कार्य किया। बच्चों में इसे पढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया।

1. ग्यारहवीं के छात्रों को कला शिक्षा के प्रति रुचि जागृत किया इसके अंतर्गत मैंने ग्रीटिंग, लिफाफे, पेन स्टेण्ड बनाना सिखाया, इनसे उनमें कला के प्रति रुचि बढ़ी।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बच्चों को वृक्षारोपण करने हेतु प्रोत्साहित किया।

3. विद्यालय में उपलब्ध खेल सामाग्री का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया, छात्रों मे खेल के प्रति रुचि बढ़ी।

4. विद्यालय स्वच्छता हेतु बच्चों को प्रोत्साहित किया।

5. विद्यालय के प्रयोगशाला का उचित रखरखाव एवं सही प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया।

6. छात्र–छात्राओं को कंप्यूटर लेब में जाकर कंप्यूटर का अधिक उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया।

तालिका क्रमांक– 1

विकास खण्ड बिल्हा, जिला बिलासपुर

	शाला का नाम	शहरी/ ग्रामीण
1.	शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला तारबाहर	शहरी
2.	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सेंदरी	ग्रामीण

प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण

शोध प्रश्न

1. विद्यालय की गुणवत्ता निर्धारित करने हेतु कारक निम्न हैं–

व्याख्या–

शिक्षकों द्वारा विद्यालय में बच्चों को नियमित उपस्थिति हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यालय में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता जैसे पर्याप्त कमरे, पेयजल की व्यवस्था, बागवानी, शौचालय की व्यवस्था, पुस्तकालय की व्यवस्था, खेल का मैदान, बाउण्ड्रीवाल, प्रकाश व्यवस्था उचित होनी चाहिए। विद्यालय में पर्याप्त विषयवार शिक्षकों की व्यवस्था होनी चाहिए। विद्यालय में पालक एवं समुदाय की सहभागिता होनी चाहिए। विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए।

शालाओं में सुधार हेतु कौन–कौन से कार्य किये जा रहे हैं।

व्याख्या–

विद्यालय में विषयवार शिक्षकों की व्यवस्था करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षकों द्वारा बच्चों का नियमित मूल्यांकन किया जा रहा है। शाला का वातावरण बच्चों के अनुकूल बनाने का

प्रयास किया जा रहा है। शासन द्वारा शिक्षकों को भी प्रशिक्षित करने हेतु प्रयास किया जा रहा है। शिक्षकों द्वारा सभी छात्र–छात्राओं को समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाती है। शिक्षकों द्वारा समय–समय पर पालकों से संपर्क किया जाता है।

3. क्रियान्वयन की प्रक्रिया में क्या कठिनाई आ रही है।

व्याख्याः–

जन भागीदारी समिति, पालक, बालकों का उचित सामंजस्य न हो पाना जिसका प्रभाव शिक्षा के स्तर पर पड़ता है, उच्च अधिकारियों का समय–समय पर निरीक्षण न कर पाना, शासन द्वारा विद्यालय में वित्तीय सहयोग का अभाव, अभिभावकों का बच्चों की पढ़ाई में ध्यान न देना।

4. कठिनाई में सुधार हेतु किस प्रकार सुझाव दिए जा सकते हैं।

व्याख्या–

जन भागीदारी समिति, पालक, बालकों में उचित सामंजस्य होना चाहिए ताकि शिक्षा के स्तर में सुधार किया जा सके। उच्च अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से समय–समय पर विद्यालय का निरीक्षण किया जाना चाहिए। शासन द्वारा वित्तीय सहयोग दिया जाना चाहिए। अभिभावकों का बच्चों की पढ़ाई की तरफ ध्यान देना चाहिए। विद्यालय में शैक्षणिक वातावरण उचित होना चाहिए। शिक्षकों द्वारा बच्चों का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

गुणवत्ता उन्नयन हेतु किये गये कार्यः– विश्लेषण

1. दसवीं विज्ञान विषय में–

1. प्रकाश
2. दैनिक जीवन में रसायन
3. उर्जा का अध्यापन कार्य किया। बच्चों में इसे पढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया।

व्याख्या–

बच्चों के दैनिक जीवन में दैनिक जीवन से जोड़कर छोटे–छोटे उदाहरणों के माध्यम से पढ़ाया गया। ड्राइंग शीट में चित्र बनाकर बच्चों को समझाया गया। श्यामपट्ट में भी विस्तार से लिखा गया जिससे बच्चों में अध्यापन के प्रति रुचि देखी गयी। विज्ञान के प्रति उत्सुकता बढ़ी।

2. ग्यारहवीं के छात्रों को कला शिक्षा के प्रति रुचि जागृत किया इसके अंतर्गत मैंने ग्रीटिंग, लिफाफे, पेन स्टेण्ड बनाना सिखाया इनसे उनमें कला के प्रति रुचि बढ़ी।

व्याख्याः–

ग्यारहवीं के छात्रों में कला के प्रति रुचि जागृत करने हेतु मैंने

1. मैंने पहले ग्रटिंग बनाना सिखाया इसके अंतर्गत ड्राइंग शीट को मोड़कर, काटकर उसमें ग्रीटिंग बनाना सिखाया।
2. लिफाफा बनाना– समाचार पत्र से लिफाफा बनाना सिखाया।
3. पुराने प्लास्टिक बाटल को काटकर पेन स्टेण्ड बनाना सिखाया।

छात्राओं में बहुत ज्यादा उत्साह देखा गया।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बच्चों को वृक्षारोपण करने हेतु प्रोत्साहित किया। पर्यावरण से संबंधित विस्तार से जानकारी दी गई इससे छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूक हुये।

व्याख्याः–

बच्चों को विद्यालय में वृक्ष लगाने हेतु प्रोत्साहित किया गया। पर्यावरण के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। वृक्षारोपण के बारे में लाभ बताया गया इससे छात्र–छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता देखी गयी।

4. विद्यालय में उपलब्ध खेल सामाग्री का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। छात्रों में खेल के प्रति रुचि बढ़ी।

व्याख्याः–

छात्र–छात्राओं को खेल के महत्व के बारे में बताया गया। विद्यालय में उपलब्ध खेल सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उदाहरणस्वरूप फुटबाल, रस्सी, बैडमिंटन, टेबल टेनिस इससे छात्रों में खेल के प्रति रुचि बढ़ी। विद्यालय स्वच्छता हेतु बच्चों को प्रोत्साहित किया।

व्याख्याः–

छात्र–छात्राओं को विद्यालय में स्वच्छता रखने हेतु प्रोत्साहित किया गया। कक्षा कक्ष को स्वच्छ रखने हेतु प्रोत्साहित किया गया एवं स्वच्छता के महत्व के बारे में विस्तार से बताया गया। गणवेश को स्वच्छ रखने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

व्याख्याः–

सप्ताह में एक बार छात्र–छात्राओं को कम्प्यूटर लैब में ले जाकर कम्प्यूटर का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कम्प्यूटर के सभी पार्ट्स के बारे में समझाया गया। कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली को बच्चों को समझाया गया। जिससे छात्रों में कम्प्यूटर के प्रति रुचि देखी गई।

निष्कर्षः–

1. बच्चों में विज्ञान विषय के प्रति रुचि जागृत हुई।
2. ग्यारहवीं के छात्रों को कला शिक्षा के प्रति रुचि जागृत किया इसके अंतर्गत मैंने ग्रीटिंग, लिफाफे, पेन स्टेण्ड, बनाना सिखाया इनसे उनमें कला के प्रति रुचि बढ़ी।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बच्चों को वृक्षारोपण करने हेतु प्रोत्साहित किया। पर्यावरण से संबंधित विस्तार से जानकारी दी गई इससे छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूक हुये।
4. विद्यालय में उपलब्ध खेल सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। छात्रों में खेल के प्रति रुचि बढ़ी।
5. विद्यालय स्वच्छता हेतु बच्चों को प्रोत्साहित किया।
6. विद्यालय के प्रयोगशाला का उचित रखरखाव एवं सही प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया।
7. छात्र–छात्राओं को कंप्यूटर लेब में जाकर कंप्यूटर का अधिक उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया।
8. मा. एवं उच्चतर मा. स्तर के शालाओं का गुणवत्ता सुधार देखा गया।

अन्य निष्कर्ष–

1. बच्चों के नियमित उपस्थिति के प्रतिशत में वृद्धि पाई गई।
2. विद्यालय में शिक्षकों की नियमित उपस्थिति पाई गई।

अन्य निष्कर्ष–

1. बच्चों के नियमित उपस्थिति के प्रतिशत में वृद्धि पाई गई।
2. विद्यालय में शिक्षकों की नियमित उपस्थिति पाई गई।
3. शाला प्रबंधन समिति की बैठकों में भूमिका के सहभागिता प्रतिशत में वृद्धि पाई गई।
4. शाला विकास योजना विद्यालय के गुणवत्ता सुधार हेतु प्रभावशाली है।
5. शिक्षकों का बच्चों के साथ व्यवहार/ संबंध सही पाया गया।
6. शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य नियमित रूप से पाया गया।
7. शालाओं में सीखने का वातावरण बच्चों के अनुरूप पाया गया।
8. शिक्षकों के द्वारा शिक्षण योजना का निर्माण सही पाया गया।
9. विद्यालय में बच्चों का कक्षानुरूप पठन कौशल पाया गया।
10. बच्चों का कक्षानुरूप लेखन में सुधार देखा गया।
11. बच्चों की अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि देखा गया।
12. बच्चों का कक्षानुरूप गणितीय कौशल में सुधार पाया गया।
13. बच्चों में कक्षानुरूप वैज्ञानिक अभिवृत्ति देखी गई। बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि पाया गया।
14. बच्चों का कक्षानुरूप आसपास की समझ एवं सूझबूझ पाया गया।
15. इस वर्ष की त्रैमासिक/ अर्द्धवार्षिक का मूल्यांकन सही पाया गया।
16. सहायक शिक्षण सामाग्री का प्रयोग सभी शिक्षक करते पाये गये।
17. शालेय स्वच्छता एवं अच्छी आदतों का विकास

सही पाया गया।

18. शाला में विभिन्न प्रतियोगिताओं का स्तर सही पाया गया।

19. शाला का नियमित निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण सुधार देखा गया।

20. विद्यालय गुणवत्ता के बारे में समुदाय का अभिमत सही पाया गया।

शोध अध्ययन का शैक्षिक महत्व एवं सुझावः–

1. विद्यालय में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता होनी चाहिए।
2. विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था होनी चाहिए।
3. विद्यालय में विषय अनुरूप शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।
4. विद्यालय के शिक्षकों को गैरशिक्षकीय कार्य से मुक्त रखना चाहिए।
5. विद्यालय में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।
6. विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए।
7. विद्यालय में छात्रों की नियमित उपस्थिति की जांच की जानी चाहिए।
8. विद्यालय में खेल सामाग्री की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।
9. विद्यालय में पाठ्य पुस्तकों की पर्याप्त उपलब्धता होनी चाहिए।
10. विद्यालय में शिक्षकों के द्वारा बच्चों से वृक्षारोपण कराना चाहिए।
11. विद्यालय में पर्याप्त कमरों की व्यवस्था होनी चाहिए।
12. विद्यालय में शिक्षकों को बच्चों में अनुशासन में रहने की आदत डालनी चाहिए।
13. शिक्षकों को उच्चअधिकारी द्वारा मार्गदर्शन देने की व्यवस्था होनी चाहिए।
14. अध्यापन को रुचिकर बनाने के लिए विज्ञान गणित विषय संबंधित छोटे–छोटे सामाग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए। जैसे विज्ञान मेला, गणित हेतु खेल–खेल में पढ़ाना।
15. विद्यालय के शिक्षकों को गैर शिक्षकीय कार्य से मुक्त रखना चाहिए।
16. विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए।
17. विद्यालय में बच्चों को अनुशासन में रहने की आदत डालनी चाहिए।
18. शिक्षकों को उच्च अधिकारी द्वारा मार्गदर्शन देने की व्यवस्था होनी चाहिए।
19. अभिभावकों की मासिक बैठक में सतत् मूल्यांकन में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों से अवगत कराना चाहिए।
20. कमजोर छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षा छुट्टियों के दिन भी लगाना चाहिए।
21. छात्रों को गृहकार्य अनिवार्य रुप से करना चाहिए।
22. खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।
23. प्राचार्य द्वारा बच्चों का सतत् मूल्यांकन करना चाहिए।
24. बच्चों को स्वअध्याय के लिए प्रेरित करना चाहिए।
25. शिक्षक को सभी छात्रों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए तथा पाठ्यक्रम पूर्ण करना चाहिए।
26. बच्चों को प्रोत्साहन के लिए बच्चों की उपलब्धि को सूचना पटल पर लिखना चाहिए।
27. छात्रों में बोलने का अभ्यास निरंतर कराना चाहिए ताकि वे अपनी बातनिसंकोच रख सकें।
28. विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार होगा।
29. छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी।
30. विद्यालय में अनुशासन देखा जायेगा।
31. शिक्षकों का अध्यापन कार्य रुचिकर होगा।
32. विद्यालय का वातावरण उत्कृष्ट होगा।
33. छात्रों में खेल के प्रति रुचि बढ़ेगी।
34. छात्रों में विद्यालय को स्वच्छ रखने हेतु जागरूकता बढ़ेगी।

विद्यालयीन शिक्षा के वृहद् पहलुओं के प्रति भावी शिक्षकों के अभिवृत्ति का अध्ययन

श्रीमती रमाकान्ति साहू (प्राध्यापक)
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

आदिकाल से लेकर अब तक शिक्षा का उद्देश्य मानव में श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का विकास करना है। शिक्षा का विकास एक सतत प्रक्रिया है। इस विकास में नवीनता एवं वैज्ञानिकता के साथ आधुनिकता का समावेश होना अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी देश का भविष्य उनके बच्चों पर निर्भर करता है एवं बच्चों का निर्माण शिक्षक पर आधारित होता है। शिक्षक उन्हीं बच्चों के माध्यम से अखण्ड राष्ट्र का निर्माण प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा किया जाता है। विभिन्न प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा दिए जाने वाले शिक्षक प्रशिक्षण की उपयोगिता एवं योजना के क्रियान्वयन में दो वर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम की सार्थकता भावी शिक्षकों द्वारा लक्ष्य प्राप्ति हेतु इसके अवलोकन एवं मूल्यांकन की पहलुओं को देखते हुए शिक्षा के वृहद् पहलुओं में कुछ महत्वपूर्ण पहलू जैसे शाला प्रवेश, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, पाठ्य सहगामी क्रियाएं एवं मूल्यांकन को अध्ययन बिन्दु के रूप में चयनित किया गया है। उपरोक्त भावी शिक्षकों की समय के साथ गतिशीलता को बताने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करेगा।

प्रस्तावना–

भावी शिक्षकों को उनके व्यवसाय में कुशलता व सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए विद्यालयीन शिक्षा के वृहद् ज्ञान व अभिवृत्ति की आवश्यकता होती है। शिक्षा के विभिन्न आयामों जैसे प्रवेश प्रक्रिया नियम, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, मूल्यांकन प्रक्रिया, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं खेलकूद, योग एवं व्यायाम, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, आई. सी. टी. इत्यादि की जानकारी व इसके प्रति भावी शिक्षक क्या नजरिया रखते हैं? यह शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपयोगी सिद्ध होगा अथवा नहीं, इसकी जानकारी लेकर प्रशिक्षण में उपर्युक्त क्रिया–कलापों के माध्यम से आधुनिक युग में शिक्षकों को नवीन ज्ञान, नवाचार व खोज प्रवृत्ति का विकास करना आवश्यक है।

हम 21वीं शताब्दी में चल रहे हैं। मानव विकास शिक्षा पर आधारित होता है। शिक्षा एक गतिशील साधन है। शिक्षा का स्वरूप देश, काल आवश्यकता एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। संचार के साधन शिक्षा में अपनी घुसपैठ स्थापित कर चुका है, ऐसी स्थिति में शिक्षक एवं छात्र को भी अत्याधुनिक होना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा की धुरी है, जो उसके संचालन हेतु अपने आप को परिमार्जित एवं संवर्धित करता है। ज्ञान की प्राप्ति अवबोध, स्मृति तर्क एवं सृजनात्मकता की स्थिति तक पहुंच पाना ही वास्तविक शिक्षा है, जो बच्चों को उनके अंतः शक्ति को सोचने, समझने, कुछ करने एवं नई विधि से पुनः सोचने–समझने एवं नवीन ज्ञान उपलब्धि हेतु छात्र को हमेशा क्रियाशील बनाये रखें। नवीनता, सृजनशीलता के गुण से शिक्षक एवं छात्र ओत–प्रोत रहें।

अध्ययन की आवश्यकता–

विद्यालयीन शिक्षा के वृहद पहलुओं के प्रति भावी शिक्षकों का चिंतन कैसा है? इसी तरह पाठ्यक्रम के प्रति आधुनिकता एवं परिवर्तनशीलता के प्रति स्वयं कितना सजग है? शिक्षण विधि आई सी टी के

प्रयोग एवं नवाचार युक्त हो। पाठ्य सहगामी क्रियाएं शिक्षक एवं छात्र के सर्वांगीण विकास की कुंजी है। ठीक इसी तरह वर्तमान में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन वर्ष भर अध्यापन के साथ–साथ मूल्यांकन आदि बातों को अपने शिक्षण अधिगम में कितना समाहित कर सकते हैं, इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता के रूप में यह विषय चुना गया।

अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

(1) विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रवेश संबंधी नियमों के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

(2) विद्यालयों में प्रचलित पाठ्यक्रम के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

(3) विद्यालयों में प्रचलित शिक्षण विधि के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

(4) विद्यालयों में प्रचलित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

(5) विद्यालयों में प्रचलित मूल्यांकन पद्धति के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न–

(1) विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रवेश संबंधी नियमों के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

(2) विद्यालयों में प्रचलित पाठ्यक्रम के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

(3) विद्यालयों में प्रचलित शिक्षण विधि के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

(4) विद्यालयों में प्रचलित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

(5) विद्यालयों में प्रचलित मूल्यांकन पद्धति के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

जनसंख्या– इस शोध के संदर्भ में जनसंख्या से आशय सत्र 2018–19 में प्रशिक्षण प्राप्त भावी शिक्षक (प्रशिक्षार्थी सीधी भर्ती) गुरुघासीदास केन्द्रीय वि. वि. के शिक्षा विभाग, सी. एम. डी. शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षा विभाग, कोणार्क शिक्षा महाविद्यालय, जांजगीर एवं उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर के बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों से है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया, यहां एक–एक कक्षा से 100–100 भावी शिक्षक अध्ययन कर रहे थे, जिनमें से 50–50 प्रशिक्षार्थियों का चयन सम्पूर्ण जनसंख्या के न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग हुआ है।

उपकरण– भावी शिक्षकों हेतु स्वनिर्मित अभिमतावली।

प्रदत्त विश्लेषण– शोध प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों का प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला गया।

शोध प्रश्न क्रमांक– 01

विद्यालय में विद्यार्थियों के प्रवेश संबंधी नियमों के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

प्रश्न क्रमांक एक से 5 तक प्रवेश आधारित प्रश्न

व्याख्या (1) विद्यालयीन शिक्षा हेतु माध्यमिक (कक्षा 6वीं से 8वीं) तक विद्यार्थियों के प्रवेश का आधार प्रवेश पूर्व परीक्षा हो।

व्याख्या (2) प्रवेश का आधार ज्ञान एवं योग्यता आधारित हो।

व्याख्या (3) प्रवेश का आधार मौखिक, लिखित एवं गतिविधि आधारित परीक्षा हो।

व्याख्या (4) विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश लेने में अपने को असहज महसूस करते हैं– भाषाई कठिनाई के कारण।

व्याख्या (5) प्रवेश हेतु विद्यालय में सामाजिक स्तरीकरण न हो, जातीय आधार न

हो, आर्थिक आधार न हो।

शोध प्रश्न क्रमांक– 02

पाठ्यक्रम संबंधी प्रश्न क्रमांक 6 से 13 तक विद्यालयों में प्रचलित पाठ्यक्रम के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

व्याख्या (6)– पाठ्यक्रम का माध्यम हिन्दी एवं मातृभाषा में होना चाहिए।

व्याख्या (7)– पाठ्यक्रम में मातृभाषा अवश्य हो।

व्याख्या (8)– पाठ्यक्रम में भाषा व सामाजिक विज्ञान हो, गणित एवं विज्ञान हो। पर्यावरण एवं मूल्य शिक्षा हो।

व्याख्या (9)– पाठ्यक्रम निर्माण का मुख्य आधार कौशल विकास होना चाहिए।

व्याख्या (10)– एक अच्छे पाठ्यक्रम की विशेषता विद्यार्थियों की रुचि आधारित हो।

व्याख्या (11)– पाठ्यक्रम परिवर्तन की समय सीमा हो 5 वर्ष।

व्याख्या (12)– पाठ्यक्रम में समावेश हो, सामाजिक परिस्थितियाँ, राष्ट्रीय आवश्यकताएँ, वैयक्तिक विकास।

व्याख्या (13)– पाठ्यक्रम का निर्धारण होना चाहिए– राष्ट्रीय स्तर।

शोध प्रश्न क्रमांक 03

विद्यालयों में प्रचलित शिक्षण विधि के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

शिक्षण विधि आधारित प्रश्न

व्याख्या (14)– विज्ञान विषय की सर्वोत्तम शिक्षण विधि गतिविधि आधारित है।

व्याख्या (15)– अधिगम को और अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु दृश्य–श्रव्य साधनों का उपयोग करना है।

व्याख्या (16)– शिक्षण को सर्वोत्तम उपलब्धि स्तर तक पहुंचाने हेतु छात्रों के पूर्व ज्ञान की जांच आवश्यक है।

व्याख्या (17)– शिक्षण अधिगम को व्यवस्थित रखने हेतु पाठ योजना निर्माण आवश्यक है।

व्याख्या (18)– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मूल आधार विद्यार्थी केन्द्रित होना चाहिए।

व्याख्या (19)– प्रभावी कक्षा–कक्ष शिक्षण के लिए– शिक्षण का प्रभावी होना आवश्यक है।

व्याख्या (20)– एक शिक्षक की मूल भूमिका– मार्गदर्शक के रूप में होती है।

व्याख्या (21)– नाटक शिक्षण की उपयुक्त विधि है– कक्षा अभिनय।

व्याख्या (22)– वास्तविक अनुभवों को प्रदान करने वाली सर्वोत्तम शिक्षण विधि– प्रोजेक्ट विधि है।

व्याख्या (23)– सीखने की खेल विधि उपयुक्त है– बाल्यावस्था में।

शोध प्रश्न क्रमांक 04

पाठ्य सहगामी क्रिया आधारित

प्रश्न– विद्यालयों में प्रचलित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

(प्रश्न क्रमांक 24 से 30 तक प्रश्न)

व्याख्या (24)– शिक्षण में सहसंज्ञानात्मक क्रियाओं का महत्व– विषयवस्तु के विकास हेतु, विषय वस्तु को मजबूती प्रदान करने हेतु एवं रोचक बनाने हेतु है।

व्याख्या (25)– कक्षा छठवीं से आठवीं के लिए सर्वश्रेष्ठ पाठ्य सहगामी क्रियाएँ हैं– बाल केन्द्रित।

व्याख्या (26)– पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने का मूल उद्देश्य– छात्रों का ज्ञानात्मक विकास, भावनात्मक विकास एवं मनोगत्यात्मक विकास करना है।

व्याख्या (27)– पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए– कक्षा 6वीं से 8वीं तक।

व्याख्या (28)– पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सम्मिलित होना चाहिए– सामुदायिक गतिविधियाँ।

व्याख्या (29)– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ कक्षा का वातावरण बनाने में सहायक है– सभी बच्चों की सहभागिता हेतु, शिक्षण योग्य वातावरण बनाने हेतु, कोलाहल कम करने हेतु।

व्याख्या (30)– पाठ्य सहगामी क्रियाओं से विद्यार्थियों में गुण विकसित होंगे– नैतिक गुण, तर्कशक्ति, आत्मविश्वास में वृद्धि।

शोध प्रश्न क्रमांक 05

मूल्यांकन आधारित

प्रश्न– विद्यालयों में प्रचलित मूल्यांकन पद्धति के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति कैसी है?

व्याख्या (31)– मूल्यांकन को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग होना चाहिए– सभी कक्षाओं में।

व्याख्या (32)– शिक्षण अधिगम को प्रभावशाली बनाने में मूल्यांकन का महत्व त्रुटियां बताकर सुधार करना है।

व्याख्या (33)– मूल्यांकन की सर्वश्रेष्ठ पद्धति– प्राप्तांक आधारित है।

व्याख्या (34)– मूल्यांकन आवश्यक है– छात्रों के लिए, शिक्षकों के लिए एवं पालकों की संतुष्टि के लिए।

व्याख्या (35)– सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन– वर्ष में होना चाहिए– दो बार।

व्याख्या (36)– वर्ष के अंत में मूल्यांकन होना चाहिए– हाँ।

1. प्रवेश संबंधी क्षेत्र

उद्देश्य एवं शोध प्रश्न

प्रवेश संबंधी निष्कर्ष शोध प्रश्न 01

(1) प्रवेश का आधार– प्रवेश पूर्व परीक्षा हो।

(2) प्रवेश ज्ञान एवं अभियोग्यता आधारित हो

(3) प्रवेश मौखिक, लिखित एवं गतिविधि आधारित

(4) प्रवेश में अन्य भाषाई कठिनाई न हो

(5) प्रवेश में जातिगत भेदभाव न हो।

उद्देश्य एवं शोध प्रश्न 02

पाठ्यक्रम संबंधी निष्कर्ष

(6) पाठ्यक्रम हिन्दी एवं मातृभाषा में हो।

(7) पाठ्यक्रम में मातृभाषा अवश्य हो।

(8) माध्यमिक स्तर पर विषय भाषा एवं सामाजिक पाठ्यक्रम में विज्ञान, गणित एवं विज्ञान, पर्यावरण एवं मूल्य शिक्षा अवश्य हो।

(9) कौशल विकास एवं अधिगम प्रतिफल प्राप्ति युक्त पाठ्यक्रम हो।

(10) पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए रुचिकर हो।

(11) पाठ्यक्रम परिवर्तन 5 वर्ष में हो।

(12) पाठ्यक्रम ऐसा हो जिससे वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास हो।

(13) पाठ्यक्रम का निर्धारण राष्ट्रीय स्तर पर हो।

उद्देश्य एवं शोध प्रश्न क्रमांक 03

शिक्षण विधि आधारित निष्कर्ष

(14) शिक्षण विधि गतिविधि आधारित हो।

(15) शिक्षण दृश्य–श्रव्य साधनों का प्रयोग हो।

(16) विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जांच हो।

(17) शिक्षण अधिगम हेतु पाठ योजना निर्माण आवश्यक है।

(18) शिक्षण विधि बाल केन्द्रित हो।

(19) शिक्षणविधि प्रभावी हो।

(20) शिक्षक मार्गदर्शक होता है।

(21) शिक्षण विधि कक्षा अभिनय आधारित हो

(22) शिक्षण विधि में प्रोजेक्ट विधि का प्रयोग हो

(23) खेलविधि से सबसे अधिक बाल्यावस्था में सीखते हैं।

उद्देश्य एवं शोध प्रश्न क्रमांक 04

पाठ्य सहगामी क्रिया आधारित निष्कर्ष

(24) पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विषय वस्तु के विकास के लिए, मजबूती प्रदान करने एवं रोचक बनाने हेतु आवश्यक है।

(25) पाठ्य सहगामी क्रियाएँ कक्षा छठवीं से आठवीं तक के लिए– बाल केन्द्रित हो।

(26) पाठ्य सहगामी क्रियाएँ ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं मनोगत्यात्मक विकास के लिए होता है।

(27) पाठ्य सहगामी क्रियाओं को कक्षा छठवीं से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए होना अनिवार्य है।

(28) पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सामुदायिक गतिविधियाँ हों।

(29) पाठ्य सहगामी क्रियाओं से नैतिक, तर्कशक्ति एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

उद्देश्य एवं शोध प्रश्न क्रमांक 05

मूल्यांकन आधारित (निष्कर्ष)

(31) मूल्यांकन सभी कक्षाओं में हो।

(32) मूल्यांकन विद्यार्थियों की त्रुटि जानने एवं सुधार हेतु आवश्यक है।

(33) मूल्यांकन प्राप्तांक आधारित हो।

(34) मूल्यांकन, छात्रों, शिक्षकों एवं पालकों की संतुष्टि हेतु आवश्यक है।

(36) वर्ष के अंत में मूल्यांकन अवश्य हो।

शैक्षिक उपयोग (1) शिक्षा में गुणात्मक विकास लाने हेतु प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों को उपयोग में लाया जा सकता है।

(2) सभी कक्षाओं में प्रवेश, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं मूल्यांकन को उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर प्रभावशाली ढंग से लागू किया जा सकता है।

(3) शिक्षकों के लिए शाला कैलेण्डर निर्माण में भी प्रस्तुत शोध अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

(4) शालेय गतिविधियों में बिंदुवार प्रमुखता के आधार पर भी इसके निष्कर्षों को शालाओं में लागू करने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

प्रकाशक– विनय रखजा आर. लाल बुक डिपो मेरठ

– राष्ट्रीय पाठचर्या की रूपरेखा (2009–10) राष्ट्रीय परिषद् नई दिल्ली।

– शैरिक (1984) ए स्टडी ऑफ सेकेण्डरी क्यू प्वाइंट इन रिलेशन देअर वेल्यूज एप्टूट्यूड

– NCTE (1998) द्वारा जारी परिपत्र Quality Concern and in Secondry Teacher Education Curriculum

– A Fram work (NCERT, 1978)

सराफ (1996) शिक्षकों का व्यावसायिक स्वरूप, धारणा (संकल्पना) और संभावनायें।

– सक्सेना एन. आर. मिश्रा, बी. के. मोहन्ती, आर. के. (2011), अध्यापक शिक्षा एम. एड. हेतु

बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्व–अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. श्रीमती महालक्ष्मी सिंह
सहा. प्राध्यापक
आई.ए.एस.ई.
बिलासपुर (छ.ग.)

श्रीमती मनीषा वर्मा
सहा. प्राध्यापक
आई.ए.एस.ई.
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन से बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन हेतु शहरी और ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित/ अप्रशिक्षित शिक्षकों का अभिमत प्राप्त किया गया। स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से विभिन्न आयाम जैसे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, आपसी–संबंध, कार्य भूमिका प्रबंधन एवं जवाबदेही के माध्यम से अभिमत प्राप्त किये गये। शिक्षा की गुणवत्ता बनी रहे इस हेतु लगातार नवाचार होते रहते हैं जिसकी जानकारी शिक्षकों को प्रशिक्षण के द्वारा दी जाती है। प्रशिक्षण किसी भी कार्य/ व्यवसाय में आवश्यक होते जो कार्य को उचित ढंग से करने हेतु व्यक्ति के ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति का क्रमबद्ध विकास करते हैं।

शिक्षकों के विषय में सिर्फ अच्छी पकड़ ही पर्याप्त नहीं होती बल्कि वे सूचनाओं का सम्प्रेषण सही ढंग से कर सकें, ज्ञान का निर्माण बालक स्वयं कैसे करें, इस हेतु वातावरण निर्माण कर सकें, विद्यार्थियों के सकारात्मक दृष्टिकोण, शिक्षण संबंधी तकनीकी ज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त होते हैं। बी. एड. प्रशिक्षित/ अप्रशिक्षित ग्रामीण / शहरी सभी शिक्षकों ने स्वीकार किया है कि बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की अभिप्रेरणा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना

शिक्षा सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण आधार होती है। शिक्षा समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। शिक्षा व्यक्ति को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता को बाहर निकालने की प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के सदस्य एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के लिये आवश्यक ज्ञान तथा कौशलों को प्राप्त करता है। शिक्षा किसी समाज में चलने वाली सोद्देश्य प्रक्रिया है जो सतत् चलती है। शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों ही प्रकार से प्राप्त होती है। औपचारिक शिक्षा वह विधिवत शिक्षा है जो शालाओं में विशिष्ट योग्यताधारी शिक्षकों द्वारा दी जाती है। शिक्षकों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिये ताकि बालकों में वांछनीय परिवर्तन हो सके। बच्चों को गुणवत्तामूलक शिक्षा मिले, इस हेतु प्रतिदिन शिक्षा में नवाचार हो रहे हैं। वर्तमान में शिक्षकों की भूमिका में अत्यंत बदलाव आया है, अब वे एक मागदर्शक की भूमिका में बच्चों के सामने हैं। अब का समय, बच्चों को अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान कर सकें, ऐसा बनाने का है। ज्ञान का सृजन भी बालक स्वयं करता है, शिक्षक सिर्फ ज्ञान निर्माण हेतु वातावरण का निर्माण करता है। शिक्षक, व्यक्तित्व निर्माण व समाज निर्माण में रचनाकार की भूमिका का निर्वहन करता है। आज के बदलते परिवेश में शिक्षकों को क्षमतावान होना है। उनके सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने हेतु उनमें कुछ विशेष कौशलों का होना आवश्यक है। शिक्षक मौजूदा परिस्थितियों में

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रशिक्षण किसी भी कार्य/ व्यवसाय में आवश्यक होते हैं जो कार्य को उचित ढंग से करने हेतु व्यक्ति के ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति का क्रमबद्ध विकास करते हैं। शिक्षकों के विषय में सिर्फ अच्छी पकड़ ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि सूचनाओं का संप्रेषण सही ढंग से कर सके, ज्ञान का निर्माण बालक कैसे करें इस हेतु वातावरण बना सके, विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, शिक्षण संबंधी तकनीकी ज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा प्राप्त होता है। बी. एड. प्रशिक्षण शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों से आशा की जाती है कि वे स्वप्रेरित होकर शाला के विकास में अपनी पूर्ण सहभागिता दें।

प्रशिक्षण

प्रशिक्षण किसी कार्य विशेष को सम्पन्न करने के लिये व्यक्ति के ज्ञान व निपुणता में वृद्धि करने का कार्य है। प्रशिक्षण अल्पकालीन शैक्षणिक प्रक्रिया है तथा जिसमें एक व्यवस्थित व संगठित कार्य–प्रणाली उपयोग में लाई जाती है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी उद्देश्य के लिये तकनीकी ज्ञान व निपुणताओं को सीखता है। प्रशिक्षण कार्य एवं संगठन की आवश्यकताओं के लिये व्यक्ति के ज्ञान, निपुणताओं, व्यवहार, अभिरुचियों तथा मनोवृत्तियों में सुधार करता है, परिवर्तन करता है तथा उसके अनुरूप ढालता है। प्रशिक्षण से सीखने का अनुभव प्राप्त होता है। प्रशिक्षण से व्यक्ति के कार्य निष्पादन क्षमता में सुधार होता है।

प्रशिक्षण की विशेषतायें– 1. प्रशिक्षण मानव संसाधन विकास की एक महत्वपूर्ण उप–प्रणाली तथा मानव संसाधन प्रबंधन के लिये आधारभूत संचालनात्मक कार्यों में से एक है।

2. प्रशिक्षण विकास की एक व्यवस्थित एवं पूर्व नियोजित प्रक्रिया होती है।

3. प्रशिक्षण सतत् जारी रहने वाली प्रक्रिया है।

4. प्रशिक्षण सीखने का अनुभव प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

5. प्रशिक्षण किसी कार्य की व्यावहारिक शिक्षा का स्वरूप होता है।

6. प्रशिक्षण से ज्ञान एवं निपुणताओं में वृद्धि की जाती है तथा विचारों, अभिरुचियों एवं व्यवहारों में परिवर्तन लाया जाता है।

7. प्रशिक्षण से कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

8. प्रशिक्षण प्रबंधतंत्र का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व होता है।

प्रशिक्षण का उद्देश्यः– (1) कार्य एवं संगठन की वर्तमान व परिवर्तित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये नये व पुराने कर्मचारियों को तैयार करना

(2) नवनियुक्त कर्मचारियों को निश्चित कार्य के कुशलतापूर्ण निष्पादन हेतु आवश्यक ज्ञान व निपुणताओं को प्रदान करना।

(3) व्यावसायिक क्षमता के विकास हेतु।

अतः यह कहा जा सकता है कि प्रशिक्षण कार्यों को सही व प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पन्न करने हेतु जानकारी प्रदान करने की प्रक्रिया है। प्रशिक्षण से कार्य के प्रति समझ, कार्यक्षमता तथा उत्पादकता में वृद्धि होती है।

प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व

गुरु कुम्हार, शिष्य कुंभ है, पुनि–पुनि काढ़त खोट
भीतर बॉह सहार दे, बाहर मारे चोट।।

उपरोक्त दोहे में शिक्षक–छात्र के संबंध को बताया गया है, लेकिन वर्तमान परिदृश्य में मारना अपराध की श्रेणी में आ गया है। अतः यह बताने का प्रयास किया गया है कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान मार शब्द को दण्ड का रूप न मान उसके भावार्थ में जावें और उसमें निहित आंतरिक बदलाव को किस तरह परिवर्तन किया जा सकता है, के मूल भाव को भी प्रशिक्षण के माध्यम से छात्राध्यापकों को बतावें। उपरोक्त सूक्ष्म बातों को शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से बताया जा सके, यही इस शोध की प्रथम आवश्यकता एवं औचित्य है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षक जितने योग्य व अपने कार्य में

प्रतिष्ठित, दक्ष होंगे, बालकों के चहुंमुखी विकास के लिये उत्तम होगा। योग्य व दक्ष शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन में सक्षम होते हैं। स्वप्रेरित शिक्षक उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग कर शिक्षण हेतु उपयुक्त वातावरण निर्माण करने में दक्ष होता है। इसमें कमी व वृद्धि शिक्षण स्तर को प्रभावित करती है। किसी राष्ट्र का आधार स्तंभ वहाँ के नागरिक होते हैं। बच्चों को गुणवत्तामूलक शिक्षा मिले, इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षक क्षमतावान हो। क्षमतावान शिक्षक बनाने हेतु आजादी के बाद से ही प्रशिक्षण तक संस्थायें लगातार सक्रिय हैं। शिक्षकों को "राष्ट्र–निर्माता" की संज्ञा दी जाती है। अतः आज भी अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता सर्वोपरि है। शिक्षकों के समुचित विकास के लिये उनमें बाल–मनोविज्ञान का ज्ञान, विषयवस्तु का ज्ञान, अध्यापन शैली, अध्यापन विधियों का प्रयोग, मूल्यों, सिद्धांतों की शिक्षा, दर्शन का ज्ञान व व्यावसायिक विकास शिक्षण–प्रशिक्षण से ही संभव है। ऐसा ही शिक्षक प्रशिक्षण बी. एड. कार्यक्रम है जहाँ प्रशिक्षार्थियों को शिक्षकीय कार्य में पारंगत किया जाता है। इसके माध्यम से शिक्षकों के अध्यापन कार्य का प्रभाव उनके विद्यार्थियों व विद्यालयों की गुणवत्ता स्तर पर पड़ता है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने भी स्नातक/ स्नातकोत्तर पश्चात् अध्यापक शिक्षा के संबंध में एक वर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम की अनुशंसा की थी और कहा कि इसे दो वर्षों का कर दिया जाएगा। दो वर्षों का बी. एड. प्रशिक्षण सत्र 2015–16 से लागू कर दिया गया। वर्तमान समय में शिक्षक को सिर्फ व्यावसायिक न होकर समाज एवं विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है। समाज एवं समुदाय से जुड़कर ही सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं एवं समस्याओं को जाना जा सकता है। साथ ही उनके निराकरण की क्षमता और कुशलता प्राप्त करना भी आवश्यक है। इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति द्विवर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम से संभव हो पा रही है।

शिक्षकीय पेशा एक आदर्श व्यवसाय है। इनमें ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जिनकी अपने विषय का ज्ञान मजबूत हो, अपने विद्यार्थियों को अपना मानकर स्नेह करे। प्रत्येक बच्चा सीख सकता है तथा अपनी ही गति से सीखता है, ऐसी सकारात्मक सोच हो अर्थात् शिक्षकीय प्रभावशीलता उच्च हो। एक शिक्षक में ऐसे समस्त गुणों का विकास शिक्षण प्रशिक्षण से ही हो सकता है।

बी. एड. प्रशिक्षण से संबंधित शोध पूर्व में किये गये हैं लेकिन शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन विषय पर शोध अब तक नहीं हुआ है। अतः संबंधित विषय पर शोध आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्यः– शिक्षकों के वृत्ति विकास के लिये शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाएं दायित्व का निर्वहन कर रही हैं। अध्यापकों को दिये जाने वाला बी. एड. प्रशिक्षण तभी सफल माना जाएगा जब शिक्षक स्व.–अभिप्रेरित होकर प्रशिक्षण में दी गई जानकारियों को शाला में जाकर क्रियान्वित करें इसी से बी. एड. प्रशिक्षण की प्रभाविता सिद्ध होगी। बी. एड. प्रशिक्षण शिक्षकों को स्व–अभिप्रेरित कर पा रहा है कि नहीं यह जानने हेतु यह शोध कार्य प्रस्तावित है।

इस शोध कार्य के उद्देश्य निम्नानुसार हैं–

(1) शिक्षकों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन।

(2) बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों के आपसी संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

(3) शिक्षकों की कार्यभूमिका पर बी. एड. प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।

(4) शालेय गतिविधियों के प्रबन्धन में शिक्षकों की **भूमिका का अध्ययन**

(5) बी. एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकीय कार्य के प्रति शिक्षकों की जवाबदेही पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन (6) बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्व अभिप्रेरणा का अध्ययन।

शोध प्रश्नः– इस अध्ययन के लिये निम्न लिखित शोध प्रश्न है–

ग्रामीण/ शहरी बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भिन्नता होगी?

2. बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों के आपसी संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

3. बी. एड. प्रशिक्षण उपरान्त शिक्षकों की कार्यभूमिका में क्या परिवर्तन आता है?

4. क्या बी. एड. प्रशिक्षण शिक्षकों के शालेय गतिविधियों के प्रबन्धन को प्रभावित करता है?

5. बी. एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकीय कार्य के प्रति शिक्षकों की जवाबदेही कितनी प्रभावित होती है?

6. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा में क्या भिन्नता होगी।

प्रयुक्त पदों की परिभाषाएँः–

बी. एड. प्रशिक्षण– प्रस्तुत अध्ययन में बी. एड. प्रशिक्षण शिक्षकों को व्यावसायिक रूप से सक्षम बनाने हेतु NCTE द्वारा संचालित द्विवर्षीय पाठ्यक्रम है जो शिक्षकों के ज्ञान, व्यवहार व कौशल का विकास करता है।

शिक्षक– प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक पाठ्यचर्या में निहित समस्त गतिविधियों में शाला में संचालनकर्ता होता है। शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो शाला या समकक्ष संस्था में एक व्यवसाय के रूप में शिक्षा देता है।

शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा– स्वअभिप्रेरणा वह आंतरिक शक्ति है जो किसी कार्य को करने के लिये शिक्षकों की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रेरणा देती है।

अध्ययन का परिसीमन– प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित बिन्दुओं में परिसीमित किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध में पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों का चयन किया गया है।

बिलासपुर जिले के बिल्हा, कोटा, मस्तूरी, तखतपुर विकासखण्ड के शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया।

* बी. एड. प्रशिक्षित 100 शिक्षक व बी. एड. अप्रशिक्षित 100 शिक्षक।
* 50 ग्रामीण बी. एड. प्रशिक्षित व 50 शहरी बी. एड. प्रशिक्षित तथा 50 ग्रामीण बी. एड. अप्रशिक्षित व 50 शहरी बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षक।
* प्रस्तुत शोध सत्र 2018–19 की समय–सीमा में बंधा हुआ है।

समस्या से संबंधित शोध साहित्य

1. सरन, एस. ए. (1977) शिक्षकीय व्यवसाय में शिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन।

निष्कर्ष– शिक्षकीय व्यवसाय के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति धनात्मक पाई गई।

2. वर्मा, डी. आर. (1979) छात्राध्यापकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति में परिवर्तन हेतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक उत्प्रेरक के रूप में।

3. सिन्हा यू. (1980) शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता पर शैक्षिक कार्यक्रम का प्रभाव।

निष्कर्ष– प्रशिक्षित शिक्षक, विषयवस्तु का ज्ञान, पाठ की तैयारी, आत्मविश्वास पूर्ण, उच्चारण, हाव–भाव एवं कक्षा शिक्षण में अप्रशिक्षित शिक्षकों से उत्तम है।

शोध अभिकल्प एवं विधि

शोध विधि– प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– बिलासपुर संभाग के शहरी/ ग्रामीण, हाई/ हायर सेकेण्डरी विद्यालयो में कार्यरत शिक्षक जनसंख्या के रूप में मान्य है।

न्यादर्श– लघु शोध हेतु बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्व–अभिप्रेरणा की प्राप्ति में कितना प्रभाव परिलक्षित है। इसके अध्ययन के लिए बिलासपुर जिले के शिक्षकों का चयन किया गया।

न्यादर्श चयन की विधि– न्यादर्श का चयन सम्पूर्ण जनसंख्या से यादृच्छिक चयन विधि से किया गया।

तालिका क्रमांक– 3.1

क्र.	प्रतिदर्श समूह	ग्रामीण	शहरी	योग
1.	बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षक	50	50	100
2.	बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षक	50	50	100

योग– 100 100 200

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसका अभिकल्प 2x 2 प्रकृति का है।

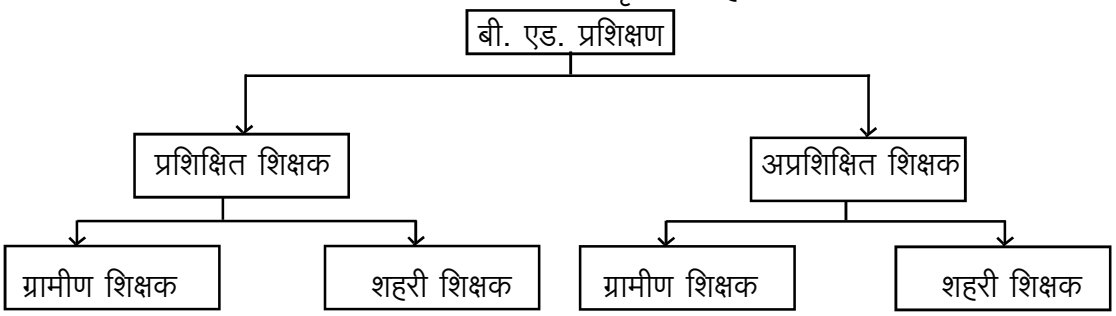

प्रयुक्त चरः–

प्रस्तुत लघु शोध–अध्ययन के विभिन्न चर निम्नांकित हैं–

* स्वतंत्र चरः–

बी. एड. प्रशिक्षण

* आश्रित चरः– शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा

शोध उपकरणः–

शिक्षकों की स्व अभिप्रेरणा के मापन हेतु शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया, आपसी संबंध, कार्य भूमिका, प्रबंधन, जवाबदेही, आयामों का समावेश करते हुए स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रयुक्त सांख्यिकी– प्रस्तुत शोध समस्या हेतु स्वअभिप्रेरणा प्रश्नावली के प्रशासन से प्राप्त प्रदत्तों का मापन प्रतिशत के आधार पर गणना द्वारा की गई।

प्रदत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में स्व निर्मित शोध प्रश्नों की जांच के लिये प्रदत्तों का संकलन– स्वनिर्मित, स्व अभिप्रेरणा प्रश्नावली द्वारा "बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों स्वअभिप्रेरणा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" किया गया।

शोध प्रश्न– 1: ग्रामीण/ शहरी बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भिन्नता होगी?

तालिका क्रमांक– 4.1

क्र.	ग्रामीण/ शहरी	शिक्षकों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्राप्तांकों का प्रतिशत
1.	ग्रामीण अप्रशिक्षित	50	1500	1427	90.13
2.	शहरी अप्रशिक्षित	50	1500	1399	93.26
3.	ग्रामीण प्रशिक्षित	50	1500	1413	94.2
4.	शहरी प्रशिक्षित	50	1500	1430	95.33

निष्कर्षः– शहरी/ ग्रामीण बीएड प्रशिक्षित शिक्षकों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अप्रशिक्षित शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

विवेचना– ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 90.13 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 93.26 है। ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 94.2 है जबकि शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 95.33 है।

इस प्रकार ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 9.87 है शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 6.74 है।

ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 5.8 है। शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 4.67 है। ग्रामीण प्रशिक्षित/ अप्रशिक्षित, शहरी प्रशिक्षित/ अप्रशिक्षित शिक्षकों के स्वीकृति और अस्वीकृति के प्रतिशत को देखने से ज्ञात होता है कि बी. एड. प्रशिक्षण का प्रभाव शिक्षकों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है। बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा कक्षा शिक्षण के दौरान सीखे गए शिक्षण कौशलों का तथा विद्यार्थियों के स्तरानुकूल ज्ञान का स्थानांतरण भलीभांति किया जाता है।

शोध प्रश्न क्र.2– बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों के आपसी संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

तालिका क्रमांक– 4.2

क्र.	ग्रामीण/ शहरी	शिक्षकों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्राप्तांकों का प्रतिशत
1.	ग्रामीण अप्रशिक्षित	50	1500	1380	92
2.	शहरी अप्रशिक्षित	50	1500	1472	91.46
3.	ग्रामीण प्रशिक्षित	50	1500	1390	92.66
4.	शहरी प्रशिक्षित	50	1500	1409	93.93

निष्कर्ष– बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों के आपसी संबंधों पर प्रभाव पड़ता है, स्वीकार किया गया।

विवेचना– ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 92 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 91.46 है। ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 92.66 है जबकि शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 93.93 है।

ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 7.34 है। शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 6.07 है। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों में आपसी सामंजस्य व समायोजन क्षमता के विकास के लिए प्रयास किया जाता है। बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों का दृष्टिकोण आपसी संबंधों के प्रति उच्च पाया गया, अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में।

शोध प्रश्न क्र. 3– बी. एड. प्रशिक्षण उपरान्त शिक्षकों की कार्य भूमिका में क्या परिवर्तन आता है।

तालिका क्रमांक– 4.3

क्र.	ग्रामीण/ शहरी	शिक्षकों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्राप्तांकों का प्रतिशत
1.	ग्रामीण अप्रशिक्षित	50	1500	1378	91.86
2.	शहरी अप्रशिक्षित	50	1500	1391	92.73
3.	ग्रामीण प्रशिक्षित	50	1500	1398	93.2
4.	शहरी प्रशिक्षित	50	1500	1404	93.6

निष्कर्ष– बी. एड. प्रशिक्षण उपरान्त शिक्षकों की कार्य भूमिका प्रभावित होती है, स्वीकार किया गया।

विवेचना– ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 91.86 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 92.73 है।

इसी प्रकार ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों का प्रतिशत 93.2 है और शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 93.06 है।

इस प्रकार ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों का अस्वीकृति का प्रतिशत 8.14 शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 7.27 है। ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 6.8 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 6.4 है। अतः बहुत कम शिक्षकों ने स्वीकार नहीं किया है कि बी. एड. प्रशिक्षण से शिक्षकों की

कार्य भूमिका प्रभावित होती है। बी. एड. प्रशिक्षण से शिक्षकों में शिक्षकीय गुण का विकास होता है, जिससे वह अपने कार्य को अच्छे ढंग से कर पाता है।

शोध प्रश्न क्र. 4– क्या बी. एड. प्रशिक्षण शिक्षकों के शालेय गतिविधियों के प्रबंधन को प्रभावित करता है।

तालिका क्रमांक– 4.4

क्र.	ग्रामीण/ शहरी	शिक्षकों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्राप्तांकों का प्रतिशत
1.	ग्रामीण अप्रशिक्षित	50	1500	1442	96.13
2.	शहरी अप्रशिक्षित	50	1500	1459	97.26
3.	ग्रामीण प्रशिक्षित	50	1500	1463	97.53
4.	शहरी प्रशिक्षित	50	1500	1469	97.93

निष्कर्ष– बी. एड. प्रशिक्षण से शिक्षकों के शालेय गतिविधियों के प्रबंधन पर प्रभाव पड़ता है, स्वीकार किया गया।

विवेचना– ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 96.13 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 97.26 है। इस प्रकार अस्वीकृति प्रतिशत ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों का 3.87 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 2.74 है।

इस प्रकार ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों का प्रतिशत 97.53 है। शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 97.93 है ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 2.47 है। शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 2.07 है। इस प्रकार स्वीकृति व अस्वीकृति के प्रतिशत का अवलोकन से ज्ञात होता है कि शालेय गतिविधियों केप्रबंधन में बी. एड. प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित शिक्षक शालेय गतिविधियों यथा कक्षाकक्ष प्रबंधन, साहित्यिक, सांस्कृतिक मनोरंजक, खेलकूद व्यायाम आदि के संचालन में कुशल होते हैं।

शोध प्रश्न क्र. 5– बी. एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकीय कार्य के प्रति शिक्षकों की जवाबदेही प्रभावित होगी?

तालिका क्र. 4.5

क्र.	ग्रामीण/ शहरी	शिक्षकों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्राप्तांकों का प्रतिशत
1.	ग्रामीण अप्रशिक्षित	50	1500	1354	90.06
2.	शहरी अप्रशिक्षित	50	1500	1361	90.73
3.	ग्रामीण प्रशिक्षित	50	1500	1382	92.33
4.	शहरी प्रशिक्षित	50	1500	1403	93.53

निष्कर्ष– बी. एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकीय कार्य के प्रति शिक्षकों की जवाबदेही प्रभावित होती है, स्वीकार किया गया।

विवेचना– ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 90.06 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 90.73 है। इसी प्रकार ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 92.33 है तथा शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 93.53 है।

इस प्रकार ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 9.94 है। शहरी अप्रशिक्षित की अस्वीकृति का प्रतिशत 9.27 है। ग्रामीण प्रशिक्षित की अस्वीकृति का प्रतिशत 7.67 है। शहरी प्रशिक्षित का प्रतिशत 6.47 है।

ग्रामीण अप्रशिक्षित/ शहरी अप्रशिक्षित/ ग्रामीण प्रशिक्षित एवं शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रतिशत की विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि बी. एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों

की कार्य के प्रति जवाबदेही बढ़ती है। बी. एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों के दायित्व निर्वहन की क्षमता का विकास होता है।

शोध प्रश्न क्रमांक 6– बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, स्वीकृति प्रदान की गई।

तालिका क्र. 4.6

क्र.	ग्रामीण/ शहरी	शिक्षकों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्राप्तांकों का प्रतिशत
1.	ग्रामीण अप्रशिक्षित	50	7500	6884	91.78
2.	शहरी अप्रशिक्षित	50	7500	6954	92.72
3.	ग्रामीण प्रशिक्षित	50	7500	6908	93.10
4.	शहरी प्रशिक्षित	50	7500	7024	93.65

विवेचना– ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 91.78 है। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 92.72 है ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत 92.10 है। प्रशिक्षित शिक्षकों का स्वीकृति का प्रतिशत 93.65 है।

ग्रामीण अप्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 8.22 है। शहरी अप्रशिक्षित का अस्वीकृति का प्रतिशत 7.28 है।

इसी प्रकार ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 7.9 है। शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की अस्वीकृति का प्रतिशत 6.35 है।

अतः ग्रामीण अप्रशिक्षित, शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रतिशत की विवेचना करने से ज्ञात होता है कि बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्व अभिप्रेरणा पर सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है। बहुत कम शिक्षकों ने ऐसा नहीं माना है।

इसी प्रकार ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की एवं शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की स्वीकृति का प्रतिशत एवं अस्वीकृति का प्रतिशत की विवेचना करने से ज्ञात होता है कि बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्व अभिप्रेरणा पर सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है। बहुत कम शिक्षकों ने ऐसा नहीं माना है।

बी. एड. प्रशिक्षण से शिक्षकों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आपसी संबंध, कार्यभूमिका, प्रबंधन, जवाबदेही का विकास होता है, जिससे इनकी स्वअभिप्रेरणा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन का शैक्षिक महत्वः– प्रजातांत्रिक देश भारत में शिक्षा का वास्तविक कार्य अपने युवाओं को नागरिकों के उचित कर्तव्यों के पालन करने के लिये प्रशिक्षित करना है। किसी भी कार्य के सफलतापूर्वक सम्पादन के लिये शिक्षण एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को शिक्षण कौशलों में दक्ष करने के लिये शिक्षक–प्रशिक्षण आवश्यक होता है। बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा पर सकारात्मकता परिलक्षित होता है जिससे बच्चों का गुणात्मक विकास संभव होता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण के माध्यम से कक्षा शिक्षण के दौरान विषय वस्तु के अध्यापन हेतु उचित शिक्षण सामग्री के चयन, निर्माण एवं उपयोग हेतु प्रेरित किया जाना तथा शिक्षकों के द्वारा शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया अपनाई जाती है उनका विकास किया जाना तथा शिक्षकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अपनाई जाती है उनका विकास किया जाना। बी. एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा पर सकारात्मकता परिलक्षित होता है जिससे बच्चों का गुणात्मक विकास संभव होता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण के माध्यम से कक्षा शिक्षण के दौरान विषय वस्तु के अध्यापन हेतु उचित शिक्षण सामग्री के चयन, निर्माण एवं उपयोग हेतु प्रेरित किया जाना शिक्षकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अपनाई जाती है उनका विकास किया जाना। बी. एड. प्रशिक्षण शिक्षकों में प्रबंधन, प्रशासन, जवाबदेही, आपसी संबंध, कक्षा–कक्ष वातावरण

निर्माण, सामुदायिक सहभागिता, स्व ऑकलन, कार्यभूमिका सुनिश्चित करता है।

प्रस्तुत शोध की उपयोगिता एवं महत्व की पुष्टि निम्नांकित रूप से की जा सकती है।

1. शिक्षकों का बी. एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम से अधिक गुणात्मक एवं सृजनात्मक विकास किया जा सकेगा।

2. शिक्षकों के आकस्मिक एवं व्यावसायिक विकास में बी. एड. प्रशिक्षण के प्रभाव की जानकारी हो सकेगी।

3. शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों को एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में उनकी प्रभावी भूमिका के महत्व को समझा जा सकेगा।

4. प्रचलित शिक्षक प्रशिक्षण के अनुभव से पता चलता है कि उनमें नये विचारों को शाला एवं समाज से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करने की आवश्यकता है।

अभिमत– बी. एड. प्रशिक्षण से शिक्षकों की स्वअभिप्रेरणा पर पड़ने वाले प्रभाव से शिक्षकों में अपेक्षित दक्षता एवं क्षमता की वृद्धि बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में उचित भूमिका का निर्वहन करती है। इन बातों की अनुशंसा -NCF- 2005 भी करता है–

क. शिक्षकों की ऐसी तैयारी जरूरी है कि वे बच्चों का ख्याल रख सकें और उनके साथ में बच्चों को समझ सकें।

ग. ग्रहणशील और निरन्तर सीखने वाले हों।

घ. शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खोज के रूप में देखें तथा ज्ञान निर्माण को मननशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करे।

शोध से संबंधित सुझावः–

(1) शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में चर्चा, परिचर्चा, शिक्षक संगोष्ठी, वाद–विवाद, सेमिनार, कार्यशाला, सांस्कृतिक, साहित्यिक व खेलकूद संबंधी गतिविधियों का अधिकाधिक आयोजन किया जाना आवश्यक है जिससे शिक्षकों के अधिकार व कर्तव्य के बीच सामंजस्य स्थापित होगा और वे सच्चे आनंद की अनुभूति के साथ अपने कार्य को कर पाएंगे।

(2) अध्यापन व अभ्यास कार्यक्रमों ममें सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिये।

(3) बी. एड. प्रशिक्षार्थियों में शिक्षकीय प्रभावशीलता को उच्च रखने हेतु प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता होनी चाहिये।

(4) शिक्षकों की जागरूकता हेतु प्रशिक्षण संस्थाओं एवं विद्यालयों का सतत् निरीक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ

बाबा, एम. एस. (1989):– शिक्षक–शिक्षा पारस्परिक क्रिया का विश्लेषणात्मक अनुप्रयोग।

दीक्षित (1986) शालेय शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि के संदर्भ में ए काम्पटेटिव स्टडी ऑफ जॉब सप्शिफेक्शन अमंग प्रायमरी एण्ड सेकण्डरी स्कूल टीचर्स लघु शोध प्रबंध।

कौशिक विनाक दत्त (2007)

सर्वशिक्षा अभियान के संदर्भ में शिक्षकों की अध्यापन, आधी क्षमता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

लघु शोध प्रबंध, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

मीरा. एस. (1988)

बुनियादी प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन, लघु शोध प्रबंध, गुरूघासीदास बिलासपुर द्वारा।

" प्रबंधन भिन्नता वाली शालाओं में विद्यार्थियों के सुरक्षात्मक युक्तियों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन। "

श्रीमती रीमा शर्मा **श्रीमती ज्योति दुबे**

सारांश

भारत के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है कोठारी कमीशन 1964-66 के प्रतिवेदन की उक्त पंक्तियों में निहित चिंतन आज मूर्तरूप लेता हुआ आज प्रत्यक्ष दिख रहा है विद्यालय में अध्ययनरत बच्चे भविष्य में भारत के स्वरूप व दिशा निर्धारण करेंगे। विद्यार्थी राष्ट्र की सम्पत्ति एवं उसके भावी कर्णधार हैं। उनके जीवन के विविध परघों का सर्वांगीण विकास करना तथा उन्हें एक शांत, सुरक्षित एवं आनन्ददायी वातावरण प्रदान करना विद्यालय प्रबंधन का उत्तरदायित्व होता है। विद्यालय एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक ढांचा होता है जिसे भावी नागरिक बनाने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है सुरक्षा और सुरक्षित वातावरण प्रभावी शिक्षण सीखने के लिए पूर्ववर्ती शर्तें हैं। इसलिए बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। अतः यह शाला प्रबंधन की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वह शैक्षिक सत्र प्रारंभ होते ही शाला में विद्यार्थियों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करे। प्रस्तुत शोध अध्ययन में विभिन्न प्रबंधन वाली 10 शालाओं का चयन किया गया तथा 200 विद्यार्थी 30 शिक्षक एवं 10 प्राचार्य को सम्मिलित करते हुए प्रत्येक शालाओं के सुरक्षात्मक युक्तियों एवं सुरक्षा व्यवस्था का अध्ययन किया गया। स्वनिर्मित उपकरण के प्रशासन से यह पाया गया है कि तीनों प्रबंधन वाली शालाओं के प्रबंधन स्तर, सुरक्षात्मक युक्तियों, सुरक्षा व्यवस्था के स्तर में अन्तर पाया गया।

प्रस्तावना

हाल के समय में स्कूली बच्चों से संबंधित प्रमुख घटनाओं को एक बड़ी त्रासदी के रूप में देखा जा रहा है। असुरक्षित स्कूल भवन के कारण बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे प्रभावित होते हैं इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण होता है कि बच्चों की सुरक्षा पर ध्यान दिया जाए। एक सुरक्षित स्कूल का उपयोग दोहरे उद्देश्य के लिए जैसे आपातकाल के दौरान निकासी केन्द्र या राहत शिविर के रूप में भी किया जा सकता है अधिकांश संख्या में स्कूल अति व्यस्ततम भीड़-भाड़ वाले शहरी क्षेत्र में संचालित किये जा रहे हैं जो आसानी से विभिन्न खतरों से प्रभावित हो सकते हैं स्कूलों को सुरक्षित रखने से बच्चों को एक उत्साही वातावरण में रहने की उम्मीद है जो सामाजिक और रचनात्मक शिक्षा को बढ़ावा देता है।

अतः यह शाला प्रबंधन की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वह शैक्षिक सत्र प्रारंभ होते ही शाला में विद्यार्थियों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करे।

प्रबंध वह साधन है जिसके द्वारा किसी संस्था या संगठन का सुचारू रूप से संचालन होता है प्रबंधन एक प्रक्रिया है जो संस्था या संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु मानवीय और भौतिक संसाधनों का समन्वित उपयोग करती है उन्हें नियंत्रित करती है उनका संगठन करती है और उस पर प्रभाव डालती है प्रबंध शब्द का उपयोग किसी मिल, फैक्ट्री, दुकान, कम्पनी अथवा अन्य प्रतिष्ठा के साथ-साथ शिक्षा तथा विद्यालय ये भी किया जा रहा है।

प्रबंधन मुख्य रूप से विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दूसरे के प्रयत्नों का नियोजित, समन्वित, प्रेरित तथा नियन्त्रित करने का कार्य है।

पूर्व शोध अध्ययन-

* प्यारी, एस. (1980)- किशोर बालिकाओं में सुरक्षा की भावना, पारिवारिक स्नेह, मूल्यों और

शैक्षिक उपलब्धि के बारे में।

निष्कर्ष– पाया कि सुरक्षा व असुरक्षा की भावना व पारिवारिक स्नेह के अंकों में सकारात्मक संबंध पाया गया।

* अहलुवालिया और अहलुवालिया (1990) ने दिल्ली के सरकारी, निजी व केन्द्रीय विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष– प्रत्येक विद्यालय का अपना संगठित वातावरण होता है किसी विद्यालय का नियंत्रित किसी का अनियंत्रित तथा किसी का बंदएवं खुला होता है।

* Suzane E. Perumean- Chaney (2013)- Student and perceived School Safety The Impact of School Security measures.

Finding:

(i) Utilizing the national longitudinal study of Adolescent health, this study found that meatal setectors and the number of visible security measures.

(ii) While those who experienced prior victmizations had larger class sizes and who problems were more likely to report not feeling safe at school.

9. Fozia Fatima (2016)- comparative analysis of safety and security measures in public and private schools at secondary level.

अध्ययन का उद्देश्य–

किसी भी विद्यालय में बच्चों की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी विद्यालयी प्रबंधक तथा प्रशासकों की होती है अतः किसी भी प्रबंधन के विद्यालय में निम्नलिखित सुरक्षात्मक युक्तियों का होना अत्यंत आवश्यक होता है।

1. विभिन्न शालाओं में प्रबंधन की भिन्नता का अध्ययन करना।
2. प्रबंधन भिन्नता वाली शालाओं में प्रबंधन की विशेषता का अध्ययन करना।
3. विभिन्न शालाओं में छात्रों के सुरक्षा के प्रति प्रबंधन की सजगता का अध्ययन करना।
4. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं में सुरक्षात्मक युक्तियों का अध्ययन करना।
5. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं में सुरक्षात्मक युक्तियों के प्रति शिक्षकों तथा प्राचार्य के सजगता एवं जागरूकता का अध्ययन करना।
6. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं में छात्रों के सुरक्षा के प्रति शिक्षकों एवं प्राचार्य तथा प्रबंधन के उत्तरदायित्वों का अध्ययन करना।
7. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं में छात्रों के सुरक्षा एवं सुरक्षात्मक युक्तियों के जानकारी का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न–

1. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के प्रबंधन स्तरों में क्या अंतर है।
2. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के प्रबंधन स्तरों में क्या अंतर है।
3. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के छात्र जानकारी में क्या अंतर है।
4. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की सुरक्षात्मक युक्तियों के प्रति जानकारी में क्या अंतर है।

*** शोध विधि–** इसमें शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही शोध प्रश्नों के समाधान के लिए शोधकर्ता द्वारा प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

*** जनसंख्या एवं न्यादर्श–** प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के अलग–अलग प्रबंधन वाले 10 विद्यालयों का चयन उद्देश्य पूर्ण यादृच्छिक विधि से किया गया तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र शिक्षक एवं प्राचार्य का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

शोध उपकरणः– प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित शोध उपकरण का उपयोग किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता के द्वारा 2 प्रकार की प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

शोध अध्ययन का निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में प्रबंधन भिन्नता वाली शालाओं में विद्यार्थियों के सुरक्षात्मक युक्तियों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन किया गया। जिसके हेतु प्रश्नावली के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन किया गया तद्उपरांत निम्न शोध निष्कर्ष प्राप्त हुए–

✲ **शोध प्रश्न–**

प्रश्न 1. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के प्रबंधन स्तरों में क्या अंतर है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि राज्य शासित विद्यालयों में सामान्य सुविधायें ही प्राप्त हैं यहां पर बच्चों की सुरक्षा के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं जैसे कि तड़ित चालक नहीं लगे हैं। राज्य शासित विद्यालयों की भवन स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। शौचालय तो हैं परन्तु साफ–सफाई एवं रखरखाव के अभाव में अधिकतर इस्तेमाल योग्य नहीं है आपातकाल में डॉक्टर बुलाने की सुविधा इन विद्यालयों नहीं है जबकि केन्द्र शासित एवं प्राइवेट विद्यालयों में ये सुविधा उपलब्ध है।

विवेचनाः सुरक्षात्मक युक्तियों के परिणाम हेतु तैयार किए गए स्वनिर्मित पत्रक के प्रश्नों के आधार पर यह पाया कि कुछ बिन्दुओं पर तीन ही प्रबंधन वाली शालाओं का स्तर समान है जैसे तीनों प्रबंधन वाली शालाओं में छात्र/छात्राओं की सुरक्षा व्यवस्था हेतु विद्यालय गेट पर चौकीदार है, छात्र/छात्राओं/ शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय है। शाला परिसर में बाहरी व्यक्ति को प्रवेश हेतु प्रबंधन से अनुमति लेनी पड़ती है तथा कोई भी व्यक्ति छात्रों से सीधे ना तो सम्पर्क कर सकता है और ना ही खाने की कोई वस्तु दे सकता है तीनों ही प्रकार के विद्यालय ये प्रबंधन द्वारा शिक्षक छात्र संबंध पर निगरानी रखी जाती है बिजली की व्यवस्था सुरक्षित है तथा शाला में कोई भी अतिरिक्त कार्यक्रम होने पर बच्चों के सुरक्षा व्यवस्था का स्तर और अच्छा है जैसे– विद्यालय में अग्निशामक यंत्र लगे हैं विद्यालय भवन जगह–जगह से टूटा हुआ नहीं है। भवन के छत से वर्षा के जल के निकासी की उचित व्यवस्था है। भवन में तड़ित चालक लगा हुआ है तथा किसी प्रकार के आपातकाल होने पर डॉ. बुलाने की व्यवस्था है परन्तु पब्लिक विद्यालय में CCTV कैमरा लगे हुए हैं तथा कार्यरत भी है। राज्य शासित एवं पब्लिक विद्यालय में सुरक्षा प्रभारी तय नहीं किए गए हैं जबकि कुछ केन्द्रीय विद्यालय में सुरक्षा प्रभारी तय हैं राज्य शासित विद्यालयों में अग्निशामक यंत्र तथा तड़ित चालक यंत्र CCTV कैमरा नहीं है।

प्रश्न 2. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के प्रबंधन का छात्रों की सुरक्षा सजगता में क्या अंतर है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष आता है कि राज्य शासित विद्यालयों में प्रबंधन केन्द्र शासित एवं प्राइवेट स्कूल की अपेक्षा छात्रों की सुरक्षा के प्रति कम सजग हैं। राज्य शासित विद्यालयों में आपदा प्रबंधन योजना नहीं बनाई गई है ना ही विद्यालय में सुरक्षा प्रभारी तय किए गए हैं तथा इन विद्यालयों में प्रयोगशाला में ज्वलनशील एवं विषैली सामग्री से सुरक्षा हेतु कोई विशेष व्यवस्था की गई है जबकि अन्य विद्यालयों में यह व्यवस्था की गई है।

विवेचनाः उपरोक्त शोध प्रश्न हेतु प्रदत्तों के विश्लेषण से निम्न परिणाम प्राप्त हुए तीनों ही प्रकार के प्रबंधन वाली शालाओं छात्रों की सुरक्षा हेतु विद्यालय गेट पर चौकीदार बाहरी व्यक्ति के शाला परिसर में प्रवेश हेतु अनुमति की आवश्यकता छात्रों से कोई भी व्यक्ति सीधे सम्पर्क नहीं कर सकता ना कोई खाने की वस्तु वितरित कर सकता है तथा छात्र और शिक्षकों के संबंध पर प्रबंधन द्वारा निगरानी रखी जाती है केन्द्र शासित विद्यालयों में इनके अतिरिक्त प्रयोगशाला में छात्रों के सुरक्षा हेतु अतिरिक्त सुरक्षा की व्यवस्था, प्रत्येक कक्षाओं में आसानी निकासी के लिए दो दरवाजे बनाए गए हैं तथा पब्लिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सुरक्षा हेतु आपदा प्रबंधन योजना बनाई जाती है।

प्रश्न 3. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के सुरक्षा व्यवस्था में क्या अंतर होगा।

निष्कर्ष–

प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर यह परिणाम सामने आता है कि प्राइवेट विद्यालयों में प्रबंधन द्वारा विद्यार्थियों की सुरक्षा हेतु काफी अच्छी व्यवस्था की जाती है। केन्द्र शासित विद्यालयों की सुरक्षा

व्यवस्था भी राज्य शासित विद्यालयों के सुरक्षा व्यवस्था में कुछ कमियां पायी गयी। जैसे– **CCTV** कैमरा, अग्निशामक यंत्र तथा तड़ित चालक नहीं लगे हैं। छतों पर वर्षा छतों पर वर्षा जल निकासी की उचित व्यवस्था ना होने के कारण कक्षा की दीवालों परसीपेज का आना तथा विद्यालय भवन एवं शौचालय की नियमित सफाई ना होना तता विद्यालय भवन का प्लास्टर जगह–जगह टूटे रहना।

विवेचना: राज्य शासित केन्द्र शासित तथा प्राइवेट स्कूलों में से प्राइवेट स्कूलों में छात्रों की सुरक्षा व्यवस्था का स्तर काफी अच्छा पाया गया। विद्यालयों में **CCTV** कैमरा लगा हुआ है। अग्निशामक यंत्र तड़ित चालक लगे हैं शौचालय एवं कक्षा–कक्ष की नियमित सफाई होती है। बिजली व्यवस्था अच्छी है विद्यालय भवन की स्थिति अच्छी है छात्रों के अनुसार उन्हें **First Aid** की सुविधा दी जाती है प्रबंधक द्वारा उनके समस्याओं पर तत्काल कार्यवाही की जाती है विद्यालय के चारों ओर सुरक्षित आहाता है।

प्रश्न 4. विभिन्न प्रबंधन वाली शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की सुरक्षात्मक युक्तियों के प्रति जानकारी में क्या अंतर है।

निष्कर्ष– प्रदत्तों के विश्लेषण के द्वारा यह परिणाम सामने आता है कि राज्य शासित एवं प्राइवेट स्कूलों के छात्रों की अपेक्षा केन्द्र शासित विद्यालय के छात्र अपने विद्यालय के सुरक्षात्मक युक्तियों के प्रति अधिक जानकारी रखते हैं तथा सुरक्षा के प्रति अधिक जागरूक हैं।

विवेचना: विभिन्न प्रबंधन वाले विद्यालय के छात्रों से सुरक्षात्मक युक्तियों की जानकारी प्राप्त करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली (**B**) का निर्माण किया गया था। जिससे प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने पर यह परिणाम सामने आया कि शोध प्रश्न 4 का परिणाम अन्य तीनों शोध प्रश्न की अपेक्षा भिन्न पाया गया। राज्य शासित एवं प्राइवेट विद्यालय की अपेक्षा केन्द्र शासित विद्यालयों में छात्रों के अनुसार सुरक्षा व्यवस्था अच्छी पाई गई। केन्द्र शासित विद्यालयों मे छात्रों के अनुसार पेयजल की व्यवस्था अच्छी है, विद्यालय भवन की स्थिति अच्छी है, छात्रों को सुरक्षा एवं सुरक्षात्मक युक्तियों की जानकारी दी जाती है। शौचालयों में पानी की व्यवस्था रहती है शौचालय एवं कक्षा कक्ष में सफाई रहती है तथा छात्रों के अनुसार पेय जल शुद्ध नहीं है शौचालय में सफाई नहीं रहती तथा छात्रों को विद्यालय वातावरण पूर्णतः सुरक्षित नहीं लगता एवं सुरक्षा के कुछ मामलों में प्रबंधन द्वारा लापरवाही बरती जाती है।

*** सुझाव–**

प्रशासन हेतु सुझाव–

1. उपरोक्त शोध में यह पाया गया कि राज्य शासित विद्यालयों की अपेक्षा केन्द्र शासित एवं प्राइवेट स्कूलों की सुरक्षा व्यवस्था के पास फण्ड की कमी होने के कारण उनकी सुरक्षा व्यवस्था कमजोर है वहीं पब्लिक एवं केन्द्र शासित विद्यालय में अधिक होने तथा छात्रों के अभिभावकों से एक मोटी फीस ली जाती है जिसके कारण पर्याप्त धन राशि होने से सुरक्षा व्यवस्था काफी अच्छी है अतः हमारे प्रशासन के द्वारा राज्य शासित विद्यालयों को भी सुरक्षात्मक युक्तियों की व्यवस्था हेतु अतिरिक्त धन राशि प्रत्येक विद्यालयों को प्रदान करना चाहिए ताकि राज्य शासित विद्यालयों में भी छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित हो।
2. प्रतिवर्ष प्रशासन के द्वारा सभी प्रकार के प्रबंधन वाले विद्यालय के सुरक्षात्मक युक्तियों का निरीक्षण करना चाहिए।
3. प्राचार्यों में नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाए।

विद्यालय प्रबंधन हेतु सुझाव–

1. प्रत्येक विद्यालय में आपदा प्रबंधन समिति का निर्माण करना।
2. विद्यालय में सुरक्षा प्रभारी नियुक्त किया जाए।
3. विद्यालय भवन की प्रतिवर्ष मरम्मत करायी जाए।
4. विद्यालय भवन में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था की जाए तथा पानी टंकी की नियमित रूप से

सफाई करायी जाए।

5. कक्षा कक्ष बड़े हवादार प्रकाशयुक्त हों तथा प्रत्येक कक्षा में निकासी हेतु 2 दरवाजे हों।
6. शौचालय तथा विद्यालय की नियमित रूप से सफाई हो तथा शौचालय में पानी की व्यवस्था हो।
7. प्रत्येक विद्यालय में तड़ित चालक लगा हो तथा अग्निशामक यंत्र **CCTV** कैमरा लगे हों।
8. प्रबंधन के द्वारा छात्र एवं शिक्षकों के संबंधों पर तथा छात्रों के क्रियाकलाप पर पूर्ण निगरानी हो।
9. छात्र/ छात्राओं के शिकायत पर तत्काल कार्यवाही किया जाए।
10. विद्यालय में उपलब्ध सुरक्षात्मक युक्तियों का निरीक्षण किया जाए तथा उन्हें कार्यरत स्थिति में रखा जाए।
11. शिक्षकों एवं छात्रों को स्वयं के सुरक्षा संबंधी तथा सुरक्षात्मक युक्तियों का प्रशिक्षण दिया जाए।
12. बिजली मैकेनिक द्वारा बिजली के तारों आदि की जांच कराई जाए।
13. समुदाय को विद्यालय से जोड़ने का प्रयास करना।
14. विद्यालय में पायी जाने वाली कमियों को पंचायत के माध्यम से दूर करने का प्रयास करना।

छात्रों हेतु सुझाव–

1. छात्र को अपनी सुरक्षा के प्रति स्वयं जागरूक एवं जिम्मेदार होना चाहिए तथा दूसरे सहपाठियों को भी सचेत रहना चाहिए।
2. विद्यालय में उपलब्ध सुरक्षात्मक युक्तियों की जानकारी रखना चाहिए एवं कार्य ना करने वाले युक्तियों की जानकारी तत्काल प्रबंधन को देना चाहिए।
3. विद्यालय के किसी भी दुर्घटनाजन्य क्षेत्र की जानकारी प्रबंधन को देना चाहिए।
4. आपदा की परिस्थिति में घबराना नहीं चाहिए तथा धैर्य के साथ परिस्थितियों का उपयोग करना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव–

1. राज्य शासित विद्यालयों में सुरक्षात्मक युक्तियों के कमियों के कारणों का अध्ययन।
2. विभिन्न विद्यालयों के सुरक्षात्मक युक्तियों के कार्यक्षमता का अध्ययन।
3. विद्यालय के सुरक्षित वातावरण का छात्रों के उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
4. विद्यालय के सुरक्षित वातावरण का छात्रों के समायोजन क्षमता पर प्रभाव।

Reference :

* अग्रवाल, जे. सी. शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा– 282002, पेज नं. 395, 397
* कपिल, एच. के (2015) अनुसंधान विधियां भार्गव, बुक हाउस 4/230 कचहरी घाट, आगरा।
* कपिल, एच. के. (2014–15) सांख्यिकी के मूल तत्व, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2
* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूप रेखा 2005, NCERT, New DElhi.
* Sharma R. A. (2005)" Advanced Statistics in education and Psychology" Arya Book Dipo, karol Bag New Delhi
* तोमर, गजेन्द्र सिंह (2008) विद्यालय संगठन एवं प्रबंधन आर. लाल बुक डिपो मेरठ।
* Coopea, D. (2001), Traeting Safety or a Value. Professional Safety, February, 17-21.
* Crow J.W. (1995) Safety Value and Safe Practices among collage students, Journal of Safety.

A Study of Management of Science Exhibition and Attitude of Stakeholders Towards Science Exhibition

Nalini Pandey
Professor

Dr. (Mrs.) Riteshwari Chaturvedi
M.Ed. Trainee

ABSTACT

Scirnce subject should be made fascinating to the students. It should be made practial orieated learning Importance of this is study is so much because govt, Organizes exhibition every year with this strong belief that expermentation. Sample this consists DEO's., 7 B.E.Os, 80 principals, 80 Teachers and 120 Students of Chhattisgarh state. Researcher used 'self made' tool for this particular study. The major finding of this study were financial resoures are not sufficient for Block and School level science exhibition. Motivation given by managment not sufficient for Block and School level science exhihibition . Time management is alsonot sufficient for Block and School level science exhibition. Motivvation given by not by management is also not sufficient for Block and School levels. Exibition. Motivation given by management not appropriate for conducting science exhibition at various levels. Also no significiant deference in the attitude of Principals, Science teachers and students with reference to Gender and Locality.

Introduction:-

A School is the place where children are molded for furture life. Children are the promises of tomorrow. So they should be made aware of the importance of science. Science exhibitions in schools play pivotal role in this regard Science exhibitions creat a scientific spirit among the students, increasing their thinking and reasoning power. These can make the children creative and inquistive. A child come to know of the basic principles of the functioning of an instrument. All these will increase his instrument. All these will increase his interest in science. Science exhibition provides opportunties to stdents to witness the achievents of their colleagues and there by stimuate them to plan their own projects, to give impetus and encouragement to the students to turn out their ideas and apply their classroom learning into creative channels and to bring the parents

Science:-

Science is known as a classified and verifiabk knowledge of facts, but science is not always about the collection of facts or development of new concepts or ideas. It is about passion for the discovery that dervies on to explore the environment and the nature on the whole.

Science Exbition:-

A science exhibition is a unique way for students to pose questions for which they must seek out answers and to satisfy their own Comprehension about the world them. A science exhibition is an experiment, a demonstration, reserach effort, a collection of scinentific items or disply of scientific aapparatus presented for interest and provids a way for the students to Share the result of the those investigations.NCF 2005 also suggested for any qualitative change from the present situtation, science education in India must undergo a paradigm shift. Rote learning should be discouraged. Inquirty skill should be suppored and strengthnened by language. design and quantitative slills. Schools should place much greater emphasis on cocurricular and extra curricular and extra curricular activities aimed t simulating inverstigative ability, inventiveness and creativity, even if this are not part of the external exam dydtrm. There

should be a massive expansion of such activities along the lines of the **children science congress,** being held successful at present. A large scale science and technology fair at the national level (with feeder fairs at cluster/ district/ state levels) may be organized to encourage schools and teachers to participate should gradually spread to every corner of India and even across South Asia, Unleashing a wave of creativity and acintific. temper among young students and their teachers.

Types of science exhibition:-

In our state mainly 3 types of science exhibition organized year.

(1) Western India science exhibition-

(2) INSPIRE AWARD-

(3) National Bal Vigyan Congress:-

For session 2018-19, Theme of western India science exhibition 'scientific solution for challenges in life.'

This year in state level science exhibition one seminar was also hel on "water management Possibities and ways ahead."

Managment of Scien Exhibition:-

Science or exhibition at any level can not be organning or managed without proper planning Every aspect of the exhibition needs a pure management skill and guidance. Some suggested points are here to see how the management of any science exhibition requires.

Attitude:- In terms research methodology, the challenge for researchers is attitude. Since we can not see into brain various models and measures may include the use of physiological cues like facial expression, vocal changes, nd other body rate measures.

Need and Importance of Stury:-

Science is interesting subject. The science subject should be made fascinating to the students. This subject can not merely be taught by chalk and talk. It should be made practical oriented learning. As a researcher, how far this practice is going on in schools? What is the attitude of teachers, principals and students towards science exhibition? Being a science teacher thought of the conduct plays an important role in developing scientific spirit among learners. it had been proved. Based on this, science exhibition are being encouraged by state and central government. But nobody has made an attempt to know the attitude of principals, teachers and learners towords science exhibition. So the researcher, being a science teacher thought of conduct present study.

Objectives of the Study:-

* To study the issues of Management of science exhibition at various level.
* To study the attitude of principals towards science exhibition.
* To Study the attitude of teachers towards science exhibition.
* To Study the attude of Students towrds science exhibition.

Research Questition and Hypothesis :-

Research Questions:-

1. Do the Financial resources sufficient for conducting science exhibition at various levels?
2. Does time management appropriate for conducting science exhibition
3. Does appropriate motivation given by the managment science exhibition at various levels?

Hypothesis:-

HO1 There will be no signicant difference in the attitude of school Principals conducting science exhibition with reference to Gender and Locality.

HO2 There will be no significant difference in the attitude of school principals of science exhibition with reference to Gender and Locality

HO3 There will be no significant difference in the attitude of school principals of science teachers regarding science exhibition with reference to Gender and Locality.

Methodology:-

The major aim of the present study is to analyze the management of science exhibition and evaluate the attitude of stakeholder towards science exhibition. In order to carry out the present investigation, a systematic methodology is necessary to carry out of reasearch.

Method:-

Researcher used survey method for this particular study.

Sample:-

Researcher used Purposive sampling in this study. 4-D. E.Os. From Bilaspur, Mungeli, Kanker, Dhamtri, District. 7- B.E.Os from Takhatpur, Bilha, Dhamtri, Patan, Katghora, harma Blocks. 80 Teachers and 120- Students from High or Higher Secondary School oif C. G. are taken as sample

Research Tools:-

Researcher used self made tool for the particular study.

Data Analysis:-

Reasearch Questions

1. Do the financial resources suffcient for conducting science exhibition at various levels?

Every dchool coollects yearly science fees t secondary leve; 10 rs. Which amounts 4000.00 about for a school with 400 students. We take in an average. It is used for conducting science activities in the school. So, Schools have sufficient funds and Principals are able to mobiliz e the financial resources.

2. Does time management appropriate for conducting science exhibition at various levels?

In Chhattisgarh, secondary school educational academic session starts from 16th June to 30th April. Students who join at secondary level as freshers are unable to understand the term and the languages of science projects and the serious with their board examination curriculum Generally, Science exhibition is announced in the first week of the July for the school level science exhibition. The block level science exhibition is most probaly organized in the last week of July. So, we can notice that very less time for conducting science exhibition at school level. Hence we find that science models are being forwarded to the block level. No innovative ideas can be developed science at this stage. Hence conducting science exhibition at school and block level are being done for the namesake.

3. Does appropriate motivation given by the mangement for conducting science exhibition at various levels?

Moitivation has been recognized as an important construct in the field of science education. Doing science projects and participates in these activities by choice and interests. Most of the time parents and teacher demotivate the students to participate in this exhibition by saying that it is wste of time and loss of academic scores in the term and examination. If sufficient motivation. If sufficient motivation and encouragment is provided to the students more number of participation at the school and block level science exhibition may be possible.

Hypothesls

Ho1. There willl be no significant difference in the attiude of school principals regarding science exhibition with reference to Gender and Locality.

Result :-

Table

Significance ef attitude of Principal with reference to Gender and I Locality.

S.N.	Gender/		Statistical Value				
		Locality	meen	S.D.	Df	t-value	Level of significance
1.	Gender	Male- 40 Female- 40	40.725 39.875	4.15 3.15	78	1.66	NS
2.	Locality	Urban- 40 Rural- 40	36 34.375	3.73 1.68	78	1.66	NS

There is no significant difference in the attitude of school Principals regarding science exhibitions with reference Gender and Locality.

HO2 There will be no significant difference in the attitude of science teachers regarding science exhibition with reference to Gender Locality

Table

Significance of attitude of science teachers with reference to Gender and Locality

S.N.	Gender/ Locality		Statistical value				Level of dignificance
			mean	S.D.	DF	t-value	
1.	Gender	Male-40	34.63	3.03	78	1.66	NS
		Femal-40	35.75	2.88			
2.	Locality	Urban-40	36	3.73	78	1.66	NS
		Rural- 40	34.37	1.68			

Result :-

There is no significant difference in the attitude of science teachers regarding science exhibitions with reference to Gender and Locality.

HO3 There will be no significant difference in the attitude of students regarding science exhibition with reference to Gender and Locality.

Table

Significance of Attitude of Students with Reference to Gender and Locality

S.N.	Gender/ Locality		Statistical value				Level of dignificance
			mean	S.D.	DF	t-value	
1.	Gender	Boys-60	41.11	3.98	118	1.66	NS
		Girls-60	39.93	3.91			
2.	Locality	Urban-60	40.88	3.68	118	1.66	NS
		Rural- 60	40.16	4.25			

Result :-

There is no significant difference in the attitude of science teachers regarding science exhibitions with reference to Gender and Locality.

Findings:-

Financial resourcs sufficient for State Level and Dirstrct Level science exhibition but it is not sufficent for Block Level science exhibition and also for Principals to participate in various levels of science exhibition. Time management sufficient for State and District Level science exhibition but it is not sufficient for Block and School Level science exhibition. motivation given by the management not appropriate for conducting science exhibition at various level.

There is no sighificant difference in the attitude of school Principals regarding science exhibition with reference to Gender and Locality. There is no significant difference in the attitude of science teachers regarding science exhibition with reference to Gender and Locality. There is no siginificant difference in the attitude of students regarding science exhibition with reference to Gender and Locality.

Educational impication of the study:-

Our earth as a a whole is facing lots of

challenges these days that can be only dealt with the interference of a scientific approach. In the fast moving and technical world, students are no more interested in listening to the borning lectures and cramming facts. It is the reponsibility of the teachers these days to maintain this enthusiasm and give a positive direction to the curiosity of the students. An exhibition is a platform for students to work together in groups. This gives the opportunities to the students to develop social and moral skills. This king of the science exhibitions boosts the confidence of the students and develops their interest and curiosity even further. Science exhibition explore the creative talent of the students and force them to think out of the box science exhibitions devlops a scientific spirit and curiosity in a student which in turn to forces them to think and creatively find solutions to the challenges. By taking part in such science exhibition at school a student develops **a scientific attitude towards** his problems and challenges of life. The students develops **an inquisittive nature and learns to ask questions.** Students avail the opportunity of practical learning and experencing everything first hand during these exhibitions. They apply their ideas and learning in their unique ways and **helps society finds solutions to their need and challenges.** The government and school authorities should intiate and motivate the sciencce exhibition in schools at all levels from primary to middle and.

Reference :-

* Khan, J. A. (2007). Research meodology. New Delhi. APH Publishing Corporation.
* Kulsethra S.P., (2007), Teaching of Biological Science Education, Meeru: Vinay Rakheja publishing.
* Dani, D. N. (1984) a study of relation between scientific attitude and cognitive styles of higher secondary students, Fifth survey of Educational Reasearch abstract, 2.
* Malviya, Dharma shila (1991) A critical study of scientific interest among the hogher secondary students. Fifth survey of Educational Research, 2.
* Annie Chien, (2007). Framework for making Science Research Accessible for All, Journal of horace Winter 2007, Vol.23. No: pp.b, 1-5
* Bajju. K. nath Dr., (2007). A Critical of State level Exhibition Journal of Science, 1 (3). Pp, 1-6.
* Jung-Ming SU & Huan- Yul, in (2011). OPASS: An Online Portfolio Assessment & Diagnosis Scheme to Support Web-based Scientific Inquirty Experiment. TOJET : The Turkish oneline Journal of educational Technology, April 2011, Vol.10 Issue2.
* NCF- 2005
* www.ncte.ac.in
* www.shodhganga.Inflibnet.ac.in
* htpp/ structure.atttude.com/attitude.

Dr. (Mrs.) Riteshwari Chaturvedi
M.Ed. Trainee
IASE Bilaspur
rishank chaturvedi@gmail.com

ENHANCING HINDI EASSY WRITING SKILL USING MAPPING CONCEPT AMONG THE STUDENTS AT HIGH SCHOOL LEVEL

YOGESH KUMAR PANDEY
LECTURER
M.Ed. Scholar, IASE,
Bilaspur, 2017-19

ABSTACT

If mankind, in the form of Homo sapiens, can be traced back to 10000,000 years ago, then the human activity of writing is a fairly recent development in the evolution of men and women. Some of the earliest writing found so far dates from about 550 years ago. It was found in 1999 at a place called Harappa in the region where the great harappan or Indus civilization once flourished. There is incomplete agreement about the meaning of the symbols that were discovered. However, when the discovery was made, the archaeologist Richard meadow Stated that the inscovery was made, the archaeologist Richard meadow Stated that the inspiration had similarities to what became the Indus script- **the first recognized written ianguage.**

Writing is is considered as a best productive skill after speaking skill. Producing something in a language is always a confirmation of good competency level. Our government school students need to learn all languages to stand equally with the outer urban world of public schools. Teaching Writing is a key factor where teachers somehow fail. Students mug up sentences and vomit on the answer sheets but when it comes to the writing of own thoughts they either hesitate or skip. lacking Vocabulary, Grammar, fluency etc. are some stated reasons to defend the difficulties of students in writing. But above these all, the development of skills is a primary responsibility of the teacher.

Introduction:-

Eassy writing skill is considered as toughest writing skill in Indian context. And we know that the essay writting is very important skill in Indian academic scenario as it is a proof of the language learning Everyone takes it as the longest and hardworking task. But Essay writing provides an avenue for your thoughts. It is also possible foran essay writing task to harness your critical thinking abilites. In this experimental study it has been tried to findout that how far a strategic planning process helps the learner to develop the productive skill. With this end in view this research project is taken as an attempt to find out how teaching through concept mapping will help the teacher to facilitate the learner to enhance their essay writing skill.

The need of the study is to find a solution to teach, guide and facilitate students in writing essays. Some questions arose in researcher's mind related to the Concept mapping and Writing Essays.

1. Should students' be taught how to write an essay?
2. If it necessary to taught 'How to write an essay', then what should be the method?
3. Can the cencept mapping technique be useful to enhance class 10 students' essay writing skill?
4. Can concept mapping technique be useful to increase the quality of Essays?

Objectives of the Study

* To study the level of Vocabulary used by the high school children on Hindi Essay Writing.
* To study the level of Grammar used by the high school children on Essay Writing.
* To study the level of 'Sequencing of Various Ideas' among the high school .

* To study the level of Hindi Eassy writing Skill among the students prior to the Concept Mapping Activity.
* To study the interconnection between Concept mapping and Essay Writing.
* To study the competency level of high school children on Essay Writing.
* To know how the extra activity tools influence language skills.
* To state the importance of strategic planning before writing an essay.

Hypotheses

* There will be no significant effect of Concept Mapping in Enhancing **Vocabulary** of Students at High School Level.
* There will be no significant difference in the score o **Grammar Used** in the post-test results as compard to pre-test.
* There will be no significant difference in the sequencing of the Various Ideas in the post-test results as compare to pre-test.
* There will be post-test results as compare to pre-test after using Concept Mapping tool.

Methodology

In this research experimental method has been taken to collect the data. Experiment was administered to the single experiment group of children.

Population & Sample

All the students of class X are the Popultion for this study. In this study, group of students has been selected randomly. This Sample refers to 30 students of class X of Govt. Higher Secondary School Tifra, Block-Bolha, District-Bilaspur.

Variables

* Dependent variable	Essay Writing Skill
* Independent Variable	Students of Class X

Research Tool

The researcher wanted to know that how far the teaching language through concept mapping can develop the learner's writing skill. Inorder to verify the effect cincept mapping on the essay Writing Skill of learners', self-made tool is used to collect data for the experimental study.

Analysis and Testing of Hyporthesis

H_{01}- Theree will be no significant effect of Concept Mapping in Enhancing Vocabulary of Students of High School Level.

Table - 1

Mean, SD and T value of Vocabulary Used

No. of students	Use of Vocabulary	Mean	SD	df Value	f	Result
30	Pre Test	1.5	0.62			Difference is
	Post Test	2.43	0.77	29	6.17	Significant at 0.01

Level of condfidence	t value (Table)
0.01	2.756

The Mean Scores of Pre and post tests are 1.5 and 2.43 respectively. The calculated T-Value is 6.17 which is higher than the table value (2.756) at 0.01 lavel of confidence. hence, the hypothesis "There will be no significant effect of Concept mapping in Enhancing **Vocabulary** of

Students at High School level is being rejected because before the treatment the students were not up to the level in the use of vocabulary while writing an essay but after the treatment it is enhanced.

H_{02}- There will be no significant difference in the Grammar Used in the post-test results as compare to pre test.

Table - 2

Mean, SD and T value of Grammar Used

No. of	Grammar used	Mean	SD	df Value	t	Result
30	Pre Test	1.4	0.56	29	6.05	Difference is Significant at 0.01
	Post Test	2.5	0.93			

Level of condfidence	T value (Table)
0.01	2.756

The Mean Scores of Pre and Post tests are 1.4 and 2.5 respectively. The calculated t-Value is 6.05 which is higher than significant at 0.01 level of confidence. hence, the hypothesis "There will be no significant difference in the **Grammer used** in the post-test results as compared to pre-test is being rejected because before the treatment the students were not up to the level in the correct use of Grammar while writing an essay but after the treatment it is enhanced significantly.

***H_{03}*-** There will be no significant difference in the **sequening of the Various Ideas** post-test results as compare to pre-test.

Table - 3

Mean, SD and T value of Sequencing Various Ideas Grammar used

No. of		Mean	SD	df Value	t	Result
30	Pre Test	1.5	0.50	29	5.4	Difference is Significant at 0.01
	Post Test	2.4	0.81			

Level of condfidence	T value (Table)
0.01	2.756

The Mean Scores of Pre and Post tests are 1.5 and 2.4 respectively. The calculated T-Value is 5.4 which is higher than significant at 0.01 level of confidence-hence, the hypothesis "there will be no significant difference in the sequencing of the Various Ideas in the post-test results as

compare to pre-test is being rejected because before the treatment the students were not up to the level in the sequencing the various ideas while writing an essay but after the treatment it is enhanced.

H_{04}- There will be no signficant difference noticed in the Hindi Essay Writing Skill in the Post-test results as compare to pre-test after using Concept Mapping tool.

Table - 4

Mean, SD and T value of Hindi Eassy Writing Skill

No. of		Mean	SD	df Value	t	Result
30	Pre Test	8.33	1.80	29	7.9	Difference is Significant at 0.01
	Post Test	12.46	2.44			

Level of condfidence	T value (Table)
0.01	2.756

The mean Scores of Pre and Post tests are 8.33 and 12. 46 respectively. The calculated t-Value is 7.9 which is higher than significant at 0.01 level of confidence. Hence, the hypothesis "There will be no significant difference noticed in the hindi Essay Writing Skill in the post-test results as compare to pre-test after using Concept Mapping tool" is being rejected because before the treatment the essays were not up to the level but after the reatment it is enhanced remarkebly.

Results

The level of enhancement in the use of Vocabulary in an Essay is significantly higher in the students of class X.

1. The level of achievement in the use of Grammar in the Essay which has been written in the post test is significantly higher in the students of class X.

2. The level of enhancement in the sequencing of concepts in the Essay is remarkably higher in the sample experimental group of students of class X.

3. The level of achievement seems better in Hindi Essay writing skill is significantly higher in the students of class X.

Interpretation

The interpretation of collected and analyzed data has thrown considerable light on the high level of achievement in Hindi essay writing skill of students studying in High Schools through the use of Concept Mapping. The result has given a remarkable encouragement to use this concept mapping strategy before writing an essay in Hindi.

1. Using concept mapping stategy supported the students' writing, thus the result of their writing matched most of the academic standards of essay writing.
2. The graphical representation of their thinking through concept mapping helped the students to reflect on their writing.
3. Using concept map prior to writing helped the students to generate ideas, focus on what is going to be written, plan their writing and organize their knowledge

or thoughts.

4. It also helped them to concentrate their attention to choose appropriate ideas for their writing, which in turn improved the quality of their work ideas for their writing, which in turn improved the quality of their work and prevented them from going off the topic.
5. It assisted their memory and lessened the overload during composition.

Suggestions

1. More attention should be given by language writing teachers to writing process
2. The use of different learning strategies in writing by students should be encouraged.
3. Special emphasis should be given to the pre writing stage due to its role in improving their composition process.
4. Instructors should be given training sessions for using concept mapping strategy in their writing class.

References:

1. Briscoe&LaMaster, 1991 : Establishing connections between various biology concepts through concept mapping technique.
2. Lee and Cho (2010): How concept maps can be useful in writingplanning.
3. Mohammad Reza and Giti, 2009: Effect of the instruction of concept mapping on students' writing achievement.
4. Novak & Gowin, (1984) : The educational application of automated concept maps as embedded in writing lessons.
5. Shimerda (2007): The strength of concept maps as a teaching and learning tool to enhance the learning process iscorroborated.

किशोरों के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) निशी भाम्बरी
प्राचार्य
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ.ग.)

श्रीमती सुनीता जायसवाल
एम.एड. प्रशिक्षार्थी
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

किशोरावस्था बालक के विकास का वह मंच है जिसमें बालक समाज में परिपक्वता की ओर बढ़ता है समाज के लोगों के साथ समायोजन करता है तथा उसे इसमें कई समस्यायें भी आती हैं और उससे हम यह उम्मीद करते हैं कि वह सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यवहार, कुशल, बौद्धिक कौशल और समाज में एक नागरिक की क्षमताओं को धारण करने के अनुरूप विकसित हो चुक है।

किशोरावस्था मानव जीवन में नींव की भूमिका निभाता है यह काल बालक के व्यक्तित्व के निर्माण की अवस्था है इसमं बालक का सर्वांगीण विकास क्रमिक रूप से सतत् होने लगता है ऐसी स्थिति में किशोरों का व्यक्तित्व का उसके सामाजिक जीवन पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है जिस बालक के सामाजिक परिपक्वता का धनात्मक प्रभाव पड़ता है वह बालक समाज में अच्छे से अपने वातावरण के अनुरूप अनुकूलित हो जाते हैं तथा कक्षा एवं समाज में उच्च स्थान पाते हैं तथा व्यक्तित्व के सभी पक्षों का सर्वोत्तम विकास होता है तथा व्यक्तित्व का विकास धनात्मक होता है।

प्रस्तावना–

मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है यह अवस्था, युवावस्था और परिपक्वता के मध्य रहती है यह सतत प्रक्रिया है यह बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य तक चलती है।

किशोरावस्था की विशेषताओं में बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है यह अवस्था में आत्म सम्मान की भावना में स्वतः वृद्धि होना, निर्णय में अस्थिरता, अपराधिक प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय होना कल्पना की बाहुल्यता स्वाभाविकता का विकास आदि प्रमुख है।

व्यक्तित्व का विकास किशोरावस्था के काल में होता है। इसी सन्दर्भ में जरशील्ड (1978) के अनुसार कि किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जिसमें बाल्यावस्था से चलकर विकास के माध्यम से परिपक्वता को प्राप्त करता है।

हरलॉक (2001) ने किशोरावस्था की परिभाषा इस प्रकार दी हैः– किशोरावस्था किसी भी व्यक्ति के जीवन में मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक विकास का तरीका या समय का विस्तार दोनों हो सकता। यह वृद्धि एवं परिवर्तन की अवस्था है जब व्यक्ति सभी पहलुओं में जब– शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सार्वांगिक– जीवन में परिवर्तित होता है उन्होंने कहा कि यह वह अवस्था है जब नये–नये अनुभव, नये नये उत्तरदायित्व नये–नये सम्बन्ध व्यक्ति वयस्कों हम उम्र के साथ बनाता है, किशोरावस्था में होने वाले सभी परिवर्तन परिपक्वता को प्राप्त करने के लिये अग्रसरित होते हैं।

✲ अध्ययन के उद्देश्य–

1. किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन करना।

✲ अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

H_{01}. किशोर छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में

सार्थक अंतर नहीं होगा

H_{02}. किशोर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

H_{03}. उच्च व निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले किशोरों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

H_{04}. किशोरों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

*** अनुसंधान विधिः–**

प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

*** जनसंख्याः–**

जनसंख्या से तात्पर्य उन समस्त इकाईयों से है जो अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं जिसे सामूहिक रूप से समष्टि कहते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या से तात्पर्य बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखण्ड के अंतर्गत समस्त शासकीय हाईस्कूल के छात्र व छात्राओं से है।

***** न्यादर्शः– अनुसंधान में किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जिस छोटे हिस्से को लिया जाता है उसे न्यादर्श कहते हैं।

प्रयुक्त शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत् 150 छात्र व छात्राओं का चयन रेण्डम सेम्पलिंग द्वारा न्यादर्श के रूप में किया गया है।

*** चरांकः–**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इस विषय से संबंधित चर हैं–

स्वतंत्र चर– सामाजिक परिपक्वता

परतंत्र चर– व्यक्तित्व

साहचर्य चर– किशोर बालक बालिका

*** शोध उपकरणः–**

उपर्युक्त शोध के लिए दो शोध उपकरण प्रयुक्त किये गये जो कि निम्न हैं–

1– किशोर व्यक्तित्व परीक्षण जो कि डॉ. श्रीमती आशा पाण्डे द्वारा निर्मित है जिसमें 80 कथन है।

2– सामाजिक परिपक्वता मापनी जो कि नलिनी राव, आगरा द्वारा निर्मित है जिसमें 90 कथन हैं। इस मापनी के तीन आयाम हैं

1. वैयक्तिक पर्याप्तता
2. अंतर वैयक्तिक पर्याप्तता
3. सामाजिक पर्याप्तता

*** प्रयुक्त सांख्यिकीः–**

प्रयुक्त शोध के परिकल्पना के परीक्षण हेतु केन्द्रीय की माप अंतर्गत अध्ययन प्रमाणिक विचलन व टी–टेस्ट का मान ज्ञात किया गया एवं आवश्यकतानुसार आरेख का उपयोग किया गया।

1. वर्णनात्मक सांख्यिकी
   - * मध्यमान
   - * प्रामाणिक विचलन
2. विश्लेषणात्मक सांख्यिकी
   - * टी टेस्ट

* प्रदत्तों की सांख्यिकीय विश्लेषण

किशोर छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं होगा

क्रं.	किशोर व्यक्तित्व परीक्षण	N	M	S.D	D.F	t - परीक्षण	सार्थकता परिणाम	परिणाम
1	छात्र	75	82.48	7.90	148	0.7096	सार्थक अंतर नहीं	Ho_1 स्वीकृत
2	छात्राऐ	75	81.50	8.98				

*** व्याख्याः–**

उपरोक्त सारिणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि किशोर छात्र के व्यक्तित्व परीक्षण व किशोर छात्राओं के व्यक्तित्व परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 82.48 व 81.50 है तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 7.90 व 8.98 है अतः किशोर छात्र के प्राप्तांकों के मध्यमान 82.48 किशोर छात्राओं के प्राप्तांक 81.50 से अधिक है मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जांच t परीक्षण से की गई, जिससे किशोर व्यक्तित्व परीक्षण के सन्दर्भ में

ज का मान 0.7096 जो स्वतंत्रता के अंश 148 पर 0.01 विश्वास स्तर के सारणीय मान 2.61 से कम है अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त तालिका से परिणाम के आधार पर किशोर छात्राओं के व्यक्तित्व में सार्थक अंतरनहीं है अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

H_{01}:– किशोर छात्र व छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

क्र	सामाजिक परिपक्वता मापनी	N	M	S.D	D.F	t- परीक्षण	सार्थकता	परिणाम
1	छात्र	75	226.81	28.66			सार्थक	Ho_2
2	छात्रायें	75	231.13	20.01	148	1.07	अंतर नहीं है	स्वीकृत

व्याख्याः–

उपरोक्त सारिणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि किशोर छात्र के सामाजिक परिपक्वता व किशोर छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता व परिक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 226.81 व 231.13 है एवं प्रामाणिक विचलन क्रमशः 28.66 व 20.01 है। अतः किशोर छात्र के प्राप्तांकों का मध्यमान 226.13 है एवं प्रामाणिक विचलन क्रमशः 28.66 व 20.01 है। अतः किशोर छात्र के प्राप्तांकों का मध्यमान 226.81 व 231.13 है एवं प्रामाणिक विचलन क्रमशः 28.66 व 20.01 है। अतः किशोर छात्र के प्राप्तांकों का मध्यमान 226.81 छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान 231.13 से कम है मध्यमानों में अंतर की सार्थकता की जांच t परीक्षण से की गई जिससे किशोर छात्र व छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता के सन्दर्भ में प्राप्त t का मान 1.07 है जो कि स्वतन्त्रता के अंश (H_{o4}) 148 पर 0. 01 विश्व स्तर पर 2.61 से कम है अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष– उपरोक्त तालिका के परिणाम के अनुसार किशोर छात्र व छात्राओं के सामाजिक परिपक्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा अतः परिकल्पना H_{o2} स्वीकृत की जाती है।

H_{o3} उच्च व निम्न सामाजिक परिपक्रता वाले किशोरों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं होगा।

क्रं.	सामाजिक परिपक्वता मान	न्यादर्श की संख्या N	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन
1	किशोर छात्र व छात्राये	150	230.42	18.29

उच्च सामाजिक परिपक्वता

230.42 + 18.29

= 248.71

8 छात्र

योग = 21

13 छात्र

निम्न सामाजिक परिपक्वता

230.42 − 18.29

= 212.13

15 छात्र

योग = 25

10 छात्र

उच्च सामाजिक परिपक्वता के प्राप्तांक के आधार पर किशोरों के संगत व्यक्तित्व के प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन निकाला गया।

विवरण	N	M	S.D	D.F	t परीक्षण	सार्थकता	परिणाम
उच्च	21	79.33	6.22			सार्थक अतंर पाया गया	परिकल्पना अस्वीकृत
निम्न	25	86.36	8.54	44	3.1356		

व्याख्याः–

उपरोक्त सारिणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च व निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले किशोरों के व्यक्तित्व परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों का मद्यमान क्रमशः 79.33 व 86.36 है व प्रामाणिक विचलन का मान 6.22 व 8.54 क्रमशः है उच्च परिपक्वता वाले किशोरों के व्यक्तित्व परीक्षण के मध्यमान 86.36 से कम है मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जांच t परीक्षण से की गई, जिसमें t परीक्षण का मान 3.13 है जो स्वतंत्रता में अंश df 44 पर 0.01 विश्वास स्तर पर सारणीय मान 2.69 से अधिक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त तालिका के परिणाम के अनुसार उच्च व निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले किशोरों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

Ho_4 किशोर छात्र व छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता व व्यक्तित्व में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होगा।

क्रं.	चर	न्यादर्श की संख्या	DF	r value	सार्थकता	स्तर सह सम्बंध
1	सामाजिक परिपक्वता	150	298	0.046	सार्थक सह सम्बन्ध	साधारण कोटि का धनात्मक सह सम्बंध
2	व्यक्तित्व	150				

व्याख्याः–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि किशोर छात्र व छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता व व्यक्तित्व के बीच सह सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सह सम्बन्ध गुणांक निकाला गया स्वतंत्रता की कोटि 298 पर गणना से प्राप्त सह सम्बन्ध गुणांक तथा तालिका से प्राप्त सह सम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः (r) = 0.046 व (r) 0.148 है गणना से प्राप्त सह सम्बन्ध का मान सारणीगत मान से कम है अतः सामाजिक परिपक्वता एवं व्यक्तित्व के मध्य निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

* शोध निष्कर्ष

* किशोर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व के गुणों में समानताएँ पायी गयी हैं।

* किशोर छात्र व छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता भी समान पायी गयी है।

* उच्च सामाजिक परिपक्वता वाले किशोरों का व्यक्तित्व, निम्न सामाजिक परिपक्वता वाले किशोरों से बेहतर व उत्तम पायी गयी है।

* किशोर छात्र व किशोर छात्राओं के व्यक्तित्व व सामजिक परिपक्वता मध्य निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

सुझाव–

1. विद्यालय में पुस्तकीय अध्यापन के अतिरिक्त व्यक्तिगत मूल्य इसका परियोजन एवं सामाजिक दायित्व एवं कार्यों का अधिक से अधिक क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. किशोरों के व्यक्तिगत विकास के व्यापक वाद–विवाद, क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया जाये।
3. छात्र एवं छात्राओं को ऐसे उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंपे जाने चाहिए जिससे उसके व्यवहार का अवलोकन में सहायक हो जिसके परणामस्वरूप शिक्षक व अभिभावक उनके व्यक्तितव को निखार सके।

4. विद्यालयों में छात्र व छात्राओं के लिए समान रूप से एन.सी.जी, एन.एस.एस स्काउट गाइड, रेडक्रास, श्रमदान व खेलकूद में भागीदारी के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

5. शाला में साहित्यिक क्लब, विज्ञान क्लब सामाजिक सहभागिता क्लब आदि का गठन किया जाना चाहिए।

6. संस्था प्रमुख द्वारा एक नियोजित संस्थागत कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें किशोरों के व्यक्तित्व व सामाजिक परिपक्वता को आगे बढ़ाने वाले कार्यक्रम सम्मिलित हों।

संदर्भ ग्रंथ

* आनंद ए. के. कुंवर एन, एवं कुमार (2014): " इम्पैक्ट आफ डिफरेट फैक्टर्स आन सोशिल मैचुरिटी आफ एडोलसेन्स ऑफ को एण्ड स्कूल " लघु शोध, {ej mhttp://www.shodhganga.edu.com

* अस्थाना एवं अस्थाना (2005): मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, पुस्तक मंदिर, आगरा– 2 पृष्ठ– 423–439, 201–210

* भटनागर, सुरेशः शिक्षा मनोविज्ञान, सूर्या प्रकाशन, पृष्ठ क्रमांक 84–87, 61–63

* डॉ. विष्णेई : शिक्षा मनोविज्ञान और शिक्षा के सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा– 2 पृष्ठ क्रमांक– 221

* गोपाल, पूजा (2005) : "बिलासपुर जिले के माध्यमिक शाला के माध्यमिक शाला के टाइप ए तथा टाइप बी व्यक्तित्व वाले छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन।" लघु शोध शिक्षा http://www.shodhganga.edu.com

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के श्रवण कौशल पर शैक्षिक कार्टून के प्रयोग के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) निशी भाम्बरी
प्राचार्य

विरेन्द्र कुमार राजपूत
एम.एड. प्रशिक्षार्थी

सारांश

शैक्षिक कार्टून एकप्रकार के हास्यास्पद रेखचित्र होते हैं जिसका प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन द्वारा शिक्षण होना है। शैक्षिक कार्टून अपनी निराली शैली में एक झलक मात्र से व्यवस्था अमिट छाप छोड़ने की पूरी–पूरी क्षमता रखते हैं। भाषायी कौशल के विकास में इनका प्रयोग किया जा सकता है। वर्तमान में बालक श्रोता, मात्र ही नहीं समझा जाता बल्कि तर्क–वितर्क की प्रक्रिया में भी भागीदार होता है। शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक का कर्तव्य है कि वह बालक को सक्रिय बनाकर उसकी शारीरिक–मानसिक शक्तियों, रुचियों एवं रुजान का अध्ययन करे और उसकी क्षमता अनुकूल अध्ययन अध्यापन करे। इस हेतु शैक्षिक कार्टून महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के श्रवण कौशल पर शैक्षिक कार्टून के प्रभाव का अध्ययन किया गया, इस हेतु कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों को शैक्षिक कार्टून का प्रयोग कर प्रायोगिक समूह में शिक्षण अधिगम क्रिया की गई एवं निष्कर्ष में पाया गया कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में श्रवण कौशल विकसित हुआ।

प्रस्तावना

मनुष्य के लिये भाषा माँ के समान है, चूंकि भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपने सोच और विचार एक–दूसरे तक आदान–प्रदान करता है। अपने देश के विस्तृत भू–भाग में बोली और समझी जाने वाली हिन्दी है जो जायसी के अनुसार–सभी भाषाओं में वरेण्य है। कबीर ने हिन्दी के लिये कहा है–

"संस्कीरत है कूप जल, भाषा बहता नीर।"

टी वी एवं मोबाईल पर दिखाये जाने वाले कार्टून का प्रभाव बालकों पर बहुत अधिक पड़ता है। माध्यमिक स्तर अर्थात् कक्षा 6वीं से 8वीं तक के विद्यार्थी आज कार्टून के रंग, एनीमेशन, छात्र बच्चों को अपनी ओर से आकर्षित करते हैं। इन कार्टून पात्रों के अनुकरण करते हम बच्चों को देखते हैं जैसे–

- निन्जा हथौड़ी की तरह बोलना।
- मोटू पतलू की तरह समोसे बोलना।
- छोटा भीम की तरह चलना।

शैक्षिक कार्टून शिक्षण उपागम के रूप में:–

शैक्षिक कार्टून एक प्रकार के हास्यप्रद रेखाचित्र होते हैं जिसका प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन द्वारा शिक्षण होना है। शैक्षिक कार्टून अपनी निराली शैली में एक झलक मात्र से व्यवस्थाकर अमिट छाप छोड़ने की पूरी–पूरी क्षमता रखते हैं। भाषायी कौशल के विकास में इनका प्रयोग किया जा सकता है।

कार्टून एक ऐसी चित्रात्मक अभिव्यक्ति है जो किसी भी वस्तु, व्यक्ति, संगठन, विचार की राय बनाने के लिये प्रस्तुत की जाती है। इसका अनूठा तथा अतिश्योक्तिपूर्ण दिग्दर्शन इनमें प्रयुक्त टेढ़ी–मेढ़ी आकृतियां इंद्रियां तथा शब्द और रेखा संकेतों में झलकता है तो हास्य की गुदगुदी लिये हमारे मस्तिष्क और दिल की गहराइयों को छू जाते हैं।

कार्टून अपनी निराली शैली में एक झलक मात्र से व्यक्त कर अपनी अमिट छाप छोड़ने की पूरी क्षमता रखते हैं। इनके माध्यम से जीवन की

कठोर वास्तविकताओं तथा सत्य को खुलकर सामने आने का अवसर मिलता है और इस तरह भावनाओं को उभारकर ये व्यवहार परिवर्तन, चरित्र निर्माण तथा वास्तविकता से परिचय कराने के लिये प्रभावशाली शैक्षिक साधन के रूप में हमारे सामने आते हैं। इनका प्रभाव सर्वकालिक तथा सार्वभौमिक होता है। बिना किसी आयु, लिंग तथा सामाजिक भेदभाव के ये सभी जगह सभी को प्रभावित करने की पूरी क्षमता रखते हैं और इसी रूप में शिक्षा के सभी विषयों में ये अपना पूरा दखल रखते हैं। आज के बच्चों में कार्टून अत्यधिक लोकप्रिय है। शैक्षिक कार्टून द्वारा बच्चों में प्रत्येक भाषायी कौशल का विकास सम्भव है।

श्रवण कौशल द्वारा शिक्षण का प्रथम सोपान है। श्रवण कौशल को अच्छी तरह विकसित कर ही अन्य कौशलों बोलना, पढ़ना एवं लेखन का विकास अच्छी तरह हो पाता है। श्रवण कौशल में विकास के लिए शैक्षिक कार्टून विधि एक बहुत अच्छी विधि है। कार्टून हमेशा ही बच्चों को आकर्षक लगते हैं। इसी आकर्षण का प्रयोग बच्चों की श्रवण कौशल विकास हेतु किया जा सकता है। कार्टून में चटक रंग होता है। संवाद शैली का अनुकरण अनुसार छोटे बच्चों द्वारा किया जाता है। कार्टून बच्चों का आकर्षण का केंद्र होता है। शैक्षिक कार्टून द्वारा अध्यापन से कक्षा शिक्षण अत्यधिक सरल एवं रोचक हो पायेगा। शैक्षिक कार्टून का प्रयोग श्रव्य, दृश्य, श्रव्य या चित्रों के रूप में कक्षा शिक्षण में किया जा सकता है। यह अपनी विशेष शैली के कारण हर रूप में बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

☞ शैक्षिक कार्टून का भाषा शिक्षण में प्रयोग का अध्ययन

☞ श्रवण कौशल के विकास हेतु शैक्षिक कार्टून के प्रयोग का अध्ययन।

☞ सुनने की क्षमता का विकास करना।

☞ शैक्षिक कार्टून द्वारा छात्रों में पात्र अभिनयका विकास करना।

अध्ययन परिकल्पना

H_{01} – प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की श्रवण कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के परिणामों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

H_{02}– नियंत्रित समूह विद्यार्थियों की श्रवण कौशल एवं पश्च (मध्यमानों) परिणामों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

H_{03}– प्रायोगिक समूह (शैक्षिक कार्टून) से एवं नियंत्रित समूह (परम्परागत विधि) के श्रवण कौशल के परिणामों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोध प्रश्न–

शैक्षिक कार्टून के प्रयोग से छात्रों में रोल प्ले के दौरान क्या अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है?

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखण्ड के समस्त उच्च प्राथमिक शालाएं हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक पद्धति से शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय तिफरा के कक्षा 6वीं के 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वि समूह प्रकृति का प्रयोगात्मक अनुसंधान है।

चर

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित चर है।

☞ स्वतंत्र चर– शैक्षिक कार्टून का प्रयोग।

☞ आश्रित चर– श्रवण कौशल

☞ नियंत्रित चर– उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

वर्णनात्मक सांख्यिकी

केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप हेतु मध्यमान एवं प्रमाणिक

विचलन प्रयुक्त किया गया।

निष्कर्षात्मक सांख्यिकी– चरों में सार्थकता का अन्तर पता करने हेतु टी परीक्षण किया गया।

H_{01}:– प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की श्रवण कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों सार्थक नहीं होगा।

तालिका 4.2.2 (A) : प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण का सांख्यिकीय की विश्लेषण

तालिका 4.2.2 (A)

स. क्र.	परीक्षण	N	M /Mean	S.D.	S.Em.	Comb S.Em	df	t Value	सार्थकता
1.	अध्यापन पूर्व परीक्षण	30	12	3.09	.56				.01 सार्थकता स्तर पर
2.	अध्यापन पश्चात परीक्षण	30	20	3.97	.72	1.28	58	8.79	सार्थक अंतर हैं

व्याख्या–

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों का श्रवण कौशल उपलब्धि के पूर्व परीक्षण का मध्यमान 12 है जबकि इसी समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक कार्टून से अध्यापन के पश्चात् परीक्षण का मध्यमान 20 पाया गया। जो कि यह दर्शाता है कि इस समूह हेतु अध्यापन पश्चात् परीक्षण का मान अध्यापन पूर्व परीक्षण के मान से उच्च है। सार्थकता की जॉच हेतु टी– परीक्षण किया गया जिसका मान 8.79 पाया गया जो कि सार्थकता स्तर .01 का सारिणीमान 2.66 से ज्यादा है अतः यह परिकल्पना H_{01} अस्वीकृत हुई।

निष्कर्ष–

तालिका 4.2.1 (i) के मान की सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की श्रवण योग्यता के उपलब्धि परीक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

H_{02} नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की श्रवण कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के परिणामों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

तालिका 4.2.2 (B)

नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण परिणामों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स. क्र.	परीक्षण	N	M /Mean	S.D.	S.Em.	Comb S.Em	df	t Value	सार्थकता
1.	अध्यापन पूर्व परीक्षण	30	10	3.12	.57	1.26	58	2.11	.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर नही हैं
2.	अध्यापन पश्चात परीक्षण	30	12	3.77	.69				

व्याख्या–

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों का श्रवण कौशल के पूर्व परीक्षण का मध्यमान 10 एवं परम्परागत विधि पश्चात् मध्यमान 12 पाया गया। यह दर्शाता है कि इस समूह हेतु अध्यापन पश्चात् परीक्षण का मान अध्यापन पूर्व परीक्षण के मान से ज्यादा नहीं है। सार्थकता की जांच हेतु टी परीक्षण किया गया जिसका मान 2.11 पाया गया, जो कि सार्थकता स्तर .01 पर सारिणीमान 2.66 से कम है। अतः यह परिकल्पना H_{02} स्वीकृत हुई।

निष्कर्षः तालिका (4.2.2) के मान का सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की श्रवण कौशल उपलब्धि परीक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत हुई।

शैक्षिक कार्टून परम्परागत विधि से शिक्षण

H_{03} प्रायोगिक समूह (शैक्षिक कार्टून) से एवं नियंत्रित समूह (परम्परागत विधि) के श्रवण कौशल परीक्षण के परिणामों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

तालिका 4.2.2 (C)

स. क्र.	अध्यापन विधि	N	M	S.D.	S.Em.	df	t Value	सार्थकता
1.	भौक्षिक कार्टून	30	20	3.97	.72	58	8 .01	.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर नही हैं
2.	परम्परागत विधि	30	12	3.77	.69			

व्याख्या–

उक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि परंपरागत समूह (नियंत्रित समूह) के प्राप्तांकों का मध्यमान 12 है जबकि शैक्षिक कार्टून समूह (प्रायोगिक समूह) का मध्यमान 20 से कम है। अतः यह दर्शाता है कि परम्परागत नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रायोगिक समूह की क्षमता उच्च है।

उक्त मापों के आधार पर सार्थक अन्तर की जांच के लिये परीक्षण किया गया। जिसका मान 8.01 है जो कि सार्थकता स्तर .01 पर सारिणीमान 2.66 से बहुत अधिक है।

निष्कर्ष–

तालिक 4.3 के मान से सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रायोगिक समूह के परीक्षण एवं नियंत्रित समूह के परम्परागत शिक्षण में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य पकिलप नृत अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत की जाती है।

अन्य निष्कर्ष–

शैक्षिक कार्टून के प्रयोग द्वारा अध्ययन अध्यापन कराने पर छात्रों में रोल प्ले के माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है। शैक्षिक कार्टून विधि न सिर्फ श्रवण कौशल बल्कि अभिव्यक्ति का भी विकास कर सकता है।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व

शैक्षिक कार्टून आधारित शिक्षण की आवश्यकता इसलिये पड़ी क्योंकि अधिकांश राज्यों में कक्षोन्नति की नीति लागू है छात्रों को अगली कक्षा में प्रवेश दे दिया जाता है। इस नीति में यह

मान लिया जाता है कि सभी बच्चों में सीखने की अंर्तभूत योग्यता होती है। बशर्ते उन्हें भली भांति पढ़ाया जाये। अतः उन दशाओं में सृजन का भार विद्यालयों एवं शिक्षकों पर है। आज छात्रों में भाषा शिक्षा के प्रति उदासीनता व्याप्त है। भाषायी कौशलों के विकास के द्वारा ही अन्य विषयों का भी विकास संभव हो पायेगा।

आज विज्ञान के इस युग में भाषा की घटती महत्ता को देखते हुए शैक्षिक कार्टून का कक्षा शिक्षण में प्रयोग हितकर होगा। शैक्षिक कार्टून द्वारा श्रवण कौशल के विकास के साथ ही अन्य भाषायी कौशल का विकास भी सम्भव है। शैक्षिक कार्टून के प्रयोग से गणित जैसे कठिन विषय सरलता के साथ छात्रों को अध्ययन अध्यापन करायी जा सकती है। शैक्षिक कार्टून द्वारा कक्षा शिक्षण रुचि कर बनाया जा सकता है। शैक्षिक कार्टून का प्रयोग विज्ञान विषय के विभिन्न कठिन विषय वस्तुओं को प्रदर्शित करने हेतु किया जा सकता है। शैक्षिक कार्टून को बच्चे ध्यानपूर्वक देखते एवं सुनते हैं।

सुझाव–

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि उत्तम शिक्षण विधियों का प्रभाव विद्यार्थियों के श्रवण कौशल पर पड़ता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो जाती है।

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कुछ सुझाव

विद्यार्थियों के लिए सुझाव–

- बाल केन्द्रित गतिविधियों के छात्र उत्साहपूर्वक हिस्सा लेवें।
- विद्यार्थियों को परिश्रमी, आत्मविश्वासी दृढ़, जिज्ञासु स्व अनुशासित होना चाहिए।
- शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए विषयों का सतत् अभ्यास।
- विद्यार्थियों को निडर होना चाहिये। त्रुटि करने पर डरने के बजाय शिक्षक से त्रुटि सुधार हेतु सुझाव लें।
- शिक्षक की बातों को ध्यानपूर्वक सुनें।
- समूह चर्चा के माध्यम से एक–दूसरे से विषय पर बातचीत करें।
- एक–दूसरे के विचारों को सुनें, आंकलन करें।
- बच्चे स्वयं कार्टून के माध्यम से सीखें।

शिक्षकों हेतु सुझाव

- प्रत्येक अध्ययन अध्यापन के पश्चात् मूल्यांकन परीक्षा या निदानात्मक परीक्षा लें।
- कक्षा स्तर दक्षता को जानने का प्रयास करें।
- विषय आधारित सहायक शिक्षक सामग्री का प्रयोग करें।
- दक्षताओं को ध्यान में रखकर गतिविधियों के द्वारा शिक्षण कार्य करें।
- शैक्षिक कार्टून आधारित संदर्भ पुस्तकों का प्रयोग करें। कम्प्यूटर आधारित शिक्षण कार्य में एनीमेंशन के माध्यम से, कहानियों के माध्यम से सीखने हेतु प्रेरित करें।
- आडियो–विडियो शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग करें।
- चित्र आधारित पुस्तकों का प्रयोग भाषायी कौशलों के विकास हेतु करें।

पालकों हेतु सुझाव–

- बच्चों की रुचि व मनोवृत्तियों को समझने का प्रयास करें।
- बच्चों को क्रियाकलापों द्वारा सीखने में मदद करें।
- विभिन्न कार्टून चरित्रों के तरीके से बात करने पर उन्हें टोकना नहीं चाहिये।
- बच्चों को सीखने हेतु एक से अधिक पुस्तक एवं विषय आधारित कार्टून सी. डी. उपलब्ध करायें।
- बच्चों को समझ विकसित करने हेतु भरसक प्रयास करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

* अग्रवाल जे. सी. (2003)– शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंधन विनोद पुस्तक भंडार, आगरा पृ.क्र. 2,239
* भाई योगेन्द्र जीत (2007–08): शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियां, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा– 7 पृ.क्र. 1–1 2
* भटनागर ए. बी. (2006): गणित शिक्षण, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

लघु शोध प्रबंध

* **दुबे किरण (2008)** हाईस्कूल छात्रों की गणितीय अभिवृत्ति का लिंग एवं संवर्ग में एक अध्ययन, एम. एड. प्रतिवेदन गुरूघासीदास वि. वि. पृ. 30–38
* **जी. सी. पी. आई (1981)** लघु शोध प्रबन्ध ए डायनोस्टिक स्टडी ओरल रीडिंग ऑफ हिन्दी लैंग्वेज ऑफ द टेपीडल भीजर्स टू इन्प्रुन अपौन देम।
* **शर्मा अनुसूइया (1987)** एम. एड. प्रशिक्षार्थी लघु शोध प्रबन्ध बिलासपुर नगर हिन्दी भाषा छात्र–छात्राओं के लेखन एवं वाचन में पायी जाने वाली त्रुटियों का अध्ययन।
* **कप्तान सोनल (2014)** इफेक्टीबनेस ऑफ कार्टून एण्ड कांमिक बेस्ट मल्टीमीडिया पैकेज फार टीचिंग इनव्यानमेंट टू प्रायमरी स्कूल स्टूडेंट।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता पर सोशल मीडिया (मोबाइल) के प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती रीमा शर्मा
सहायक प्राध्यापक

चन्द्रप्रकाश साहू
एम.एड. प्रशिक्षार्थी

सारांश

मोबाइल तकनीकी के इस युग में विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछूता नहीं है। अपना अधिकाधिक समय वे मोबाइल में ही व्यतीत करते हैं। लगातार सोशल मीडिया के सम्पर्क में मित्रों से जानकारियाँ हासिल करना तथा उसे साझा करना उनकी दैनिक जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा बन गयी है। विद्यार्थी बिना पूर्ण जानकारी के मोबाइल में मैसेज के लिए जो अपरिष्कृत शब्दावली का प्रयोग करते हैं उसे अपने पठन–पाठन में भी उपयोग करते चले जाते हैं जिससे उनकी भाषायी दक्षता का स्तर गिरता चला जाता है। इस हेतु प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के कक्षा ग्यारहवीं/बारहवीं के विद्यार्थियों का चयन कर परीक्षण किया गया है। अध्ययन में यह पाया गया कि सोशल मीडिया (मोबाइल) के अधिक प्रयोग से विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे उनकी भाषायी दक्षता कमजोर होती है।

प्रस्तावनाः– आधुनिक युग मोबाइल तकनीकी का है। मोबाइल पर एक क्लिक करते ही विश्व की समस्त जानकारियाँ आपके पास उपलब्ध हो जाती हैं। मोबाइल हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। मोबाइल के अन्तर्गत सोशल मीडिया में समय बिताना एवं अपने जीवन की दैनिक घटनाओं को मित्रों से साझा करना आम बात हो गयी है। पारिवारिक एवं मैत्रिक माहौल में किशोर वर्ग भी इससे अछूता नहीं है। किशोर वर्ग मोबाइल के माध्यम से व्हाट्सएप्प, फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम इत्यादि सोशल साइट्स पर लगातार एक–दूसरे से बातचीत करते रहते हैं। इस दौरान वे अंग्रेजी भाषा के शब्दों को अपरिष्कृत रूप में प्रयोग करते हैं जिससे उनकी शब्दावली में शब्दों का ये नवीन रूप सृजित होता जाता है। शब्दों की मूल संरचना को भूलकर इन आभासी शब्दों का प्रयोग करना उनकी आदत बन जाती है जिससे इनकी भाषायी दक्षता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सम्बन्धित साहित्यः– मारवा बाउचिकी, सेब्रिना बाउनानी दोंयाजेद अहलम (2016) ने "टेलमैक विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग के विद्यार्थियों के अकादमिक लेखन पर सोशल मीडिया का प्रभाव" का अध्ययन किया एवं पाया कि छात्रों ने सोशल मीडिया में टेक्स्ट मैसेज के लिए शब्दों का नवीन स्वरूप सृजित कर लिया है जिससे सामान्य लेखन के दौरान भी उनसे व्याकरण सम्बन्धित अधिक त्रुटियां होने लगी हैं।

भारद्वाज अक्षदीप, अवस्थी विनय, गुंडर सैम (2017) ने भारतीय युवा वर्ग पर सोशल मीडिया का प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि छात्र अपने पढ़ाई से संबंधित कार्यों के स्थान पर सोशल मीडिया पर समय बिताना ज्यादा पसंद कर रहे हैं जिससे उनकी कार्यदक्षता कमजोर हो रही है तथा उनकी भाषायी समझ पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

उद्देश्यः– (1) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) के प्रभाव का अध्ययन करना।

(2) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का अध्ययन करना।

(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की

भाषायी दक्षता पर सोशल मीडिया (मोबाइल) के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः– (1) उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का कोई प्रभाव नहीं होगा।

(2) उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का भाषायी दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता पर सोशल मीडिया (मोबाइल) का कोई प्रभाव नहीं होगा।

जनसंख्या एवं न्यादर्शः–

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध में बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखंड के उच्चतर माध्यमिक शाला में अध्ययनरत कक्षा ग्यारहवीं/ बारहवीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

न्यादर्श– न्यादर्श के रूप में बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखंड के ग्रामीण क्षेत्र के 04 तथा शहरी क्षेत्र के 04 विद्यालयों में कक्षा ग्यारहवीं/ बारहवीं के छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छक विधि से किया गया है।

शोध उपकरण– प्रस्तुत शोध में परिकल्पना के परीक्षण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली के अंतर्गत 30 वैकल्पिक तथा 01 निबंधात्मक प्रश्नों का चयन किया गया है। परीक्षण के पश्चात प्रतिशतता के आधार पर परिणाम की गणना की गयी।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्याः– H_{01} उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल का कोई प्रभाव नहीं होगा।)

तालिका क्र. 1 (वैकल्पिक प्रश्न) ग्रामीण + शहरी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न	(a)		(b)		(c)	
	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.
1. सोशल मीडिया का प्रयोग आप किस माध्यम से करना पसंद करते हैं? (अ) मोबाइल (ब) कम्प्यूटर (स) टैबलेट	78%	86%	21%	04%	01%	02%
2. सोशल मीडिया का प्रयोग आप किस माध्यम से करना पसंद करते हैं? (अ) मोबाइल (ब) कम्प्यूटर (स) टैबलेट	83%	66%	14%	25%	03%	09%
3. किस सोशल नेटवर्किंग साईट का उपयोग आप सबसे ज्यादा करते हैं? (अ) फेसबुक (ब) ट्विटर (स) व्हाट्सएप	24%	23%	02%	05%	74%	72%
4. सोशल मीडिया के माध्यम से आप किनसे चैटिंग करना (अ) अभिभावक (ब) मित्र (स) शिक्षक	14%	06%	78%	91%	08%	03%
5. मित्रों से चैटिंग के दौरान आप कौन सी भाषा का प्रयोग करते हैं? (अ) हिन्दी (ब) अंग्रेजी (स) अंग्रेजी(शॉर्ट फॉर्म)	53%	33%	38%	25%	09%	42%
6. शिक्षकों से चैटिंग के दौरान आप कौन सी भाषा का प्रयोग करते हैं? (अ) हिन्दी (ब) अंग्रेजी (स) अंग्रेजी(शॉर्ट फॉर्म)	63%	41%	30%	43%	07%	16%

वस्तुनिष्ठ प्रश्न	(a)		(b)		(c)	
	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.
7. जब कभी आपको कमेंट करना हो तब आप कौन सी भाषा का प्रयोग करते हैं? (अ) हिन्दी (ब) अंग्रेजी (स) अंग्रेजी (शार्ट फॉर्म)	46%	15%	40%	45%	14%	40%
8. क्या मित्रों द्वारा आपके कमेंट में कोई सुधार किया जाता है? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	32%	20%	31%	30%	37%	50%
9. क्या शिक्षकों द्वारा आपके कमेंट में कोई सुधार किया जाता है? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	46%	40%	31%	30%	37%	50%
10. क्या चैटिंग के दौरान आप ग्रामर या स्पेलिंग का ध्यान रखते हैं? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	71%	51%	16%	19%	13%	30%
11. क्या ऑनलाइन चैटिंग से आपके लेखन में कोई सुधार हुआ है? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	76%	84%	10%	08%	13%	10%
12. क्या ऑनलाइन चैटिंग में आप शॉर्ट फॉर्म का प्रयोग करते हैं? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	77%	82%	10%	08%	13%	10%
13. क्या ऑनलाइन चैटिंग में आप शॉर्ट फॉर्म का प्रयोग करते हैं? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	46%	62%	15%	08%	39%	30%
14. क्या ऑनलाइन चैटिंग में आप सिंबॉलिक भाषा का प्रयोग करते हैं? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	33%	52%	38%	21%	29%	27%
15. क्या ऑनलाइन चैटिंग से आप अंग्रेजी भाषा सीखने का अभ्यास करते हैं? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	85%	82%	08%	05%	07%	13%
16. क्या आपके द्वारा क्लास में लिखते समय LoL/OMG आदि शब्दों का प्रयोग होता है? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	25%	21%	31%	43%	44%	36%
17. क्या चैटिंग के दौरान अंग्रेजी भाषा के प्रयोग में आप कठिनाई महसूस करते हैं? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	23%	14%	32%	41%	45%	45%

वस्तुनिष्ठ प्रश्न	(a)		(b)		(c)	
	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.
18. क्या आपके शिक्षक द्वारा चैटिंग के माध्यम से विषय सम्बन्धी चर्चा की जाती है? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	58%	63%	21%	16%	21%	21%
19. क्या आपके चैटिंग में प्रयुक्त शॉर्ट फॉर्म का प्रयोग सामान्य लेखन में अनायास ही हो जाता है? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	18%	25%	46%	47%	36%	28%
20. क्या आपको लगता है कि लगातार चैटिंग करने से आपके भाषा लेखन में अधिक त्रुटियाँ होने लगी हैं? (अ) हाँ (ब) नहीं (स) कभी–कभी	35%	30%	45%	38%	20%	32%
21. इनमें से किस सन्दर्भ में का प्रयोग होता है? (a) Laughing Out Loud (b) Lead out Loud (c) Lake of Loud	62%	63%	22%	19%	16%	18%
22. को शॉर्ट फॉर्म में कैसे लिखा जाता है? (a) Bef (b) Befr (c) Be4	10%	10%	30%	20%	60%	70%
23. इनमें से किस सन्दर्भ में 'tmrw' का प्रयोग होता है? (a) tamarind (b) tomorrow (c) tom and jerry	06%	02%	88%	95%	06%	03%
24. 'Face' तो 'Face' को शॉर्ट फॉर्म में कैसे लिखा जाता है? (a) FtohF (b) FtwoF (c) F2F	03%	03%	26%	09%	71%	88%
25. इनमें से किस सन्दर्भ में 'GRB' का प्रयोग होता है? (a) Grand Eight (b) Grow Eight (c) Great	31%	17%	20%	16%	49%	67%
26. को शॉर्ट फॉर्म में कैसे लिखा जाता है (a) plz (b) plze (c) pleaze	61%	82%	24%	18%	15%	0%
27.'U' का अर्थ किस सन्दर्भ में लिया जाता है? (a) Away (b) Why (c) You	01%	0%	09%	02%	90%	98%
28.'See You Later' को शॉर्ट में कैसे लिखा जाता है? (a) S U LTR (b) C U L 8 R (c) C U LTR	52%	37%	10%	15%	38%	48%

वस्तुनिष्ठ प्रश्न	(a)		(b)		(c)	
	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.
29.'Gm' का सम्बन्ध किस शब्द से है? (a) Good Male (b) Good Morning (c) Good Mouth	04%	01%	95%	98%	01%	01%
30.'XOXO' शब्द का प्रयोग किसके लिए होता है? (a) Hugs and Kisses (b) Shake Hand (c) Love and Fight	28%	31%	38%	44%	28%	31%

तालिका क्र. 2 (निबंधात्मक प्रश्न) ग्रामीण + शहरी

अंक	1		2		3		4		5	
	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.	ग्रा.	श.
प्रतिशत	33%	31%	33%	35%	25%	19%	09%	13%	0%	01%

व्याख्याः– पद क्रमांक 1 से 30 की गणना से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया का स्पष्ट प्रभाव है साथ ही इन प्रभावों में अंतर भी है तथा निबन्धात्मक पद में चयनित न्यादर्श के अन्तर्गत 91% ग्रामीण तथा 85% शहरी विद्यार्थियों द्वारा निबंध लेखन के दौरान शब्दों को अपरिष्कृत भाषा अथवा अशुद्धियों में लिखा गया है अर्थात् शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता पर सोशल मीडिया (मोबाइल) का अधिक प्रभाव पड़ा है।

निष्कर्षः– उपर्युक्त परिणामों से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का स्पष्ट प्रभाव है साथ ही इन प्रभावों में अंतर पाया गया है अतः परिकल्पना क्रमांक 01 अस्वीकृत की जाती है।

HO2 "उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का भाषायी दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं होगा"

व्याख्याः– चयनित न्यादर्श के अन्तर्गत 91% ग्रामीण तथा 85% शहरी विद्यार्थियों द्वारा निबंध लेखन के दौरान शब्दों को अपरिष्कृत भाषा अथवा अशुद्धियों में लिखा गया है अर्थात् शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता पर सोशल मीडिया (मोबाइल) का अधिक प्रभाव पड़ा है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त परिणामों से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का भाषायी दक्षता पर स्पष्ट प्रभाव है साथ ही इन प्रभावों में अंतर पाया गया है अतः परिकल्पना क्रमांक 01 अस्वीकृत की जाती है।

HO3 "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का कोई प्रभाव नहीं होगा।"

व्याख्याः– पद क्रमांक 1 से 30 की गणना से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों में सोशल मीडिया का प्रभाव पड़ा है तथा निबन्धात्मक पद में 88.5% विद्यार्थियों

द्वारा निबंध लेखन के दौरान अपरिष्कृत भाषा अथवा अशुद्धियों में लिखा गया है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त परिणामों से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का स्पष्ट प्रभाव पाया गया है अतः परिकल्पना क्रमांक 03 अस्वीकृत की जाती है।

परिणामः– (1) उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का स्पष्ट प्रभाव पाया गया है। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का अधिक प्रभाव पड़ता है।

(2) उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का भाषायी दक्षता पर स्पष्ट प्रभाव पाया गया है। शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता पर सोशल मीडिया (मोबाइल) का अधिक प्रभाव पड़ता है।

(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का स्पष्ट प्रभाव पाया गया है। इससे उनकी शब्द संरचना की समझ प्रभावित होती है तथा लेखन सम्बंधित त्रुटियाँ अधिक होने लगी हैं।

निष्कर्षः– उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का स्पष्ट प्रभाव है तथा इन प्रभावों में अंतर पाया गया है, उनकी भाषायी दक्षता पर भी प्रभाव में अंतर पाया गया है तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया (मोबाइल) का स्पष्ट प्रभाव पाया गया है।

अतः वर्तमान समय में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सोशल मीडिया (मोबाइल) के अत्यधिक प्रयोग से बचना चाहिए। इसके लिए शिक्षकों को जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची (References)

A.T.M. Shahjahan, Kutub Uddin Chisty. (2014). Social Media Reasearch and its Effect on Our Society.

Akashdeep Bhardwaj, Vinay Avasthi, & Sam Goundar. (2017). impact of Social Networking on Indian Youth.

Anika Belal. (2014). Influence of digital social media in writing and speaking of tertiary level student.

Christofferson, Jenna Palermo. (2016). How is Social Networking Sites Effecting Teen's Social and Emotional Development

Chua Yi kay, Fong Jing kai, Goh Kong Jun, & Wong Yew hor. (2014). The Impact of Social Network On English Profeciency Among Students In university Tunku Abdul Rahman (utar) Sungail Long, malayasia Khurana N. (2015). The Impact of Social Networking Sites on the Youth. Lino S. Cabrera. (2017). Impact Of Social Media in English Language Learning

Shabnoor Siddiqui, & Tajinder Singh. (2012). Social media is Impact with Positive and Negative Aspects.

Sim Monic Ariana, & Pop Anamaria Mirabela (2012). The Impact Of Social Media On Students Vocabulary Learning.

" सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन– अंग्रेजी ग्रामर के संदर्भ में "

श्रीमती रमाकांति साहू
(प्राध्यापक)
प्राध्यापक (उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान)

विद्याभूषण शर्मा
(एम. एड. प्रशिक्षार्थी)

सारांश

वर्तमान युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के नित नये आविष्कारों ने मानव जीवन शैली को बदल दिया है। मानव विकास का जितना पुराना सम्बन्ध सभ्यता और संस्कृति से है, उतना ही सूचनाओं के आदान–प्रदान एवं उनके संग्रहण से है। मानव हमेशा ही सूचनाओं के आदान–प्रदान हेतु नवीन तरीकों को खोजने में शोधरत् रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की खोज एवं उपयोग आधारभूत परिवर्तन लेकर आया है। आज सूचना एवं संचार तकनीक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। आईसीटी ने ज्ञान के संकलन, संचरण एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप जाग रहे हैं या सो रहे हैं बल्कि यह महत्व रखता है कि आप ऑफलाइन हैं या ऑनलाइन।

प्रस्तावना (Introduction)

आज का युग विज्ञान का युग है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) एक ऐसी अवधारणा है जिसमें तकनीकी आधारित सूचना एवं संचार से संबंधित प्रणाली व प्रक्रियाएँ शामिल हैं। यह तकनीकी उपकरणों एवं सूचना संसाधनों का एक विस्तृत समूह है जिसके द्वारा सूचनाओं का संचयन, प्रसार प्रबन्ध तथा पुर्नप्राप्ति की क्रिया सम्पादित की जाती है।

सूचना व संचार साधनों के माध्यम से आज सम्पूर्ण संसार एक परिवार की भांति नजर आता है। आज के भूमण्डलीकरण के युग में संचार और सूचना प्रौद्योगिकी ने विश्व के सभी लोगों को आपस में जोड़ने में अहम भूमिका निभाई है। आईसीटी ने आज सम्पूर्ण विश्व को एक छोटे से उपकरण में कैद कर दिया है। सूचना व संवेग वर्तमान युग में तीव्र गति से विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में प्रसारित हो रहे हैं। संचार के साधनों ने सूचना पहुंचाना सरल, सुगम एवं तीव्र ही नहीं बनाया है, अपितु धन और समय की भी बचत हो रही है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पेपरलेस प्रणाली का उपयोग आज विश्व के सभी कार्यालयों, विभागों एवं संस्थाओं में तीव्र गति से कर रहा है।

शिक्षा भी आईसीटी से अछूती नहीं रह गई है। सूचना एवं संचार तकनीकी का प्रयोग कक्षा में अध्यापन कार्य हेतु एवं प्रशासनिक कार्यों में किया जा रहा है। अप्रशिक्षित शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण, मुक्त शिक्षा–प्रशिक्षण, परीक्षा के प्रश्न–पत्र, अंक–तालिका, प्रमाण–पत्र, परिणाम इत्यादि क्षेत्र में इन साधनों का उपयोग बहुतायत में हो रहा है। विद्यालयीन शिक्षा में भी कम्प्यूटर शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करके नया विषय जोड़ा गया है। आज का अधिगमकर्ता इण्टरनेट और ई–मेल के माध्यम से नित नूतन वैज्ञानिक एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी प्राप्त करके अपने ज्ञान का विस्तार कर रहा है। शिक्षार्थी को सूचना व प्रौद्योगिकी के उपकरणों के माध्यम से शिक्षण–अधिगम, प्रभावी सम्प्रेषण और शिक्षा में नवाचारों से शीघ्रातिशीघ्र जानकारी उपलब्ध हो रही है। कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल, ई–गवनेंस, ई–कामर्स, ई–एजुकेशन, मोबाईल और भी न जाने कितनी ऐसी प्रणालियॉ हैं जिन्होंने शिक्षक–शिक्षा को न केवल सुगम बनाया है अपितु

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को भी आसान किया है। वैश्वीकरण के इस युग में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी से शिक्षा जगत पूर्णतः प्रभावित हुआ है। आज के बालक को वैज्ञानिक, व्यावसायिक और व्यवहारिक शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इन साधनों का प्रयोग शिक्षक के लिए अपेक्षित है। कम्प्यूटर व इंटरनेट ने ज्ञान एवं शिक्षा के एक स्वतंत्र बाजार को प्रस्तुत किया है जिससे शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों अपनी आवश्यकता के अनुसार ज्ञानार्जन कर सकते हैं। इण्टरनेट ने अधिगम प्रक्रिया को अत्यन्त सरलीकृत तथा सुविधाजनक रूप में प्रस्तुत किया है जिससे शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों अपनी आवश्यकता के अनुसार ज्ञानार्जन कर सकते हैं। ई–मेल की सहायता से सूचनाओं का आदान–प्रदान पलक झपकते ही होता है। एक अध्यापक अपने कक्षा–कक्ष में बैठकर दुनिया के किसी भी देश के किसी भी विद्यालय में हो रहे शैक्षणिक नवाचारों को प्राप्त करके उन्हें अपने विद्यार्थियों तक पहुंचा सकता है। कक्षा–कक्ष में वह दूरदर्शन, रेडियो एवं इंटरनेट द्वारा शिक्षा के नवीन परिवर्तनों की जानकारी दे सकता है। सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी को अति आवश्यक मानकर इसका प्रयोग शिक्षा में लगातार बढ़ता जा रहा है।

शिक्षा वह प्रकाश है जो अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर कर मानव का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पथ प्रदर्शन करती है, पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा नहीं है अपितु शिक्षा द्वारा व्यक्ति का व्यवहार, चरित्र, आचरण, मनोवृत्ति, भावनाओं, विचारों तथा ज्ञान आदि में परिवर्तन से है। शिक्षा मनुष्य को मनुष्यता प्रदान करने वाली सर्वोच्च शक्ति है। मनुष्य इस प्रक्रिया में उद्‌भव से अवसान तक शनैः–शनैः निरन्तर ज्ञान, अनुभव, कौशलों, व्यावसायिक दक्षताओं को अपनी रुचि, योग्यता, वातावरण, सुविधा, आवश्यकता एवं परिस्थिति अनुसार अपने पिछड़ेपन के कमजोरियों व त्रुटियों का परिमार्जन करते हुए सर्वांगीण विकास करते जाता है।

वैज्ञानिक आविष्कारों ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं क्रिया को प्रभावित किया है। इसके प्रभाव से शिक्षा भी अछूती नहीं रही है। आज शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान की नित नवीन शाखाओं का विकास हो रहा है। इस ज्ञान को आत्मसात करने, ज्ञान का संचय, प्रसार एवं वृद्धि एवं सम्प्रेषण करने के लिए विकसित तकनीकी के ज्ञान एवं उपयोग की आवश्यकता है, और इस आवश्यकता की पूर्ति केवल सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी (ICT) द्वारा ही संभव है।

वर्तमान समय में सूचना संचार प्रौद्योगिकी की शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में एक अहम भूमिका है। इसलिए अब शिक्षक को शिक्षण कार्य करने के लिए अपने विषय में निपुण होने के साथ–साथ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विषय में निपुण होना भी आवश्यक है, आज सम्प्रेषण शिक्षा की रीढ़ की हड्डी है बिना सम्प्रेषण के शिक्षा और शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती।

शोध अध्ययन का औचित्य– (**Rational of Research Study**) उक्त अध्ययन निष्कर्षों की विवेचना से स्पष्ट होता है कि आईसीटी आधारित शिक्षण को परंपरागत शिक्षण से प्रभावकारी माना गया है। जिससे छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि भी अधिक पाई गई एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई है। उक्त शोध के अध्ययन से ज्ञात होता है कि परंपरागत शिक्षण से छात्रों में पढ़ाई के प्रति रुचि कम होती जा रही है एवं वर्तमान समय में सभी तेज भागकर अधिक से अधिक ज्ञान कौशल अर्जित करना चाहते हैं। जो सिर्फ आईसीटी आधारित शिक्षण से ही संभव जान पड़ता है। पूर्व में किये गये शोध अध्ययन में पाया गया कि परंपरागत शिक्षण की तुलना में प्राप्त निष्कर्षों की विवेचना से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी ग्रामर से संबंधित शोध अध्ययन में शोध के निम्न अभाव क्षेत्र परिलक्षित हुआ।

* ICT आधारित शिक्षण गणित, विज्ञान, भौतिकी,

रसायन विषय में हुआ है परन्तु अंग्रेजी ग्रामर में कम हुआ है।

* अंग्रेजी विषय पर ICT संबंधित शोध कार्यों, अन्य राज्य में अधिक हुआ है लेकिन छत्तीसगढ़ में कम हुआ है।

* अग्रेजी विषय पर ICT संबंधित शोध कार्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा नवमीं में तथा मस्तूरी विकासखण्ड में आज तक नहीं हुआ है। जिससे स्पष्ट होता है कि यह उपागम का माध्यम बेहतर है। शोधकर्ता ने उपरोक्त निष्कर्ष एवं विवेचना के आधार पर मैंने अपने प्रस्तुत शोध अध्ययन के विषय का चुनाव किया है सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, अंग्रेजी ग्रामर के संदर्भ में

अध्ययन के उद्देश्य (**OBJECTIVES OF STUDY**)

किसी भी शोध कार्य हेतु उद्देश्य का निर्धारण करना एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि इसमें शोध कार्य हेतु निश्चित दिशा–निर्देश प्राप्त होता है। प्रस्तावित समस्या कथन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पूर्व एवं पश्च परीक्षण करना।
2. नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पूर्व एवं पश्च परीक्षण करना।
3. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्व परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन।
4. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पश्च परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध संबंधी परिकल्पना (**HYPOTHESIS**):–

नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho_1 प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho_2 प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho_3 नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्व परीक्षण में मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho_4 नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पश्च परीक्षण में मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध की कार्य योजना (Work Plan of Research) किसी भी कार्य की सफलता उसके करने के तरीके, विधि एवं योजना पर निर्भर करता है। शोध कार्य करने, उसे सही रूप में पूर्ण करने के लिए योजना बनाना अति आवश्यकहै, कार्य की योजना के लिए किस विधि का प्रयोग करना है एवं क्या वह हमारे शोध के लिए सही है यह जानना महत्वपूर्ण है तभी शोध कार्य सही रूप में पूर्ण किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रायोगिक अनुसंधान विधि (Experimental Research Method) से अनुसंधान कार्य को विधिवत् सम्पन्न किया गया।

एक प्रयोगात्मक अभिकल्प वह प्रारूप है जिसमें शोधकर्ता स्वतंत्र चर में परिवर्तन का आश्रित चर पर प्रभाव का अध्ययन करता है।

"नियंत्रित दशाओं में किया गया निरीक्षण ही प्रयोग है।"

प्रस्तुत शोध कार्य को निम्न चरणों में पूर्ण की गई।

प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह का निर्माण–

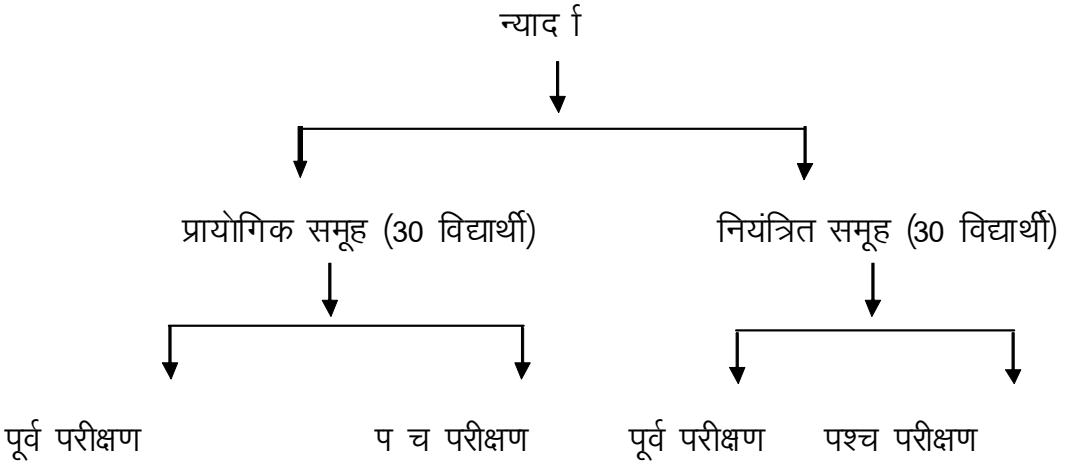

शोध विधिः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रयोगात्मक द्वि समूह प्रकृति का है।

जनसंख्या (Population)

जनसंख्या से तात्पर्य अनुसंधान क्षेत्र की सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है वह सजातीय होते हैं, अर्थात् किसी विशिष्ट समूह की एक निश्चित मात्रा जिसमें अनुसंधान हेतु अध्ययन निष्कर्ष लागू होता है जनसंख्या कहलाती है। प्रस्तुत शोध में बिलासपुर जिले के मस्तूरी विकासखण्ड के सभी शासकीय हाई/ हायर सेकेण्डरी विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श (Sample)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बिलासपुर जिले के मस्तूरी विकासखण्ड के ग्रामीण अंचल के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दर्रीघाट का यादृच्छिक (Random Sampling) विधि लॉटरी विधि द्वारा किया गया।

चयन क्षेत्र – ग्रामीण

चयनित शाला – शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दर्रीघाट जिला बिलासपुर छ.ग.

शोध चर (Variable)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नांकित चर है–

स्वतंत्र चर – सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

शोध उपकरण (Research Tools)

शोध में प्रयुक्त प्रदत्तों के संकलन में उपकरण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उपकरण ही शोधकर्ता को अपने उद्देश्य तक पहुंचाता है। शोधकर्ता द्वारा चयनित किये गये न्यादर्श पर प्रदत्त संकलन का प्रयोग कर ICT अंग्रेजी विषय की अध्यापन हेतु स्वनिर्मित पूर्व/ पश्च शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण शोध उपकरण का निर्माण किया गया है।

प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण

शोध परिकल्पना (Ho_1)– नियंत्रित समूह के पूर्व व पश्च परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

इन मूल्यों के आधार पर अध्याय– 01 में निर्धारित परिकल्पनाओं का विश्लेषण किया गया।

तालिका 4.1

नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण से प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व t मान द्वारा सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	परीक्षण	संख्या N	मध्यमान Mn	प्रमाणिक विचलन S.D.	Df	t-Value	सार्थकता
01	नियंत्रित समूह का पूर्व शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	19.63	3.08	58	0.35	0.01 विश्वास स्तर पर मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
02	नियंत्रित समूह का पश्च भौक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	19.9	2.90			

(t) का सारणीगत मान df = 58 के लिए 0.01 विश्वास स्तर पर (2.66)

व्याख्याः– उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.1 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 19.63 एवं 19.9 है मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु कांतिक अनुपात परीक्षण (t-परीक्षण) का गणनाकृत मान 0.35 है जो स्वतंत्रता अंश 58df पर 0.01 विश्वास स्तर पर, सारणीगत मान (2.66) से कम है अतः नियंत्रित समूह के पूर्व व पश्च परीक्षण परिणामों के माध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

निष्कर्षः– उपरोक्त निष्कर्षात्मक सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। **"नियंत्रित समूह के पूर्व व पश्च परीक्षण परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।"**

शोध परिकल्पना HO_2 :–

"प्रयोगात्मक समूह के पूर्व व पश्च परीक्षण परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।"

उपर्युक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्रयोगात्मक समूह के पूर्व शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों की विधिवत सांख्यिकी गणना कर मध्यमान प्रमाणिक विचलन व मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु क्रांतिक अनुपात परीक्षण की गई। प्राप्त परिणाम तालिका में दर्शाये गये हैं।

तालिका 4.2

प्रयोगात्मक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण से प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व t मान द्वारा सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	परीक्षण	संख्या N	मध्यमान Mn	प्रमाणिक विचलन S.D.	Df	t-Value	सार्थकता
01	प्रयोगात्मक समूह का पूर्व शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	19.07	3.15	58	6.42	0.01 विश्वास स्तर पर **2.66** मध्यमानों में सार्थक अंतर है।
02	प्रयोगात्मक समूह का पश्च भौक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	24	1.87			

(t का सारणीगत मान df = 58 के लिए, 0.01 विश्वास स्तर पर 2.66)

व्याख्याः उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.22 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि प्रयोगात्मक समूह के पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 19.07 एवं 24.03 है मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु कातिक अनुपात परीक्षण (t.परीक्षण) का गणनाकृत मान 6.42 है जो स्वतंत्रता अंश 58df पर 0.01 विश्वास स्तर पर, सारणीगत मान (2.66) अतः प्रयोगात्मक समूह के पूर्व व पश्च परीक्षण परिणामों के माध्यमानों में सार्थक अंतर पाया गया है।

निष्कर्षः– उपरोक्त निष्कर्षात्मक सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। प्रयोगात्मक समूह के पूर्व व पश्च परीक्षण परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर पाया गया।

शोध परिकल्पना HO_4 :– नियंत्रित समूह के पूर्व एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षण परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

तालिका 4.3

नियंत्रित समूह के पूर्व एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षण परिणामों के मध्यमानों का प्रमाणिक विचलन एवं परीक्षण द्वारा सांख्यिका विश्लेषण

क्रं.	परीक्षण	संख्या N	मध्यमान Mn	प्रमाणिक विचलन S.D.	Df	t-Value	सार्थकता
01	नियंत्रित समूह पूर्व भॉक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	19.63	39.08	58	09.11	0.01 वि वास स्तर पर मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
02	प्रयोगात्मक समूह का पूर्व भौक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	199.7	39.15			

(t का सारणीगत मान df = 58 के लिए, 0.01 वि वास स्तर पर 2.66)

उपर्युक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु नियंत्रित समूह के पूर्व एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों की विधिवत सांख्यिकी गणना कर मध्यमान प्रमाणिक विचलन व मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जॉच हेतु क्रांतिक अनुपात परीक्षण (t- परीक्षण) की गई प्राप्त परिणाम तालिका में दर्शाये गये हैं।

व्याख्या– उपरोक्त तालिका क्रं. 4.3 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के पूर्व परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 19.63 एवं 19.7 है मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जॉच हेतु कांतिक अनुपात परीक्षण (परीक्षण) का गणनाइन मान 0.11 है जो स्वतंत्रता अंश 58 पर 0.01 विश्वास स्तर पर सारणीगत मान 2.66 से कम है।

निष्कर्षः– उपरोक्त निष्कर्षात्मक सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। **नियंत्रित समूह के पूर्व व प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।**

शोध परिकल्पना HO_4 :–

प्रयोगात्मक समूह एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के पश्च शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण से

प्राप्त प्राप्तांकों की विधिवत सांख्यिकी गणना कर मध्यमान प्रमाणिक विचलन व मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु क्रांतिक अनुपात परीक्षण (t- परीक्षण) की गई। प्राप्त परिणाम तालिका में दर्शाये गये हैं।

तालिका 4.4

प्रयोगात्मक समूह व नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण से प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान

क्रं.	परीक्षण	संख्या N	मध्यमान Mn	प्रमाणिक विचलन S.D.	Df	t-Value	सार्थकता
01	नियंत्रित समूह का पश्च भौक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	19.9	2.9	58	6.49	0.01 वि वास स्तर पर मध्यमानों में सार्थक अंतर है।
02	प्रयोगात्मक समूह का पश्च भौक्षिक उपलब्धि परीक्षण	30	24	1.87			

प्रमाणिक विचलन व मान द्वारा सांख्यिकी वि लेशण

(t का सारणीगत मान df = 58 के लिए, 0.01 वि वास स्तर पर 2.66 है।)

व्याख्याः– उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.2.3 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि नियंत्रित समूह का पश्च शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 19.9 व प्रयोगात्मक समूह के पश्च शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों का मद्यमान 24.03 से कम है। मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु क्रांतिक अनुपात परीक्षण का गणनाकृत मान 6.49 है जो स्वतंत्रता का अंश 58 पर 0.01 विश्वास स्तर पर सारणीगत मान 2.66 अतः प्रयोगात्मक समूह के पश्च परीक्षण परिणामों के मध्यमान व नियंत्रित समूह के पश्च शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्राप्तांकों के मध्यमान में सार्थक अंतर पाया गया है।

निष्कर्षः– उपरोक्त निष्कर्षात्मक सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। **"प्रयोगात्मक समूह के पूर्व व पश्च परीक्षण परिणामों के मध्यमानों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।"**

अध्ययन का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of study)

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने दुनिया को एक Globle village में बदल दिया है। वर्तमान युग को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। शिक्षा के क्षेत्र एवं संचार प्रौद्योगिकी ने क्रांति ला दी है। सूचना संप्रेषण तकनीकी मानव जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुकी है। सूचना संप्रेषण के माध्यम से किसी भी क्षेत्र के कर्मचारियों तथा अधिकारियों एवं विद्यार्थियों के ज्ञान में शीघ्र वृद्धि की जा सकती है इससे वे अपने कार्य को और भी ज्यादा निपूर्णतापूर्वक कर सकते हैं। संप्रेषण के उपयोग आज के वर्तमान समय में सभी स्तरों पर सूचनाओं को भेजने, प्राप्त करने, योजनाओं को बनाने आम जन को जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराने में किया जाता है। इन्हीं कारणों की वजह से सूचना संप्रेषण तकनीकी मानवीय बहुमुखी विकास के लिए

अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षण की प्रभावशीलता अच्छी शिक्षण पद्धतियों पर निर्भर करती है। यह अधिगम को सहज तथा सरल बनाती है। आई सी टी शिक्षा के क्षेत्र में भी तरीके से अधिकार जमा चुकी है। ऐसे में शिक्षा के क्षेत्र में आई सी टी के महत्व को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध से प्राप्त निष्कर्षों की विवेचना द्वारा स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में तथा कक्षागत अध्यापन में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की महती भूमिका है। माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में अध्यापन कार्य में समावेश सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी होना ही चाहिये।

छात्रों के लिए

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक महत्व के हैं।

☞ विद्यार्थियों रंटन पद्धति से मुक्त हो सकेंगे व उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

☞ छात्रों में भाषा शिक्षण की समझ विकसित होगी। विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता, बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी।

☞ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी।

☞ विद्यार्थियों के मन में विषय के प्रति जिज्ञासा एवं रुचि उत्पन्न होगी।

शिक्षकों के लिए

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों के लिए शैक्षिक महत्व के हैं। शिक्षक के वास्तविक अनुभवों को विस्तार मिलेगा।

छात्रों के लिए

☞ शिक्षक जब अपने शिक्षक अनुदेशक को प्रौद्योगिकी माध्यमों का प्रयोग करते हुए देखेगा तो वह स्वयं अपने शिक्षण में उनके प्रयोग की संभावनाओं को पहचान कर सकेगा।

☞ नेटवर्किंग तंत्र के बारे में जान लेने पर सिक्षक स्व क्षेत्रानुभव शिक्षण के लिए आवश्यक सूचनाओं को एकत्रित कर सकेगा।

☞ सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी माध्यमों के उपलब्ध तंत्रों एवं नवीनतम अनुप्रयोगों का अपने शिक्षणाभ्यास में उपयोग कर सकते हैं।

☞ शिक्षण के लिए आवश्यकता एवं समर्थ अनुसार Software Develop किया जा सकता है।

☞ शिक्षक नवीन शिक्षण विधियां/ नवाचार अपना सकेंगे।

✻ शिक्षक अपने शिक्षणीय क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव (Suggestion for Further Research Study)

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि उत्तम शिक्षण विधियों का प्रभाव विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो जाती है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कुछ प्रभाव दिये जा रहे हैं :-

1. कक्षागत अध्यापन कार्य में उन शिक्षण विधियॉ/ प्रविधियॉ का उपयोग अधिकतम किया जाये, जिनमें विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता हो।

2. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में, कक्षागत अध्यापन के दौरान एवं कक्षा से बाहर शिक्षक के समस्त प्रयास बालक में सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु होना चाहिये।

3. शिक्षक को बालक के स्वभावगत जिज्ञासा भाव को उदारता से स्वीकार करते हुए उसकी जिज्ञासा शांत करनी चाहिए।

4. बालक के विचार सृजनात्मक एवं कल्पनाशील होते हैं। प्रत्येक वस्तु के उपयोग के संबंध में उसका अपना दृष्टिकोण होता है। अतः शिक्षक को बालक की मनोदशा समझकर उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देकर उसे सही दिशा दिखानी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ (References)

* **अग्रवाल जे.सी. कुलश्रेष्ठ , एस पी (2017)**: शिक्षा एवं सम्प्रेषण की मूल प्रवृत्तियां, आगरा अग्रवाल प्रकाशन

* **अग्रवाल, जे. सी. कुलश्रेष्ठ एस. पी. (2017)**: शैक्षिक तकनीकी एवं कम्प्यूटर अनुदेशक आगरा, अग्रवाल प्रकाशन

अग्रवाल, वंदना (2005): पारंपरिक व्याख्यान विधि एवं कम्प्यूटर सहायिक शिक्षण की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबंध पं. रविशंकर वि.वि. रायपुर

* **भार्गव, जे. सी. (2003)**: शैक्षिक तकनीकी व प्रबंध आगरा– 2. विनोद पुस्तक मंदिर पृ. 84–85

* **भट्नागर ए. बी., भटनागर अनुराग (2015)** शिक्षा में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग एवं सम्प्रेषण दक्षता का विकास, मेरठ आर. लाल बुक डिपो।

* **चौहान, ज्योत्सना, अग्रवाल जे. पी. (2018)**: सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की महत्वपूर्ण समझ आगरा, अग्रवाल प्रकाशन

* **दिग्रस्कर श्रुति (2010)**: मल्टीमीडिया उपागम के प्रयोग का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन लघु शोध गु. घा. वि.वि.

* **नायर, कु. विनीता एस. (2004)**: बिलासपुर नगर के माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन गु.घा.वि.वि. लघु शोध प्रबंध

* **आर. एन. त्रिवेदी, शुक्ला डी.पी.** रिसर्च मैथोडोलॉजी कॉलेज बुक डिपो जयपुर

* **श्रीवास्तव, स्मिता (2016)**: शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग का अध्ययन डॉ. सी. व्ही. रमन वि.वि. कोटा बिलासपुर लघु शोध प्रबंध

* **वर्मा प्रीति, श्रीवास्तव डी. एन. (1994)**: मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

Paradigm shift from offline to online teaching

(Discovery of factors affecting remote learning; special reference to KV Bilaspur)

DHIRENDRA KUMAR JHA, PRINCIPAL
KENDRIYA VIDYALAYA BILASPUR (CG)-495004
jha.dk75@rediffmail.com, M. +917086017151

ABSTRACT

World is passing through with very difficult situation due to COVID-19 pandemic. Due to this online education is turning out to be a substitute to traditional modes across the globe. In India, more than 32 crore students have been affected by the lockdown and more than 13 crore students from class 9 to 12 were most severely impacted by this lockdown. Is India ready for this switch in terms of its infrastructure and digital readiness of children? In our view without preparation we can't switch over offline to online in overnight, without analyzing the factors which has its impact on remote learning they are 1.Flexible delivery / screen time 2.Quantum of work / assignment 3.Student's mental well-being and teaching effectiveness 4.Parents' satisfaction and 5. Cyber safety of online teaching learning and infrastructural support. Self-prepared online Survey conducted and 1559 parents submitted their responses. Part B of questionnaire consisting 9 items and average inter-item correlation is 0.39 which shows the items are well connected. Correlation between two variables; test score of 314 secondary student's parent's responses and achievement score of the students is -0.03282, which shows that there is negative correlation between these two variables. On the basis of experience we feel that proper planning, which should include teachers training on the various aspect of remote learning and cyber-techno support for teachers. Option like radio/ television should be explored for Flexible delivery of the content to reach every single child who belongs to underprivileged social and economic background. Mental wellbeing of students and teachers should be monitored by the school authority. Quantum of home work should be determined judiciously. Secure App for remote learning needs to be developed for the purpose to protect the students and the teachers against the cyber bullying and related potential threats. Kendriya Vidyalaya Bilaspur is being ensured all the aspect, prior to start online classes as a result most of the parents are found satisfied.

Introduction:

World is passing through with very difficult situation due to COVID-19 pandemic. Every country is fighting with this virus on priority basis leaving all its predetermined work. This has created war like situation throughout

the globe, where everyone is helpless and fighting with corona virus. This virus expanded over 216 countries and 157 crore Students have been affected due to school closures worldwide due to Covid-19 as per the data of UNESCO. With reference to above situation, where social physical distancing and staying at home with hygiene is only the way to fight with Covid-19. It has major impact not only on social construct but all the relationship and the factors related to production and consumption. Similarly this has badly affected the education across the globe. Children are at home.

The fear of Covid-19 outbreak has shut down school and universities in India with online classes emerging as an option but the question is whether we are in the position to cater the need of such a large population? In India, more than 32 crore students have been

affected by the lockdown and more than 13 crore students from class 9 to 12 were most severely impacted by this lockdown. National

sample survey data indicates remote teaching is difficult for the most population. **As** our community contains diverse populations which includes economically weaker section, below poverty line, under privileged group also. We are living in the country where 16.5

% people are able to operate computer and 20.1% people are able to use internet, only 10.7% people are having computer in their households and 23.8% people are having internet facility in their households as per NSS KI (75/25.2): Key Indicators of Household Social Consumption on Education in India.

In one hand Many of our school doesn't have basic infrastructural support like building , portable water facility, washrooms and government started programme likeMid-Day-Meal for the students for health and nutrition and in another hand digital learning/ remote learning/ online learning etc. are in a center of discussion. The NCAER Skills Report 2018 discussed the immense potential of

online learning, albeit as complementary to more traditional methods. In the current situation, online education is turning out to be a substitute to traditional modes. Is India ready for this switch in terms of its infrastructure and digital readiness of children?

In our view without preparation we can't switch over offline to online in overnight. 86.91 lakh teachers who have expertise of offline teaching learning experience how they will be able to transact the content through online mode without training or orientation. Online

readiness of the students are also very important whether they will be able to handle the stress on eye sight and able to handle the world of abstract where thousands of the pages are being open on tip of the figure and it's very difficult for the children to find out concrete material without guidance. Students and teachers is important along with the motivation level is

important.

After lockdown suddenly all the offline/ face-to-face educational institutions rushed to online mode. Without analyzing the factors which has its impact on teaching they are **Community, Content/ learning strategies, Communication/ online readiness, Student motivation and Teacher training/ orientation**

Review of literature:

1. Duch et al.(2013)reported that 35% of toddlers and 28% of infants used cell phones for a minimum of 30 minutes each day. Through research revealed infants and toddlers who spent more than 2 hours per day watching television/screen had delayed scores in the area of language development when compared to children who were exposed to less than two hours of television/screen per day.

2. Barr & Lerner (2014) testified that learning from screen media can take place if the content is interactive and provides contingent responses to a child's action. Another key factor is to ensure screen and apply it to their child's real life experiences.

3. Cooper,(1989) said As young children begin school, the focus should be on cultivating a love of learning, and assigning too much homework can undermine that goal. And young students often don't have the study skills to benefit fully from homework, so it may be a poor use of time.

4.Fernández-Alonso, Suárez-Álvarez, & Muñiz,(2015) underlined- A 2015 study found that when middle school students were assigned more than 90 to 100 minutes of daily homework, their math and science test scores began to decline.

5. Walker et al., (2004) written- Homework can be a powerful tool to help parents become more involved in their child's learning.

Statement of Problem: Apprehensions about Teaching-Learning transactions and determining the dimensions: when this situation forced us to go for remote learning starting from primary then it is a great responsibility which needs close monitoring and feedback day-to-day basis. Teachers are trained to conduct real classroom teaching-learning transactions but they are not trained to hold virtual classroom transactions. Some of the teachers are in the verge of superannuation and they learnt the computer or other device to anyhow perform the assigned task. There are

few teachers who are taking classes with the help of students and some are depending on their family members to prepare the digital plan/ lesson. Many of the teachers are techno savvy but it cannot confirm the effectiveness of teaching in new platform. We have started online teaching informal way from 04.04.2020 but started formally from 09.04.2020. during the pre-experimental phase from 04.04.2020 to 08.04.2020 we gathered experiences of the teachers and the students and on the basis of the same tried to

overcome the problems.

1. It was experienced during pre-experimental period that some of the teachers are sending the YouTube videos without scrutiny; they even don't know the length of the video and content validity of the same as well. This may increase the screen time of the students which may affects creativity/imagination and language development adversely.

2. Quantum of work is very essential key element for cognitive development of the children but many parents conveyed during pre- experimental period that the work assigned by the teachers is more as compare to the regular assignment given during offline mode. Some of them communicated that they are helping their wards to complete the task but unable to complete due to heavy quantity of the same. Therefore quantum of work/ assignment has been identified one of the key factor.

3.When students are staying continuously at home their emotional balances and mental well-beings is first and foremost important factors and should be taken into consideration for all purposes at most priority.

4. Many online platforms were available but which is safe was a big question. How will be able to keep our children and their credentials along with their personal information safe was a great concern of ours as well of the parents.

5. Above points found contributory for the parents satisfaction.

Keeping view the above points following dimensions of online teaching learning has been devised for the parent's satisfaction.

S. N.	Dimensions	Item No.
1.	Flexible delivery / screen time	2 , 6 , 8
2.	Quantum of work/ assignment	5 , 6
3.	Students mental well-being and teaching effectiveness	3 , 4
4.	Parents' satisfaction	1, 3, 7
5.	Cyber safety	9

Methodology:

Tools/techniques: self-prepared online Survey

Sample: 1559 (parents of kendriya Vidyalaya Bilaspur, whose ward participated in remote learning.)

Procedures: Prior to start online classes principal interacted with all the teachers through video conference and asked to provide following information:

1.Whether all the parents are having mobile phone/ laptop/tab with internet?

2. Status of connectivity where the students resides?

3. Number of school going sibling in the family?

It has been noticed after receiving the data from the class teachers that many of the families are having limited gadgets and users are more. Even in this critical situation many of the parents were performing duties from home, therefore mobile/laptop/tab is not free for the words during day time. Some of the students visited their villages, where internet connectivity is very poor. Keeping in view we have decided the following road map:

1. It was accepted that none of us are having expertise on online teaching. Screen time is very crucial for growing students; therefore we will keep the duration of each period not more than 40 minutes and there would be sufficient gap between two periods.

2. Maximum four periods will be conducted 3 major subjects will be organized every day and fourth subject will have on rotation basis. Other co-scholastic subject will also plan weekly once.

3. It was discussed that there may be a chance that some of the teachers who are not very comfortable with the usage of online platform/gadgets. It is the possibility that they may send the material to the students without scrutiny unknowingly about the quanta of the work assigned as homework, therefore the schedule of home assignment was decided on rotation basis and circulated to parents and uploaded in website.

4. If parents are doing work from home or due to non- availability of device, whatever the reason may be. Vidyalaya administration decided to upload day to day class material (i.e. video/audio/ PPT or any other) in the vidyalaya to make resource available as per the student's convenience.

5. It was the very first time in our life that wheel of life has been stopped and we all are confined our self within the boundaries of home. In such a situation mental well-being of the children is very crucial and essential. Vidyalaya tried to address this issue also

and dedicated e-mail id has been created for the purpose.

6. Cyber safety for our students and teachers was one of the prime concerns of the vidyalaya administration.

Data collection and Interpretation:

KV Bilaspur started online teaching from 04.04.2020 to 03.05.2020, where pre-experimental phase was from 04.04.2020 to 08.04.2020 and on the basis of the experience taking into account all the issues/ challenges kv Bilaspur devised its plan and started remote learning for the students formally from 09.04.2020. kv Bilaspur reached to 1667 students from class 2 onwards except class XI. After one month of remote learning kv Bilaspur conducted online survey to invite opinion of the parents to improve in the area of concern. Total 1559 parents participated in the survey and submitted their opinion.

Self-prepared questionnaire for feedback has been prepared in google sheet. Questionnaire has three part part A was related to personal information. Part B was having 9 multiple choice questions out of which 3 was three point likert scale and 6 were having 2 point likert scale responses. Part C included 2 descriptive type of opinion by the parents (1559). Link of the questionnaire sent to parents by the class teachers through whatsApp massage. Parents submitted their responses to the questions from their home. Responses from the parents (1427) to part B reflected below:

S.N.	Items	% Responses		
1.	How do you see the online teaching initiative organized by Kendriya Vidyalaya Bilaspur from 09.04.2020?	**Satisfactory**	**Good**	**Very Good**
		18.2	53.2	28.6
2.	Flexible time table designed for online learning was kept in mind the need of the children. In your opinion it was	17.9	58.4	23.8
3	What was the amount of	**Huge**	**less**	**Balanced**
	homework given daily?	2.8	6.1	91.2
4	Did the teachers solve the children's problems by taking classes every day at the given time?	**No**		**Yes**
		3.3		96.7
5	Did the class teacher give the school a system of counseling and mail ID related to the child to avoid emotional impulses or any kind of depression arising from the lock down?	22.5		77.5
6.	If for some reason the child could not attend the class or could not understand anything, did the study material provided on the school web site help every day?	7.7		92.3
7.	Online teaching for children was not less than a burden and there was no need.	83.2		16.8
8.	Teachers have developed a web blog by creating e-content for children. Do you know?	38.7		61.3
9.	Do you feel the need for a secure video app for online classes?	0.5		99.5

Responses about the parents opinion about initiation of online classes has been welcomed by all and 81.8% of parents graded this good and very good. 82.2% of parents responded in rating scale of good and very good about the flexibility of time table and span of screen time with proper interval. 96.7% parents have shown their satisfaction towards the classes organized regularly and teachers have clarified the doubts of children.

Vidyalaya created exclusive e-mail Id for the counseling and for the mental wellbeing of the children and communicated to children through class teachers and through its website but 77.5% parents was aware of the facility offered by the vidyalaya. 91.2% parents rated homework as balanced.

Vidyalaya uploaded day wise taught materials of different subject for the students who were unable to join real time virtual/online classroom for one or another reason, so that student may download the materials/ lessons as and when possible. 92.3% parents admitted in their responses that this was beneficial for the children.

83.2% parents accepted the need of remote learning classes, in their opinion this was essential to connect with the students during the adverse situation of COVID-19 outbreak. 61.3% parents were aware about the educational blog developed and hosted by the vidyalaya.

99.5% parents feel that one secure app is very much needed for cyber safety against the bullying and hacking. They showed their apprehension of misuse of video of their children and personal data. Even insecure app may create problems for teachers too.

Scale range for questions and 2 is 1= satisfactory, 2= Good and 3= Very Good; Scale range for

question 5 is Huge, 2= less and 3= balanced, Scale range for questions from 3 to 9 except 5 is 1= No and 2= Yes

	A	B	C	(A+B+C) /1427	
Q.N.	Satisfactory (1)	Good (2)	Very Good (3)		
1.	253*1 = 253	739*2 = 1478	402*3 =1206	=2.05	We can conclude that the respondents Good to the item because it falls within the range of Good
2.	247*1 =247	808*2 =1616	334*3 =1002	=2.00	Responses falls within the range of Good
5.	Huge	Less	Balanced		
	85*85 =85	37*2 =74	1269*3 =3807	=2.77	Responses falls closure to the range of Balanced
3.	No (1)	Yes (2)			
	47*1 =47	1341*2 =2682		=1.9	Responses falls closure to the range of Yes
4.	299*1 =299	1030*2 =2060		=1.65	Responses falls closure to the range of Yes
6.	106*1 =106	1273*2 =2546		=1.85	Responses falls closure to the range of Yes
7.	227*1 =227	1148*2 =2296		=1.76	Responses falls closure to the range of Yes
8.	521*1 =521	833*2 =1666		=1.53	Responses falls closure to the range of Yes
9.	4*1 =4	1387*2 =2774		=1.94	Responses falls closure to the range of Yes

Correlation between items and coefficient of correlation:

Correlation between the items	coefficient of correlation
1. correlation between Item 1 and Item 2	0.646377067
2. correlation between Item 1 and Item 3	0.390766186
3. correlation between Item 1 and Item 4	0.231750426
4. correlation between Item 1 and Item 5	0.305475897
5. correlation between Item 1 and Item 6	0.356254904
6. correlation between Item 1 and Item 7	0.322924532
7. correlation between Item 1 and Item 8	0.262191126
8. correlation between Item 1 and Item 9	0.360227417
9. correlation between Item 2 and Item 3	0.433490146
10.correlation between Item 2 and Item 4	0.236262873
11.correlation between Item 2 and Item 5	0.311030977
12.correlation between Item 2 and Item 6	0.397677182
13.correlation between Item 2 and Item 7	0.326997041
14.correlation between Item 2 and Item 8	0.276328785
15.correlation between Item 2 and Item 9	0.402081911
16.correlation between Item 3 and Item 4	0.370133011
17.correlation between Item 3 and Item 5	0.536819259
18.correlation between Item 3 and Item 6	0.629083796
19.correlation between Item 3 and Item 7	0.474124532
20.correlation between Item 3 and Item 8	0.353170691
21.correlation between Item 3 and Item 9	0.714189564
22.correlation between Item 4 and Item 5	0.246036158
23.correlation between Item 4 and Item 6	0.373352164
24.correlation between Item 4 and Item 7	0.218205572
25.correlation between Item 4 and Item 8	0.396453251
26.correlation between Item 4 and Item 9	0.363465425
27.correlation between Item 5 and Item 6	0.485306489
28.correlation between Item 5 and Item 7	0.42190599
29.correlation between Item 5 and Item 8	0.291271398
30.correlation between Item 5 and Item 9	0.586299037
31.correlation between Item 6 and Item 7	0.498092752
32.correlation between Item 6 and Item 8	0.376804813
33.correlation between Item 6 and Item 9	0.627614396
34.correlation between Item 7 and Item 8	0.289388324
35.correlation between Item 7 and Item 9	0.508306938
36.correlation between Item 8 and Item 9	0.37205051
Average/ Mean Inter – item correlation	0.399775293

Average inter-item correlation is 0.39 which shows the items are well connected and not repetitive. As ideal range of Average inter-item correlation is 0.15 to 0.50

Negative correlation between test score and achievement test:

It is general conception that parents of the children of secondary with low achievement score are least concern about the vidyalaya activities and doesn't involve actively in the process related to their child. Keeping in view this point correlation between two variables; one variable test score of 314 secondary student's parent's responses and achievement score of the students i.e. result of previous class. Correlation between test score and achievement test is -0.03282 which shows that there is no correlation between these two variables and this rejects the conception that the parents of low achiever children are passive.

Conclusion:

In the present situation and day to day growing outbreak of pandemic Coronavirus (COVID-19) situation, the only way to reach children through remote learning mode. Reality of our time is our teachers who have expertise in taking real classes, they have been asked to move overnight to virtual classes, which is very difficult as many efficient teachers may not have required skill to conduct classroom transactions in virtual mode. They must be given training to develop these skills as a demand of current situation. They should be provided cyber-techno support to conduct such classes.

It has been revealed that many of the parents are not having smart phones to take benefits of these online classes. As far as possible other source like radio/ television should also be the way to reach children

Screen time is very important for the children, so classes are planned accordingly to save the health of our children.

Flexible delivery of the content is also very crucial, so development of blogs and access of study material to the students as and required manner needs to be ensured.

Quantum of homework is also very crucial factor, which needs to be devised day wise in consultation with the subject teachers of particular class.

Protocol needs to be devised to take care of mental wellbeing of students and teachers by the school authority. There must be online counseling sessions for the students/ teachers and parents too.

One secure App needs to be developed for the purpose to protect the students and the teachers against the cyber bullying and related potential threats. It must also nullify the chances of misuse of personal data of the user.

Self-prepared e-content has been given preference to keep children connected with the teacher instead of readymade resources available in the web because there is a bond and connectivity between students and the teachers.

Through online survey it has been verified that shifting from offline mode to online mode require much more planning of resources and various aspect of technological aspect and psychological factors.

Kendriya Vidyalaya Bilaspur has taken care all the aspect prior to start online classes as a result most of the parents are satisfied.

Finally; YEAR 2020 is year of survival therefore instead of online teaching/ learning teacher should try to connect with the students communicate with the students and parents; do not rush behind the completion of syllabus but focus on skill and competency.

Bibliography

1. Jessica Dauw ,2016, Screen time and the effects on development for children ages birth to 5 years. P-13

2. Mollie Galloway, jerusha Conner & Denise Pope, 2013, Nonacademic Effects of Homework in privileged, high-performing High Schools. P-490-510

3. Youki Terada, 2018, Decades of research shows that homework has some benefits, especially for students in middle and high school there are risks to assigning too much.

4. Trochim, William, Web Center for Social research on http:// WWW.socialresearchmethods.net/kb/ reltypes.php on April 24, 2018

5. S. P. Gupta, Statistical Methods 43rd Edition, 2014